



भारत का राजपत्र The Gazette of India

प्राधिकार से प्रकाशित
PUBLISHED BY AUTHORITY

सं. 28]
No. 28]

नई दिल्ली, शनिवार, जुलाई 12, 1997/आषाढ़ 21, 1919
NEW DELHI, SATURDAY, JULY 12, 1997/ASADHA 21, 1919

इस भाग में भिन्न पृष्ठ संख्या दी जाती है जिससे कि यह अलग संकलन के रूप में
रखा जा सके

Separate Paging is given to this Part in order that it may be filed as a
separate compilation

भाग II—खण्ड 3—उप-खण्ड (I) PART II—Section 3—Sub-section (I)

भारत सरकार के मंत्रालयों (रक्षा मंत्रालय को छोड़कर) और केन्द्रीय अधिकारियों (संघ राज्य
क्षेत्र प्रशासनों को छोड़कर) द्वारा विधि के अन्तर्गत बनाए गए और जारी किये गये साधारण लघुविवेक
नियम (जिनमें साधारण प्रकार के आदेश, उपनियम और सम्मिलित हैं)

General Statutory Rules (including Orders, Bye-laws etc. of a general Character) issued by the Ministries of the
Government of India (other than the Ministry of Defence) and by the Central Authorities (other than the
Administration of Union Territories)

विधि और न्याय मंत्रालय

(विधायी विभाग)

(विधि साहित्य प्रकाशन)

शुद्धि पत्र

नई दिल्ली, 18 जून, 1997

MINISTRY OF LAW & JUSTICE

(Legislative Department)

(Vidhi Sahitya Prakashan)

CORRIGENDUM

New Delhi, the 18th June, 1997

सा.का.नि. 281.—भारत के राजपत्र, भाग 2, खंड
3, उपखंड (i) तारीख, 3 अप्रैल, 1993, पृष्ठ 554
में प्रकाशित विधि, न्याय और कंपनी कार्य मंत्रा-
लय (विधायी विभाग) की अधिसूचना 1993 का
सा.का.नि. 171, तारीख 2 नवम्बर, 1992 के अंग्रेजी
पाठ की पंक्ति 9 में "1992" के स्थान पर "1993"
पढ़ें।

[सं. ए-12018/1/91-बीएसपी (प्रशा.)]
बाबू लाल, उप सचिव

G.S.R. 281.—In the English Version of the
Notification of the Ministry of Law, Justice and
Company Affairs, (Legislative Department), No.
G.S.R. 171 of 1993 dated 2nd November, 1992
Published in Part II, Section 3, Sub Section (1)
of the Gazette of India dated 3rd April, 1993, at
page 554, in line 9, in sub-rule (1) of rule 1, for
"1992" read "1993".

[No. A-12018/1/91-VSP(Admn.)]
BABU LAL, Dy. Secy

कार्मिक, और लोक शिकायत तथा पेंशन मंत्रालय
(कार्मिक और प्रशिक्षण विभाग)
नई दिल्ली, 25 जून, 1997

सा. का. नि. 282.—केन्द्रीय सरकार, उप-नियम (1), तथा भारतीय पुलिस सेवा (संवर्ग) नियमावली, 1954 के नियम 4 के उप-नियम (2) के साथ पठित अखिल भारतीय सेवा अधिनियम, 1951 (1951 का 61) की धारा 3 की उपधारा (1) द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए गुजरात सरकार के परामर्श से भारतीय पुलिस सेवा (संवर्ग संख्या का निर्धारण) विनियमावली, 1955 में और आगे संशोधन करने के लिए निम्नलिखित विनियम बनाती है, अर्थात्:—

1. (1) इन विनियमों का नाम भारतीय पुलिस सेवा (संवर्ग संख्या का निर्धारण) तीसरा विनियमावली, 1997 है।
- (2) ये सरकारी राजपत्र में इनके प्रकाशन की तारीख को प्रवृत्त होंगे।
2. भारतीय पुलिस सेवा (संवर्ग संख्या का निर्धारण) विनियमावली, 1955 की अनुसूची में "गुजरात" शीर्षक तथा इसके नीचे आने वाली प्रविष्टियों के स्थान पर निम्नलिखित को प्रतिस्थापित किया जाएगा, अर्थात्:

"गुजरात"

1. राज्य सरकार के अधीन वरिष्ठ पद	81
महा निरीक्षक तथा पुलिस महा निरीक्षक	1
पुलिस महानिदेशक तथा निदेशक, अष्टाचार	
निरोधक ब्यूरो, अहमदाबाद	1
पुलिस आयुक्त, अहमदाबाद शहर	1
विशेष पुलिस महा निरीक्षक, सी.आई.डी., अपराध तथा रेलवे	1
विशेष पुलिस महा निरीक्षक, सी.आई.डी., आसूचना, अहमदाबाद	1
महानिरीक्षक, कानून तथा व्यवस्था, अहमदाबाद	1
पुलिस आयुक्त बड़ोदरा शहर	1
विशेष महा निरीक्षक पुलिस कम्प्यूटर तथा राज्य	
अपराध अभिलेख ब्यूरो गांधीनगर	1
विशेष पुलिस महानिरीक्षक, प्रशासन	1
उप महा निरीक्षक पुलिस, सशस्त्र एकक तथा प्रशिक्षण	1
पुलिस आयुक्त, राजकोट एवं सूरत	2
अपर आयुक्त, अहमदाबाद शहर	1
पुलिस उप महानिरीक्षक, सूरत रेंज, सूरत	1
प्रधान, पुलिस प्रशिक्षण विद्यालय, जूनागढ़	1
उप महानिरीक्षक पुलिस (रेंज)	3
उप महा निरीक्षक पुलिस सौराष्ट्र, साउथ रेंज, जूनागढ़	1
उप महा निरीक्षक पुलिस, सी.आई.डी., आसूचना ब्यूरो	1

उप महा निरीक्षक पुलिस, पश्चिमी रेलवे	1
उप महा निरीक्षक पुलिस (सी.आई.डी.) अपराध	1
उप महा निरीक्षक पुलिस, अहमदाबाद रेंज, अहमदाबाद	1
उप महा निरीक्षक पुलिस, औद्योगिक सुरक्षा, पुलिस कल्याण तथा हरिजन मामले, अहमदाबाद	1
उप निदेशक, अष्टाचार विरोधी ब्यूरो	1
महा सहायक निरीक्षक पुलिस	3
उप-आयुक्त, पुलिस, अहमदाबाद शहर	7
उप आयुक्त, पुलिस, राजकोट, बड़ोदरा तथा सूरत	3
पुलिस अधीक्षक, सी.आई.डी., आसूचना ब्यूरो	2
पुलिस अधीक्षक, सी.आई.डी., अपराध तथा रेलवे	2
पुलिस अधीक्षक, रेलवे	1
जिला पुलिस अधीक्षक	18
जिला पुलिस अधीक्षक, खेड़ा साउथ, आनन्द	1
जिला पुलिस अधीक्षक, पोरबन्दर	1
कमांडेंट, एस.आर.पी.एफ.	7
प्रधान एस.आर.पी.एफ. प्रशिक्षण केन्द्र, चौकी, जूनागढ़	1
पुलिस अधीक्षक मादक पदार्थ जी.एस., अहमदाबाद	1
प्रधान, पुलिस प्रशिक्षण विद्यालय, बड़ोदरा	1
पुलिस उप आयुक्त, बड़ोदरा शहर	1
जिला पुलिस अधीक्षक, गांधी नगर	1
जिला पुलिस अधीक्षक, पाटन	1
उप प्रधान, पुलिस प्रशिक्षण विद्यालय, जूनागढ़	1
कमांडेंट ग्रुप	4
(एस.आर.पी.एफ.) ग्रुप, X	81
उकाई; एस.आर.पी.एफ. ग्रुप XI	
बाव; एस.आर.पी.एफ. ग्रुप XII	
गांधीनगर; एस.आर.पी.एफ. ग्रुप XIII	
राजकोट)	
2. उपर्युक्त 1 का 40 प्रतिशत की दर से केन्द्रीय प्रतिनियुक्ति आरक्षण	32
3. उपर्युक्त 1 तथा 2 के 33- $\frac{1}{3}$ प्रतिशत की दर से भारतीय पुलिस सेवा (भर्ती) नियमावली, 1954 के नियम 9 के अनुसार पदोन्नति द्वारा भरे जाने वाले पद	37
4. सीधी भर्ती द्वारा भरे जाने वाले पद (उपर्युक्त 1 + 2 + 3)	76
5. उपर्युक्त 1 का 25 प्रतिशत की दर से प्रतिनियुक्ति आरक्षण	20

6. उपर्युक्त 1 का 20 प्रतिशत की दर से छुट्टी
आरक्षण, कनिष्ठ पद तथा प्रशिक्षण आरक्षण 16

सीधी भर्ती के पद : 112

पदोन्नति पद : 37

कुल प्राधिकृत संख्या : 149

[सं. 11052/2/97-अ.भा.सं (ii)-क]

मधुमिता डी० मित्रा, डेस्क अधिकारी

टिप्पणी : (1) इस अधिसूचना के जारी होने से पहले,
गुजरात भारतीय पुलिस सेवा संवर्ग की प्राधि-
कृत पद संख्या 133 थी।

(2) मुख्य विनियम दिनांक 22 अक्टूबर, 1965
की अधिसूचना संख्या एस.आर.ओ. 3351
द्वारा प्रकाशित किए गए थे। गुजरात ने
संबंधित अनुसूची में प्रविष्टियों के बाद में
दिनांक 29-4-60 के सा.का.नि. सं. 505,
6-10-62 के 1313, 28-11-64 के 1639,
25-6-75 के 348ई, 21-11-81 के 609ई,
16-7-82 के 498ई, 28-8-82 के 706,
14-3-87 के 446, 16-12-89 के 915
और 31-3-95 के 320ई द्वारा संशोधन
किया गया था।

MINISTRY OF PERSONNEL, P. G. AND PENSIONS

(Department of Personnel and Training)

New Delhi, the 25th June, 1997

G.S.R. 252.—In exercise of the powers conferred by sub-section (1) of Section 3 of the All India Services Act, 1951 (61 of 1951), read with sub-rule (1), and sub-rule (2) of Rule 4 of the Indian Police Service (Cadre) Rules, 1954, the Central Government in consultation with the Government of Gujarat hereby makes the following regulations further to amend the Indian Police Service (Fixation of Cadre Strength) Regulations, 1955, namely :—

1. (i) These regulations may be called the Indian Police Service (Fixation of Cadre Strength) Third Amendment Regulations, 1997.

(ii) They shall come into force on the date of their publication in the Official Gazette.

2. In the Schedule to the Indian Police Service (Fixation of Cadre Strength) Regulations, 1955, for the heading "Gujarat" and the entries occurring thereunder, the following shall be substituted, namely :—

"GUJARAT"

1. Senior Posts under the State Government	81
Director General and Inspector General of Police.	1
Director General of Police and Director, Anti Corruption Bureau, Ahmedabad.	1
Commissioner of Police, Ahmedabad City.	1
Special Inspector General of Police, C.I.D., Crime and Railways.	1
Special Inspector General of Police, CID, Intelligence Ahmedabad.	1
Inspector General of Police (Law and Order) Ahmedabad.	1
Commissioner of Police, Vadodara City.	1
Special Inspector General of Police, Computer-cum-State Crime Record Bureau, Gandhi Nagar.	1
Special Inspector General of Police, Administration.	1
Deputy Inspector General of Police, Armed Units and Training.	1

Commissioner of Police, Rajkot & Surat.	2
Additional Commissioner, Ahmedabad City	1
Principal, Police Training College, Junagadh.	1
Deputy Inspector General of Police (Ranges).	3
Deputy Inspector General of Police, Saurashtra, South Range, Junagadh.	1
Deputy Inspector General of Police, Surat range, Surat.	1
Deputy Inspector General of Police, CID, IB.	1
Deputy Inspector General of Police, Western Railways	1
Deputy Inspector General of Police (CID), Crime	1
Deputy Inspector General of Police, Ahmedabad Range, Ahmedabad.	1
Deputy Inspector General of Police, Industrial Security, Police Welfare and Harijan Affairs, Ahmedabad.	1
Deputy Director, Anti Corruption Bureau	1
Assistant Inspector General of Police	3
Deputy Commissioner of Police, Ahmedabad City	7
Deputy Commissioner of Police, Rajkot, Vadodara and Surat	3
Superintendents of Police, CID, IB	2
Superintendent of Police, CID, Crime and Railways	2
Superintendent of Police, Railways	1
District Superintendent of Police	18
District Superintendent of Police, Kheda South Anand	1
District Superintendent of Police, Porbander	1
Commandants, S.R.P.F.	7
Principal, S.R.P.F. Training Centre, Chowkey, Junagadh	1
Superintendent of Police, Narcotics, GS Ahmedabad	1
Principal, Police Training School, Vadodara	1
Deputy Commissioner of Police, Vadodara City	1
Distt. Superintendent of Police, Gandhinagar	1
District Superintendent of Police, Patan	1
Vice-Principal, Police Training College, Junagadh	1
Commandants Group (SRPF, Gr. X Ukai; SRPF, Gr. XI Vay; SRPF, Gr. XII Gandhinagar; SRPF, Gr. XIII, Rajkot)	4

81

2. Central Deputation Reserve @40 per cent of 1 above	32
3. Posts to be filled by promotion in accordance with Rule 9 of the IPS (Recruitment) Rules, 1954 @33-1/3 per cent of 1 and 2 above	37
4. Posts to be filled by Direct Recruitment (1+2—3) above.	76
5. Deputation Reserve @25% of 1 above	20
6. Leave Reserve, Junior Posts and Training Reserve 20 per cent of 1 above	16

Direct Recruitment Posts : 112

Promotion Posts : 37

Total Authorised Strength 149

[No. 11052/2/97-AIS(II)-A]

MADHUMITA D. MITRA, Desk Officer

NOTE : (1) Prior to the issue of this Notification, the total authorised strength of Gujarat I.P.S. Cadre was 133.

(2) The Principal Regulations were published vide Notification No. SRO 3351 dated 22nd October, 1955. Entries in the Schedule in respect of Gujarat were subsequently amended vide GSR Nos. 505, 1313, 1639, 348E, 609-E, 498-E, 706, 162, 446, 915 and 320(E) dated 29-4-60, 6-10-62, 28-11-64, 25-6-75, 21-11-81, 16-7-82, 28-8-82, 14-3-87, 4-6-88, 16-12-89 and 31-3-95 respectively.

नई दिल्ली, 25 जून, 1997

शा.वा.वि. 283.—भारतीय पुलिस सेवा (वेतन) नियमावली, 1954 के नियम 11 के साथ पठित अखिल भारतीय सेवा अधिनियम, 1951 (1951 का 61) की धारा 3 की उपधारा (1) द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए, केन्द्रीय सरकार गुजरात राज्य के परामर्श से भारतीय पुलिस सेवा (वेतन) नियमावली, 1954 में और आगे संशोधन करने के लिए एनद्धारा निम्नलिखित नियम बनाती है, अर्थात् :—

1. (1) इन नियमों का नाम भारतीय पुलिस सेवा (वेतन) तीसरा संशोधन नियमावली, 1997 है।

(2) ये सरकारी राजपत्र में इनके प्रकाशन की तारीख को प्रवृत्त होंगे।

2. भारतीय पुलिस सेवा (वेतन) नियमावली, 1954 में :—

(क) अनुसूची-III में, राज्य सरकार के अधीन भारतीय पुलिस सेवा में समय वेतनमान से ऊपर वेतन वाले पदों की शीर्षक "क" के अन्तर्गत सारणी में प्रथम कालम तथा दूसरे तथा तीसरे कालम की तदनुसूची प्रविष्टियों में आने वाली "गुजरात" प्रविष्टि के लिए, निम्नलिखित प्रविष्टियां प्रतिस्थापित की जाएंगी, अर्थात् :—

राज्य	पद के व्योरे	वेतन/वेतनमान रुपए
गुजरात	महा निदेशक तथा पुलिस महा निरीक्षक	7600—8000
	पुलिस महा निदेशक तथा निदेशक छप्ताचार निरोधक ब्यूरो, अहमदाबाद	7600—8000
	पुलिस आयुक्त, अहमदाबाद नगर विशेष पुलिस महानिरीक्षक, सी.आई.डी., अपराध तथा रेलवे	5900—200—6700 —यथोपरि—
	पुलिस महानिरीक्षक, कानून तथा व्यवस्था, अहमदाबाद	—यथोपरि—
	विशेष पुलिस महानिरीक्षक, सी.आई.डी., आसूचना, अहमदाबाद	—यथोपरि—
	विशेष पुलिस महानिरीक्षक, प्रशासन पुलिस आयुक्त, वडोदरा नगर	—यथोपरि— 5900—200—6700
	पुलिस महा निरीक्षक, कम्प्यूटर एवं राज्य अपराध रिकार्ड ब्यूरो गांधीनगर	—यथोपरि—

पुलिस उप महानिरीक्षक, सणख	5100—150—
यूनिट तथा प्रशिक्षण	5400
(बाद का 18वां वर्ष) —	150—6150

पुलिस आयुक्त, राजकोट तथा सूरत	—यथोपरि—
अपर आयुक्त, अहमदाबाद नगर प्रिंसिपल, पुलिस प्रशिक्षण कालिज, जूनागढ़	—यथोपरि—

पुलिस उप महानिरीक्षक (रेंज)	—यथोपरि—
पुलिस उप महानिरीक्षक, सौराष्ट्र, दक्षिण रेंज, जूनागढ़	—यथोपरि—

पुलिस उप महानिरीक्षक, सी.आई.डी., आसूचना ब्यूरो	—यथोपरि—
--	----------

पुलिस उप महानिरीक्षक, पश्चिमी रेलवे	—यथोपरि—
-------------------------------------	----------

पुलिस उप महानिरीक्षक, सी.आई.डी. अपराध	—यथोपरि—
---------------------------------------	----------

पुलिस उप महानिरीक्षक, सूरत रेंज, सूरत	—यथोपरि—
---------------------------------------	----------

पुलिस उप महानिरीक्षक, अहमदाबाद रेंज, अहमदाबाद	—यथोपरि—
---	----------

उप पुलिस महानिरीक्षक, औद्योगिक सुरक्षा, पुलिस कल्याण तथा हरिजन कार्य, अहमदाबाद	—यथोपरि—
--	----------

(ख) अनुसूची-III में, समय वेतनमान में वेतन के अतिरिक्त विशेष वेतन वाले पदों सहित राज्य सरकारों के अधीन भारतीय पुलिस सेवा के वरिष्ठ समय वेतनमान में वेतन वाले पदों की शीर्षक "ख" के अन्तर्गत सारणी में, प्रथम कालम तथा प्रथम कालम की तदनुसूची प्रविष्टि तथा दूसरे कालम की तदनुसूची प्रविष्टि में आने वाली "गुजरात" प्रविष्टि के लिए, निम्नलिखित प्रविष्टि प्रतिस्थापित की जाएगी, अर्थात् :—

राज्य	पद के व्योरे
	उप निदेशक, छप्ताचार निरोधी ब्यूरो
	पुलिस सहायक महा निरीक्षक
	पुलिस उपायुक्त, अहमदाबाद नगर
	पुलिस उपायुक्त राजकोट, वडोदरा और सूरत
	पुलिस अधीक्षक, सी.आई.डी., आसूचना ब्यूरो
	पुलिस अधीक्षक, सी.आई.डी., अपराध तथा रेलवे
	पुलिस अधीक्षक, रेलवे

पुलिस जिला अधीक्षक

पुलिस जिला अधीक्षक, खेदा दक्षिण,

आनन्द

पुलिस जिला अधीक्षक, पोरबन्दर

कमान्डेंट, एस. आर. पी. एफ.

प्रिंसिपल एस. आर. पी. एफ.

• प्रशिक्षण केन्द्र, चौकी, जुनागढ़

पुलिस अधीक्षक, मादक पदार्थ,

जी. एस. . अहमदाबाद

प्रिंसिपल, पुलिस प्रशिक्षण स्कूल,

बदोदड़ा

पुलिस उपायुक्त, बदोदड़ा नगर

पुलिस जिला अधीक्षक, गांधीनगर

पुलिस जिला अधीक्षक, पाटन

उप-प्रधानाचार्य, पुलिस प्रशिक्षण

कालेज, जुनागढ़

कमान्डेंट ग्रुप (एस. आर. पी. एफ.)

ग्रुप X उकाई;

एस. आर. पी. एफ. ग्रुप XI

बाव;

एस. आर. पी. एफ. ग्रुप XII

गांधीनगर;

एस. आर. पी. एफ. ग्रुप XIII राजकोट;

[सं. 11052/2/97-अ. भा. से. (ii)-ख]

मधुनिता डी. मित्रा, डेस्क अधिकारी

टिप्पणी : ये मुख्य नियम दिनांक 14 सितम्बर, 1954 की राजपत्र संख्या 158 द्वारा प्रकाशित किए गए। गुजरात राज्य के बारे में अनुसूची-III में प्रविष्टियां बाद में क्रमशः दिनांक 29-4-60, 28-11-64, 25-6-75, 21-11-81, 16-7-82, 28-8-82, 19-8-87 तथा 16-12-89 की सा. का. नि. संख्याओं 506, 1640, 349 ई, 610 ई, 499 ई, 707, 163 तथा 913 द्वारा संशोधित की गई।

New Delhi, the 25th June, 1997

G.S.R. 28.—In exercise of the powers conferred by sub-section (1) of Section 3 of All India Services Act, 1951 (61 of 1951), read with Rule 11 of the Indian Police Service (Pay) Rules, 1954, the Central Government, in consultation with the Government of Gujarat, hereby makes the following rules further to amend the Indian Police Service (Pay) Rules, 1954, namely:—

1. (1) These rules may be called the Indian Police Service (Pay) Third Amendment Rules, 1997.

(2) They shall come into force on the date of their publication in the Official Gazette.

2. In the Indian Police Service (Pay) Rules, 1954:

(a) In Schedule III, in the Table under the heading 'A' Posts carrying pay above the time scale of pay of the Indian Police Service under the State Government for the entry "Gujarat" occurring in the first column and the corresponding entries in the second

and third columns, the following shall be substituted, namely:—

GUJARAT:

Particulars of post	Pay/Scale of pay
Director General and Inspector General of Police	Rs. 7600—8000.
Director General of Police and Director, Anti-Corruption Bureau, Ahmedabad	Rs. 7600—8000
Commissioner of Police, Ahmedabad City	Rs. 5900-200-6700
Special Inspector General of Police CID, Crime and Railways	-do-
Special Inspector General of Police CID, Intelligence, Ahmedabad	-do-
Inspector General of Police (Law and Order), Ahmedabad	-do-
Commissioner of Police, Vadodara City	-do-
Special Inspector General of Police, Computer-cum-State Crime Record bureau, Gandhinagar	-do-
Special Inspector General of Police Administration	-do-
Deputy Inspector General of Police Armed Units and Training	Rs. 5100-150-5400 (18th year or later)-150-6150
Commissioner of Police, Rajkot & Surat	-do-
Additional Commissioner, Ahmedabad City	-do-
Principal, Police Training College, Junagadh	-do-
Deputy Inspector General of Police (Ranges)	-do-
Deputy Inspector General of Police Saurashtra, South Range, Junagadh	-do-
Deputy Inspector General of Police, Surat Range, Surat	-do-
Deputy Inspector General of Police, CID, IB	-do-
Deputy Inspector General of Police, Western Railways	-do-
Deputy Inspector General of Police (CID) Crime	-do-
Deputy Inspector General of Police Ahmedabad Range, Ahmedabad	-do-
Deputy Inspector General of Police, Industrial Security, Police Welfare and Harijan Affairs, Ahmedabad	-do-

(b) In Schedule III, in the table under the heading 'B' Post carrying pay in the Senior Time Scale of the Indian Police Service under the State Governments including posts carrying special pay in addition to pay in the Time Scale for the entry 'Gujarat' occurring in the first column and the corresponding entries in the second column, the following entries shall be substituted namely:—

State	Particulars of the posts
Gujarat	Deputy Director, Anti-Corruption Bureau. Assistant Inspector General of Police. Deputy Commissioner of Police, Ahmedabad City. Deputy Commissioner of Police, Rajkot, Vadodara and Surat. Superintendent of Police, CID, IB. Superintendent of Police, CID, Crime and Railways. Superintendent of Police, Railways. District Superintendent of Police. District Superintendent of Police, Kheda South, Anand.

District Superintendent of Police, Porbander.
Commandant, S.R.P.F.
Principal S.R.P.F. Training Centre, Chowkey, Junagadh.
Superintendent of Police, Narcotics, G.S. Ahmedabad.
Principal, Police Training School, Vadodara.
Deputy Commissioner of Police, Vadodara City.
District Superintendent of Police, Gandhinagar.
District Superintendent of Police, Patan.
Vice-Principal, Police Training College, Junagadh.
Commandants Group (SRPF, Gr. X Ukai, SRPF, Gr. XI Vav; SRPF, Gr. XII, Gandhinagar; SRPF, Gr. XIII, Rajkot).

NOTE.—The Principal Rules were published vide Gazette No. 158, dated 14th September, 1954. Entries in Schedule II in respect of Gujarat were subsequently amended vide G.S.R. Nos. 506, 1640, 349-E, 610-F, 499-F, 707, 163 and 913 dated 29-4-60, 28-11-64, 25-6-75, 21-11-81, 16-7-82, 28-8-82, 14-3-87 and 16-12-89 respectively.

[No. 11052/2/97-AIS(II)-B]

MADHUMITA D. MITRA, Desk Officer

नई दिल्ली, 26 जून, 1997

सा. का. नि. 284.-भारतीय प्रशासनिक सेवा (संवर्ग) नियमावली, 1954 के नियम 4 के उप नियम (2) के साथ पठित अखिल भारतीय सेवा अधिनियम 1951 (1951 का 61) की धारा 3 की उपधारा (1) द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए, केन्द्रीय सरकार महाराष्ट्र सरकार के परामर्श से, भारतीय प्रशासनिक सेवा (संवर्ग पद संख्या का नियतन) विनियमावली, 1955 में और आने संशोधन करने के लिए एतद्वारा निम्नलिखित विनियम बनाती है, अर्थात् :—

1. (1) इन विनियमों का नाम भारतीय प्रशासनिक सेवा (संवर्ग पद संख्या का नियमन) दूसरा संशोधन विनियमावली, 1997 है।

(2) ये नियम सरकारी राजपत्र में इनके प्रकाशन की तारीख को प्रवृत्त होंगे।

2. भारतीय प्रशासनिक सेवा (संवर्ग पद संख्या का नियतन) विनियमावली, 1955 की अनुसूची में 'महाराष्ट्र' शीर्षक और उसके अंतर्गत आने वाली प्रविष्टियों के स्थान पर निम्नलिखित प्रविष्टि प्रतिस्थापित की जाएगी, अर्थात् :—

महाराष्ट्र

1. राज्य सरकार के अर्धीन वरिष्ठ पद	190
सरकार के मुख्य सचिव और विकास आयुक्त	1
सरकार के अतिरिक्त मुख्य सचिव	1
सरकार के अतिरिक्त मुख्य सचिव, विदरभा शिबारा	1
सरकार के प्रधान सचिव	14
विभागीय जांच के आयुक्त	1

महानिदेशक, गणयंतराव अध्यापन विकास प्रकाशन	1
अकादमी	
सरकार के सचिव	23
मण्डलीय आयुक्त	6
बिक्री कर आयुक्त	1
बंदोबस्त आयुक्त और निदेशक, भूमि रिकार्ड	1
सहकारिता आयुक्त एवं सहकारी समितियों के	1
पंजीयकार	1
विकास आयुक्त, उद्योग	1
मध्य निपेक्ष तथा उत्पाद शुल्क आयुक्त	1
मुख्य मंत्री के सचिव	1
विशेष आयुक्त, नई दिल्ली	1
राज्यपाल के सचिव	1
शर्करा आयुक्त	1
परिवहन आयुक्त	1
डैरी विकास आयुक्त	1
आयुक्त, खाद्य तथा दवा प्रशासन	1
मुख्य प्रोटोकाल अधिकारी	1
कर्मचारी राज्य बीमा योजना आयुक्त	1
मुख्य चुनाव अधिकारी तथा सरकार के सचिव	1
कृषि आयुक्त	1
जनजाति विकास के आयुक्त	1
संयुक्त सचिव/अपर सचिव/विशेष सचिव	40
समाहर्ता बम्बई उप नगर जिला	1
समाहर्ता	30
अपर समाहर्ता	4
मुख्य कार्यकारी अधिकारी, जिला परिषदें	29
नागरिक आपूर्ति निदेशक (भण्डारण तथा संचालन)	1
भूमि रिकार्ड उप निदेशक	1
पंजीकरण महानिरीक्षक	1
बिक्री कर अपर आयुक्त	1
अपर आयुक्त उद्योग	1
बिक्री कर उप-आयुक्त	4
समाज कल्याण निदेशक	1
अपर आयुक्त	6
हथकरघा पावरलूम सरकारी वस्त्र उद्योग	1
रोजगारनिदेशक	1
राशनग नियंत्रक	1
जनजातिय उप-योजना अपर आयुक्त	2
लघु बचत निदेशक	1
खेल तथा युवा सेनाओं के निदेशक	1

190

2. केन्द्रीय प्रतिनियुक्ति रिजर्व उर्वर्युक्त मय 1 के 40% की दर से

76

3. भाषतोय प्रशासनिक सेवा भर्ती नियमावली 1954 के नियम 8 के अनुसार पदोन्नति अथवा चयन द्वारा भरे जाने वाले पद उपर्युक्त मद 1 और 2 के 33-1/3 प्रतिशत की दर से	38
4. सीधी भर्ती द्वारा भरे जाने वाले पद उपर्युक्त मद 1 और 2 के योग में से 3 घटाकर	178
5. प्रतिनियुक्ति रिजर्व उपर्युक्त मद 1 के 25 प्रतिशत की दर से	47
6. छुट्टी रिजर्व, कनिष्ठ पद और प्रशिक्षण रिजर्व उपर्युक्त मद 1 के 20 प्रतिशत की दर से	38
सीधी भर्ती वाले पद	263
पदोन्नति वाले पद	88
कुल प्राधिकृत पद	351

[सं. 11031/1/96-अ.भा.से (II)-क]
मधुमिता डी. मित्रा, डैस्क अधिकारी

टिप्पणी : (1) इस अधिसूचना के जारी होने से पहले महाराष्ट्र (मा.प्र.सं.) की कुल प्राधिकृत पद संख्या 348 थी।

(2) मुख्य विनियम दिनांक 22-10-55 के सा. का. नि.सं. 3350 द्वारा गजट में प्रकाशित किए गए थे। महाराष्ट्र संवर्ग से संबंधित विनियमों को बाद की निम्नलिखित सा.का.नि. संख्याओं द्वारा संशोधित किया गया था :—

185 ई तारीख 25-4-74, 1299 तारीख 7-12-74, 465 ई तारीख 23-7-76, 158 तारीख 9-2-80, 294 ई तारीख 15-4-81, 788 तारीख 29-8-81, 320 ई तारीख 8-4-83, 588 तारीख 13-3-83, 568 ई तारीख 15-7-85, 835 तारीख 7-9-85, 190 तारीख 26-3-88, 658 तारीख 20-8-88, 1003 तारीख 31-12-88, 340 ई तारीख 3-3-89, 69 तारीख 22-2-92, 33 तारीख 16-1-93, तथा 319 ई तारीख 31-3-95 द्वारा संशोधित किया गया था।

New Delhi, the 26th June, 1997

G.S.R. 284.—In exercise of the powers conferred by sub-section (i) of Section 3 of the All India Services Act, 1951 (61 of 1951), read with sub-rule (2) of rule 4 of the Indian Administrative Service (Cadre) Rules, 1954, the Central Government in consultation with the Government of Maharashtra hereby makes the following regulations further to amend the Indian Administrative

Service (Fixation of Cadre Strength) Regulations, 1955, namely :—

- (1) These regulations may be called the Indian Administrative Service (Fixation of Cadre Strength) Second Amendment Regulations, 1997.
- (2) They shall come into force on the date of their publication in the Official Gazette.

2. In the Schedule to the Indian Administrative Service (Fixation of Cadre Strength) Regulations, 1955, for the heading "Maharashtra" and the entries occurring thereunder, the following shall be substituted namely :—

MAHARASHTRA

1. Senior Posts under the State Government	190
Chief Secretary to Government & Development Commissioner	1
Additional Chief Secretary to Government	1 1
Additional Chief Secretary to Government, Vidharbha Development	1
Principal Secretary to Government	14
Commissioner of Departmental Enquiries	1
Director General, Yeswantrao Chavan Academy of Development Administration	1
Secretary to Government	23
Commissioner of Division	6
Commissioner of Sales Tax	1
Settlement Commissioner and Director of Land Records	1
Secretary to Governor	1
Commissioner, Sugar	1
Commissioner for Cooperation and Registrar of Cooperative Societies	1
Development Commissioner, Industries	1
Commissioner of Prohibition & Excise	1
Secretary to Chief Minister	1
Special Commissioner, New Delhi	1
Transport Commissioner	1
Dairy Development Commissioner	1

Commissioner, Food & Drugs Administration	1
Chief Protocol Officer & Secretary to Government	1
Commissioner of Employees State Insurance Scheme	1
Chief Electoral Officer & Secretary to Government	1
Commissioner of Agriculture	1
Commissioner of Tribal Development	1
Joint Secretary Addl. Secy Spl. Secy.	40
Collector	30
Additional Collector	4
Chief Executive Officer, Zila Parishad	29
Director of Civil Supplies (Storage & Movement)	1
Deputy Director of Land Records	1
Inspector General of Registration	1
Additional Commissioner of Sales Tax	1
Additional Commissioner of Industries	1
Deputy Commissioner of Sales Tax	4
Director of Social Welfare	1
Additional Commissioner	6
Director of Handlooms, Power-looms and Cooperative Textiles	1
Director of Employment	1
Controller of Rationing	1
Additional Commissioner of Tribal Sub-Plan	2
Collector, Bombay Sub-urban District	1
Director of Small Savings	1
Director of Sports & Youth Services	1
	190
2. Central Deputation Reserve @ 40% of item 1 above	76
3. Posts to be filled by promotion or selection in accordance with Rule 8 of the I.A.S. (Recruitment) Rules, 1954 @ 33-1/3% of item 1 and 2 above	88
4. Posts to be filled by direct recruitment 1 plus 2 minus 3 above	178

5. Deputation Reserve @ 25% of item 1 above	47
6. Leave Reserve, Junior Posts & Training Reserve @ 20% of item 1 above	38
7. Direct Recruitment Posts	263
Promotion Posts	88
Total Authorised Strength	351

[No. 11031/1/96-IAS (II) A]

MADHUMITA D. MITRA, Desk Officer

Note 1 : The Total authorised strength of Maharashtra (IAS) cadre prior to the issue of this Notification was 348.

Note 2 : The Principal Regulations were published in the Gazette vide SRO No. 3350 dated 22-10-55. The Regulations in respect of Maharashtra cadre have been amended vide G.S.R. No. 185(E) dated 25-4-74, 1299 dated 7-12-74, 465(E) dated 28-7-76, 158, dated 9-2-80, 294(E) dated 15-4-81, 788 dated 29-8-81, 320(E) dated 8-4-83, 588 dated 13-8-83, 568(E) dated 18-7-85, 835 dated 7-9-85, 190 dated 26-3-88, 658 dated 20-8-88, 1003 dated 31-12-88, 340(E) dated 3-3-89, 69, dated 22-2-92, 33 dated 16-1-93 and 319(E), dt. 31-3-95.

नई दिल्ली, 26 जून, 1997

सा. का. नि. 285.—भारतीय प्रशासनिक सेवा (वेतन) नियमावली, 1954 के नियम (11) के साथ पठित अखिल भारतीय सेवा अधिनियम, 1951 (1951 का 61) की धारा 3 की उपधारा (i) द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए केन्द्र सरकार, महाराष्ट्र सरकार के परामर्श से भारतीय प्रशासनिक सेवा (वेतन) नियमावली, 1954 के आगे और संशोधन करने के लिए एतद्वारा निम्नलिखित नियम बनाती है, अर्थात् :—

1. (1) इन नियमों का नाम भारतीय प्रशासनिक सेवा (वेतन) दूसरा संशोधन नियम, 1997 है।

(2) ये नियम सरकारी राजपत्र में इनके प्रकाशन की तारीख को प्रवृत्त होंगे।

2. भारतीय प्रशासनिक सेवा (वेतन) नियमावली, 1954 में :—

(क) अनुसूची—III—क में राज्य सरकारों के अधीन भारतीय प्रशासनिक सेवा में समय वेतनमान से अधिक वेतन वाले पदों के लिए तालिका के पहले कालम में आने वाली "महाराष्ट्र" प्रविष्टि के लिए और दूसरे तथा तीसरे कालम में आने वाली तदनुसूची प्रविष्टियों के

स्थान पर निम्नलिखित प्रतिस्थापित किया जाएगा, अर्थात् :—

महाराष्ट्र :

सरकार के मुख्य सचिव तथा विकास आयुक्त	8000
सरकार के अतिरिक्त मुख्य सचिव	8000
सरकार के अतिरिक्त मुख्य सचिव, विद्युत विकास	800
सरकार के प्रधान सचिव	7300-100-7600
विभागीय जांच के आयुक्त	7300-100-7600
महानिदेशक, यशवंतराव चव्हाण विकास प्रशासन अकादमी	7300-100-7600
सरकार के सचिव	5900-200-6700
मण्डलीय आयुक्त	—यथोपरि—
बिक्री कर आयुक्त	—यथोपरि—
बंदोबस्त आयुक्त एवं भूमि रिकार्ड निदेशक	—यथोपरि—
सहकारिता आयुक्त एवं सहकारी समितियों के पंजीकार	5900-200-6700
विकास आयुक्त, उद्योग	—यथोपरि—
महानिषेध एवं उत्पाद शुल्क आयुक्त	—यथोपरि—
मुख्य मंत्री के सचिव	—यथोपरि—
राज्यपाल के सचिव	—यथोपरि—
विशेष आयुक्त, नई दिल्ली	—यथोपरि—
शर्करा आयुक्त	—यथोपरि—
परिवहन आयुक्त	—यथोपरि—
शहरी विकास आयुक्त	—यथोपरि—
आयुक्त, खाद्य तथा दवा प्रशासन	—यथोपरि—
मुख्य प्रोटोकाल अधिकारी	—यथोपरि—
कर्मचारी राज्य बीमा योजना आयुक्त	—यथोपरि—
मुख्य चुनाव अधिकारी तथा सरकार के सचिव	—यथोपरि—
कृषि आयुक्त	—यथोपरि—
जनजाति विकास के आयुक्त	—यथोपरि—

(ख) अनुसूची-III-ख, में राज्य सरकारों के अधीन भारतीय प्रशासनिक सेवा में वर्णित वेतनमान वाले (समय वेतनमान के वेतन के अतिरिक्त विशेष वेतन पाने वाले दो सहित) पदों के लिए, तालिका के पहले काष्ठ में आने वाली "महाराष्ट्र" प्रविष्टि के लिए तथा दूसरे काष्ठ में आने वाली तदनुसूची प्रविष्टियों के स्थान पर निम्नलिखित स्थापित किया जायेगा, अर्थात् :—

संयुक्त सचिव/अपर सचिव/विशेष सचिव
समाहर्ता

समाहर्ता, बम्बई उपनगर जिला
अपर समाहर्ता

मुख्य कार्यकारी अधिकारी, जिला परिषद
अपर मुख्य कार्यकारी अधिकारी, जिला परिषद
नागरिक आपूर्ति निदेशक
(भंडारण एवं संचालन)

भूमि रिकार्ड के उप निदेशक
पंजीकरण महानिरीक्षक
बिक्री कर अपर आयुक्त
अपर आयुक्त, उद्योग
बिक्री कर उप आयुक्त
समाज कल्याण निदेशक
अपर आयुक्त

हथकरघा, पावरलूम और सहकारी बम्ब निदेशक
रोजगार निदेशक
राशनिंग नियंत्रक
जनजातीय उप-योजना अपर आयुक्त
सधु बचत निदेशक
खेल तथा युवा सेवाओं के निदेशक

[सं. 11031/1/96-अ.भा.से. (II)-ख]
समितिना डी. मित्रा, डैस्क अधिकारी

टिप्पणी :—मुख्य नियम 14-9-54 की गजट सं. 158 द्वारा प्रकाशित किए गए में अनुसूची-III के मुख्य नियमों में महाराष्ट्र संवर्ग से संबंधित नियमों को सा.का.नि. सं. 186, दिनांक 25-4-87, 1300 दिनांक 7-12-74, 466 ई, दिनांक 23-7-76, 159 दिनांक 9-2-80, 295 ई दिनांक 15-4-81, 569 ई दिनांक 15-7-85, 919 दिनांक 5-10-85, 659 दिनांक 20-8-88, 1004 दिनांक 31-12-88, 341ई दिनांक 3-3-89, तथा 68 दिनांक 22-2-92 द्वारा संशोधित किया गया था।

New Delhi, the 26th June, 1997

G.S.R. 285.—In exercise of the powers conferred by sub-section (i) of Section 3 of the All India Services Act, 1951 (61 of 1951) read with rule 11 of the Indian Administrative Service (Pay) Rules, 1954, the Central Government, in consultation with the Government of Maharashtra hereby makes the following rules further to amend the Indian Administrative Service (Pay) Rules, 1954, namely :—

1. (1) These rules may be called the Indian Administrative Service (Pay) second amendment Rules, 1997.

(2) They shall come into force on the date of their publication in the Official Gazette.

2. In the Indian Administrative Service (Pay), Rules, 1954 :—

- (a) In Schedule III-A Posts carrying pay above the time scale in the Indian Administrative Service under the State Governments, in the Table for the entry "Maharashtra" occurring in the first column and the corresponding entries in the second and third columns, the following shall be substituted, namely :—

Maharashtra

Chief Secretary to Government & Development Commissioner	Rs. 8000
Additional Chief Secretary to Government	Rs. 8000
Addl. Chief Secretary to Government Vidharbha Development	Rs. 8000
Principal Secretary to Government	Rs. 7300-100-7600
Commissioner of Departmental Enquiries	Rs. 7300-100-7600
Director General, Yeswant- rao Chavan Academy of Development Administration	Rs. 7300-100-7600
Secretary to Government	Rs. 5900-200-6700
Commissioner of Division	Rs. 5900-200-6700
Commissioner of Sales Tax	Rs. 5900-200-6700
Settlement Commissioner & Director of Land Records	Rs. 5900-200-6700
Commissioner for Co- operation & Registrar of Cooperative Societies	Rs. 5900-200-6700
Commissioner, Food & Drugs Administration	Rs. 5900-200-7600
Chief Protocol Officer & Secretary to Government	Rs. 5900-200-6700
Commissioner of Employees State Insurance Scheme	Rs. 5900-200-6700
Chief Electoral Officer & Secretary to Government	Rs. 5900-200-6700
Development Commis- sioner, Industries	Rs. 5900-200-6700
Commissioner of Prohibi- tion & Excise	Rs. 5900-200-6700
Commissioner Sugar	Rs. 5900-200-6700
Secretary to Chief Ministers	Rs. 5900-200-6700
Secretary to Governor	Rs. 5900-200-6700

Special Commissioner, New Rs. 5900-200-6700
Delhi

Transport Commissioner Rs. 5900-200-6700
Dairy Development RS. 5900-200-6700
Commissioner

Commissioner of Agri- Rs. 5900-200-6700
culture

Commissioner of Tribal Rs. 5900-200-6700
Development

- (b) In Schedule III-B Posts carrying pay in the senior scale of the Indian Administrative Service under the State Governments (including posts carrying special pay in addition to pay in the time scale), in the Table, for the entry "Maharashtra" occurring in the first column and the corresponding entries in the second column, the following shall be substituted, namely :—

Joint Secretary|Addl. Secretary|Special Secy.
Collector

Collector, Bombay Suburban District.
Additional Collector

Chief Executive Officer, Zilla Parishad

Director of Civil Supplies (Storage & Movement)

Deputy Director of Land Records

Inspector General of Registrations

Additional Commissioner of Sales Tax

Additional Commissioner of Industries

Deputy Commissioner of Sales Tax

Director of Social Welfare

Additional Commissioner

Director of Handlooms, Powerlooms & Coope-
rative Textiles

Director of Employment

Director of Sports & Youth Services

Controller of Rationing

Addl. Commissioner for Tribal Sub-Plan

Director of Small Savings.

[No. 11031/1/96-AIS(II)-B]

MADHUMITA D. MITRA, Desk Officer

Note.—The Principal Rules were published vide Gazette No. 158 dated 14th September, 1954. Schedule III of the Principal Rules, in respect of Maharashtra was amended vide G.S.R. No. 186 dated 25th April, 1974, 1300 dated 7th December, 1974, 466E dated 23rd July, 1976, 159 dated 9th February, 1980, 295E dated 15th April, 1981, 569E dated 15th July, 1985, 919 dated 5th October, 1985, 659 dated 20th August, 1988, 1004 dated 31st December, 1988, 341E dated 3rd March, 1989 and 68 dated 22nd February, 1992.

(कार्मिक और प्रशिक्षण विभाग)

नई दिल्ली, 27 जून, 1997

सांकांनि० 286--भारतीय प्रशासनिक सेवा (संवर्ग) नियमावली, 1954 के नियम 4 के उपनियम (2) के साथ पठित अधिलक्ष भारतीय सेवा अधिनियम, 1951 (1951 का 61) की धारा 3 की उपधारा (1) द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए, केन्द्रीय सरकार, राजस्थान सरकार के परामर्श से भारतीय प्रशासनिक सेवा (संवर्ग पद संख्या का नियतन) विनियमावली, 1955 में और भागे संशोधन करने के लिए एतद्वारा निम्नलिखित विनियम बनाती है, अर्थात् :-

1. (1) इन नियमों का नाम भारतीय प्रशासनिक सेवा (संवर्ग पद संख्या का नियतन) तीसरा संशोधन विनियमावली, 1997 है।

(2) ये सरकारी राजपत्र में इनके प्रकाशन की तारीख से प्रवृत्त होंगे।

2. भारतीय प्रशासनिक सेवा (संवर्ग पद संख्या का नियतन) विनियमावली, 1955 की धनसूची में "राजस्थान" शीर्षक तथा उसके अधीन आने वाली प्रविष्टियों के लिए निम्नलिखित प्रतिस्थापित किया जाएगा, अर्थात् :-

1. राज्य सरकार के अर्थात् वरिष्ठ पद	141
सरकार के मुख्य सचिव	1
अध्यक्ष, राजस्व बोर्ड	1
अध्यक्ष, राजस्थान निविदा सेवाएं धनील अधिकरण	1
निदेशक, एच० ए० एम० राज्य लोक प्रशासन संस्थान	1
सरकार के प्रमुख सचिव	6
अध्यक्ष, राजस्थान कर बोर्ड	1
मुख्य मंत्री के सचिव	1
सरकार के निर्यात सचिव एवं पदेन मुख्य निर्वाचन अधिकारी	1
सरकार का सचिव	15
राज्यपाल के सचिव	1
विभागीय आयुक्त	6
विभागीय जांच के लिए आयुक्त	1
वाणिज्यिक कर आयुक्त	1
सदस्य, राजस्व बोर्ड	7
आयुक्त, क्षेत्रीय विकास	1
परिवहन आयुक्त	
सरकार के विशेष सचिव	10
सरकार के उप सचिव	20
बंदोस्त आयुक्त तथा पदेन एकवर्गीय निदेशक	1
निदेशक ग्रामीण विकास तथा पंचायत राज	1
पंजीयक सहकारी समितियां	1
समाहर्ता	31
निदेशक उद्योग	1
निदेशक, पनधारा विकास तथा मृदा संरक्षण	1
निदेशक, प्राथमिक तथा माध्यमिक शिक्षा	1
निदेशक, रोजगार	1
निदेशक, लघु वृक्ष	1
निदेशक, भेड़ और ऊत	1
निदेशक, महिलाएं तथा बच्चा विकास	1
निदेशक, राज्य बीमा तथा सार्वजनिक निधि	1
श्रम आयुक्त	1
आयुक्त, उत्पाद शुल्क	1

उप निदेशक आयुक्त, राजस्थान नहर परिगीकृत	1
अपर समाहर्ता (विकास)	8
अपर आयुक्त, वाणिज्यिक कर	1
अपर रजिस्ट्रार सहकारी समितियां	1
पंजीयक, राजस्व बोर्ड	1
अपर आयुक्त, खाद्य तथा सिविल आपूर्ति	1
र क्षेत्रीय विकास आयुक्त	2
निदेशक, सूचना तथा जन सम्पर्क	1
पर्यटन निदेशक	1
निदेशक, कम्प्यूटर	1
रजिस्ट्रेशन तथा स्टैम्प के मद्रा निदेशक	1
सचिव, राजस्थान लोक सेवा आयोग	1
निदेशक, समाज कल्याण	1

111

2. केन्द्रीय प्रतिनियुक्ति रिजर्व उक्त 1 के 40% की दर से	56
3. पदोन्नति तथा अयन द्वारा भरे जाने वाले पद उक्त 1 और 2 को छोड़कर उरफा 33-1/3% की दर से	65
4. सीधी भर्ती वाले पद उक्त 1 और 2 के जोड़ में से 3 घटाकर	132
5. प्रतिनियुक्ति रिजर्व उक्त 1 के 25% की दर से	35
6. छुट्टी रिजर्व, अनिष्ट पद तथा प्रशिक्षण रिजर्व उक्त 1 के 20% की दर से	28
सीधी भर्ती वाले पद	195
पदोन्नति वाले पद	65
कुल प्राधिकृत पद संख्या	260

[सं० 11031/2/94-प्र०भा०से०-II(क)]

मधुमिता डी० मिश्रा, डेस्क अधिकारी

टिप्पणी : (1) इस अधिसूचना के जारी होने से पूर्व भारतीय प्रशासनिक सेवा के राजस्थान संवर्ग की कुल प्राधिकृत पद संख्या 252 थी।

(2) मुख्य नियम, राजपत्र में दिनांक 22-12-55 की सां० नि० भा० संख्या 3350 द्वारा प्रकाशित किए गए थे। राजस्थान संवर्ग से संबंधित विनियम क्रमशः दिनांक 28-4-74, 14-9-74, 20-1-74, 22-3-75, 10-2-76, 23-8-77, 24-6-78, 17-11-79, 18-12-82, 17-10-87, 7-9-91, 23-5-92 और 31-3-95 की सांकांनि० संख्या 890, 978, 1152, 399, 72ई, 588ई, 807, 628ई, 763ई, 768, 493, 238 और 319ई द्वारा संशोधित किए गए।

(Department of Personnel & Training)

New Delhi, the 27th June, 1997

G.S.R. 286.—In exercise of the powers conferred by sub-section (1) of Section 3 of the All India Services Act, 1951 (61 of 1951), read with sub-rule (2) of rule 4 of the Indian Administrative

Service (Cadre) Rules, 1954 the Central Government, in consultation with the Government of Rajasthan, hereby makes the following regulations further to amend the Indian Administrative Service (Fixation of Cadre Strength) Regulations, 1955, namely :—

1. (1) These regulations may be called the Indian Administrative Service (Fixation of Cadre Strength) Third Amendment Regulations, 1997.

(2) They shall come into force on the date of their publication in the Official Gazette.

2. In the Schedule to the Indian Administrative Service (Fixation of Cadre Strength) Regulations, 1955 for the heading "Rajasthan" and the entries occurring thereunder, the following shall be substituted, namely:—

1. Senior posts under the State Government	141
Chief Secretary to Government	1
Chairman, Board of Revenue	1
Chairman, Rajasthan Civil Services Appellate Tribunal	1
Secretary to Chief Minister	1
Principal Secretary to Government	6
Chairman, Rajasthan Tax Board	1
Director HCM Rajasthan State Institute of Public Administration	1
Chief Electoral Officer-cum-ex-Officio	1
Principal Secretary to Government, Elections	
Secretary to Government, Elections	
Secretary to Government	15
Divisional Commissioners	6
Commissioner for Departmental Enquiries	1
Commissioner, Commercial Taxes	1
Member, Board of Revenue	7
Commissioner, Area Development	1
Transport Commissioner	1
Secretary to Governor	1
Special Secretary to Government	10
Deputy Secretary to Government	20
Settlement Commissioner & Ex-Officio	1
Director of Consolidation	1
Director, Rural Development & Panchayat Raj	1
Registrar, Cooperative Societies	1
Collectors	31

Director of Industries	1
Director, Watershed Development & Soil Conservation	1
Director, Primary & Secondary Education	1
Director Employment	1
Director, Small Savings	1
Director, Sheep & Wool	1
Director, Women and Child Development	1
Director, State Insurance & Provident Fund	1
Labour Commissioner	1
Commissioner, Excise	1
Commissioner Colonisation, Rajasthan Canal Project	1
Additional Collector (Development)	8
Addl. Commissioner, Commercial Tax	1
Addl. Registrar, Cooperative Societies	1
Registrar, Board of Revenue	1
Addl. Commissioner, Food & Civil Supplies	1
Addl. Area Development Commissioner	2
Director Information & Public Relations	1
Director of Tourism	1
Director, Computer	1
Inspector General of Registration & Stamps	1
Secretary, Rajasthan Public Service Commission	1
Director, Social Welfare	1
	<hr/> 141 <hr/>
2. Central Deputation Reserve @ 40 per cent of item 1 above	56
3. Posts to be filled by promotion and Selection @ 33.3 per cent of 1 plus 2 above.	65
4. Director Recruitment posts (1 plus 2 minus 3 above)	132
5. Deputation Reserve @ 25 per cent of item 1 above	35
6. Leave Reserve, Junior Posts and Training Reserve @ 20 per cent of item 1 above.	28
Direct Recruitment Posts	<hr/> 195 <hr/>

Promotion Posts	65
Total Authorised Strength	260

[No. 11031/2/94-AIS(II)-A]

MADHUMITA D. MITRA, Desk Officer

Note (1).—The total authorised strength of Rajasthan IAS Cadre was 252 prior to issue of this Notification.

Note (2).—The Principal Regulations were published in the Gazette vide SRO No. 3353 dated 22nd October, 1985. The Regulations in respect of Rajasthan Cadre were amended vide GSR Nos. 890 dated 24th August, 1974, 978 dated 14th September, 1974, 1152 dated 2nd November, 1974, 369 dated 22nd March, 1975, 72(E) dated 10th February, 1976, 588(E) dated 23rd August, 1977, 897 dated 24th June, 1978, 628(E) dated 17th November, 1979, 763(E) dated 18th December, 1982, 768 dated 17th October, 1987, 493 dated 7th September, 1991, 238 dated 23rd May, 1992 and 319(E) dated 31st March, 1995.

नई दिल्ली, 27 जून, 1997

सांका०नि०287—भारतीय प्रशासनिक सेवा (वेतन) नियमावली, 1954 के नियम 11 के साथ पठित अखिल भारतीय सेवा अधिनियम, 1951 (1951 का 61) की धारा 3 की उपधारा (1) द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए केन्द्रीय सरकार राजस्थान सरकार के परामर्श से, भारतीय प्रशासनिक सेवा (वेतन) नियमावली, 1954 में और आगे संशोधन करके एतद्वारा निम्नलिखित नियम बनाती है, अर्थात् :-

- (1) इन नियमों का नाम भारतीय प्रशासनिक सेवा (वेतन) तीसरा संशोधन नियमावली, 1997 है।
- (2) ये सरकार राजपत्र में इनके प्रकाशन की तारीख से प्रवृत्त होंगे।
2. भारतीय प्रशासनिक सेवा (वेतन) नियमावली, 1954 में —
- (7) अनुसूची III-क में, राज्य सरकारों के अधीन भारतीय प्रशासनिक सेवा में समय वेतनमान से अधिक वेतन वाले पदों की सारणी में, प्रथम कालम में पढ़ने वाली "राजस्थान" प्रविष्टि दूसरे तथा तीसरे कालम की तत्समानी प्रविष्टियों के लिए, निम्नलिखित प्रतिस्थापित किया जाएगा, अर्थात् :-

राजस्थान

पदों का पदनाम	वेतन/वेतनमान
सरकार के मुख्य सचिव	₹ 8000/-
अध्यक्ष, राजस्व बोर्ड	₹ 8000/-
अध्यक्ष, राजस्थान सिविल सेवाएं अपील अधि-करण	₹ 8000/-
निदेशक, पञ्चमी ००.स० लोक प्रशासन राज्य संस्थान	₹ 7300-100-7600
सरकार के प्रमुख सचिव	—यथोपरि—
मुख्य मंत्री के सचिव	—यथोपरि—

सरकार के निर्देशन सचिव एवं पदेन	
मुख्य निर्वाचन अधिकारी	₹ 7300-100-7600
प्रभागीय आयुक्त	₹ 5900-200-6700
सरकार के सचिव	—यथोपरि—
विभागीय जांच आयुक्त	—यथोपरि—
आयुक्त वाणिज्यिक कर	—यथोपरि—
राज्यपाल के सचिव	—यथोपरि—
महस्य, राजस्व बोर्ड	—यथोपरि—
क्षेत्रीय विकास आयुक्त	—यथोपरि—
परिवहन आयुक्त	—यथोपरि—

(ख) अनुसूची II-ख में राज्य सरकार के अधीन भारतीय प्रशासनिक सेवा के बरिष्ठ समय वेतन में वेतन वाले पद जिनमें समय वेतनमान के अतिरिक्त विशेष वेतन वाले पद शामिल हैं, की सारणी में, प्रथम कालम में पढ़ने वाली "राजस्थान" प्रविष्टि तथा दूसरे कालम में तत्समानी प्रविष्टि के लिए निम्नलिखित प्रतिस्थापित किया जाएगा अर्थात् :-

सरकार के विशेष सचिव
सरकार के उप सचिव
बन्तवस्तु अधिकारी तथा पदेन चकबन्दी निदेशक
निदेशक, ग्रामीण विकास तथा पंचायत राज
पंजीयक, सहकारी समितियां
समाहर्ता
निदेशक उद्योग
निदेशक, पनधारा विकास तथा मृदा संरक्षण
निदेशक, प्राथमिक तथा माध्यमिक शिक्षा
निदेशक, रोजगार
निदेशक, सधु संचल
निदेशक, महिलाएं तथा बाल विकास
निदेशक, भेड़ तथा ऊन
श्रम आयुक्त
निदेशक, राज्य बीमा तथा अधिष्ठा निधि
उत्पाद शुल्क आयुक्त
उपनिवेशन आयुक्त राजस्थान नहर परियोजना
अपर समाहर्ता (विकास)
अपर आयुक्त, वाणिज्यिक कर
अपर पंजीयक, सहकारी समितियां
पंजीयक, राजस्व बोर्ड
अपर आयुक्त खाद्य एवं सिविल आपूर्ति
अपर क्षेत्रीय विकास आयुक्त
पर्यटन निदेशक
रजिस्ट्रेशन तथा स्टैम्प महानिदेशक
सचिव राजस्थान लोक सेवा आयोग
निदेशक समाज कल्याण
निदेशक, सूचना तथा जन संपर्क
निदेशक, कम्प्यूटर

[नं० 11031/2/94-अ०भा०से०-II (ख)]
मधुमिता डी० मित्रा, डैस्क अधिकारी

टिप्पणी :- ये मुख्य नियम राजपत्र संख्या 158, दिनांक 14-9-1954 द्वारा प्रकाशित किए गए थे। राजस्थान से संबंधित मुख्य नियमों की अनुसूची-III में क्रमशः दिनांक 14-9-74, 22-3-75 10-2-76, 23-3-77, 17-11-79, 18-12-82, 17-10-87 7-9-91 और 23-5-92 का सांका०नि० संख्या 979, 370, 73(ई), 589(ई), 629(ई), 714(ई), 764(ई), 767, 493 और 239 द्वारा संशोधित किया गया था।

New Delhi, the 27th June, 1997

G.S.R. 287.—In exercise of the powers conferred by sub-section (1) of Section 3 of the All India Service Act, 1951 (61 of 1951), read with rule 11 of the Indian Administrative Service (Pay) Rules, 1954, the Central Government in consultation with the Government of Rajasthan, hereby makes the following Rules, 1954, namely :—

1. (1) These rules may be called the Indian Administrative Service (Pay) Third Amendment Rules, 1997.

(2) They shall come into force on the date of their publication in the Official Gazette.

2. In the Indian Administrative Service (Pay) Rules, 1954 :—

(a) In Schedule-III-A posts carrying pay above the time-scale in the Indian Administrative Service under the State Government in the Table, for the entry, "Rajasthan" occurring in the first column, and the corresponding entries in the second and third column, the following shall be substituted, namely :—

RAJASTHAN

Designation of posts	Pay Scale of pay
Chief Secretary to Government	Rs. 8000
Chairman, Board of Revenue	Rs. 8000
Chairman Rajasthan Civil Services Appellate Tribunal	Rs. 8000
Principal Secretary to Government	Rs. 7300-100-7600
Chairman, Rajasthan Tax Board	Rs. 7300-100-7600
Director, HCM State Institute of Public Administration	Rs. 7300-100-7600
Chief Electoral Officer-cum-ex-officio Principal Secretary to Government, Elections	Rs. 7300-100-7600
Secretary to Chief Minister	Rs. 7300-100-7600
Secretary to Government	Rs. 5900-200-6700
Divisional Commissioners	Rs. 5900-200-6700
Commissioner for Departmental Enquiries	Rs. 5900-200-6700

Commissioner, Commercial Taxes Rs. 5900-200-6700

Member, Board of Revenue Rs. 5900-200-6700

Commissioner, Area Development Rs. 5900-200-6700

Transport Commissioner Rs. 5900-200-6700

Secretary to Governor Rs. 5900-200-6700

(b) In "Schedule III-B posts carrying pay in the senior scale of the Indian Administrative Service under the State Government including posts carrying special pay in addition to pay in the time scale, in the Table, for the entry "Rajasthan" occurring in the first column and the corresponding entries in the second column, the following shall be substituted, namely :—

Special Secretary to Government.

Deputy Secretary to Government.

Settlement Commissioner & Ex-officio Director of Consolidation.

Director, Rural Development & Panchayati Raj, Registrar, Cooperative Societies.

Collectors.

Director of Industries.

Director, Watershed Development & Soil Conservation.

Director, Primary & Secondary Education.

Director, Employment.

Director, Small Savings.

Director, Sheep & Wool.

Director, Women and Child Development.

Director, State Insurance & Provident Fund.

Labour Commissioner.

Commissioner, Excise.

Commissioner Colonisation, Rajasthan Canal Project.

Additional Collector (Development).

Additional Commissioner, Commercial Taxes.

Addl. Registrar, Cooperative Societies.

Registrar, Board of Revenue.

Addl. Commissioner, Food & Civil Supplies.

Addl. Area Development Commissioner.

Director, Information & Public Relations.

Director of Tourism.

Director, Computer.

Inspector General of Registration of Stamps.

Secretary, Rajasthan Public Service
Commissioner.

Director, Social Welfare.

[No. 11031/2/94-AIS(II)-B]

MADHUMITA D. MITRA, Desk Officer

NOTE: The Principal Rules were published vide
Gazette No. 158 dated 14-9-1954.

Schedule III of the Principal Rules in
respect of Rajasthan were amended vide
GSR No. 979 dated 14-9-1974, 370
dated 22-3-1975, 73(E) dated 10-2-1976,
589(E) dated 23-8-1977, 629(E) dated
17-11-1979, 764(E) dated 18-12-1982,
767 dated 17-10-87, 493 dated 7-9-1991
and 239 dated 23-5-1992.

नागर विमानन मंत्रालय

नई दिल्ली, 20 जून, 1997

सा.कम.नि. 288.—इंदिरा गांधी राष्ट्रीय उड़ान अकादमी (इगूआ) के नियमों एवं विनियमों के नियम 9.1 के अधीन प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए केन्द्र सरकार एतद्वारा नागर विमानन मंत्रालय के अधीन एक स्वायत्त संगठन, इगूआ के निदेशक के पद की भर्ती संबंधी विधि को विनियमित करने वाले निम्नलिखित नियम बनाती है, अर्थात् :

1. लघु शीर्षक तथा प्रवर्तन :

(1) ये नियम निदेशक इंदिरा गांधी राष्ट्रीय उड़ान अकादमी भर्ती नियम, 1947 कहलाएंगे।

(2) ये शासकीय राजपत्र में अपने प्रकाशन की तारीख से प्रवृत्त होंगे।

2. पद संख्या, वर्गीकरण तथा वेतनमान

उक्त पद की संख्या, इसके वर्गीकरण तथा उसके लिए सम्बद्ध वेतनमान के बारे में इन नियमों के लिए संलग्न अनुसूची के कालम 2 से कालम 4 तक में उल्लेख किया जाएगा।

3. भर्ती की विधि, आयु सीमा तथा अन्य अर्हताएं आदि :

उक्त पद के लिए भर्ती विधि, आयु सीमा, अर्हता तथा इससे संबंधित अन्य मामले उक्त अनुसूची के कालम 5 से कालम 14 में उल्लेखानुसार होंगे।

4. अनर्हता: ऐसा कोई अभ्यर्थी उक्त पद के लिए नियुक्ति हेतु पात्र नहीं होगा जिसने, —

(क) ऐसे व्यक्ति/महिला से अनुबंधित विवाह किया हो जिसकी पत्नी/जिसका पति जीवित हो; अथवा

(ख) अपनी पत्नी/पति के जीवित रहते हुए किसी दूसरे व्यक्ति/महिला के साथ अनुबंधित विवाह किया हो,

यद्यपि कि केन्द्र सरकार इस नियम के संक्रिया से किसी व्यक्ति को छूट देती हो कि वह आवश्यक है कि ऐसा विवाह ऐसे व्यक्ति और विवाह के दूसरे पक्ष के लिए प्रयोज्य वैयक्तिक कानून (पर्सनल लॉ) के अधीन स्वीकार्य है और ऐसा किए जाने के लिए दूसरे अन्य आधार भी है।

5. छूट देने की शक्ति : केन्द्र सरकार यदि अपने विवेक से यह समझती है कि ऐसा करना आवश्यक अथवा समीचीन है, यह आदेशानुसार तत्संबंधी कारण को लिखित रूप में दर्ज करने हेतु तथा कार्मिक और प्रशिक्षण विभाग से परामर्श करके कभी भी वर्ग अथवा व्यक्तियों के वर्ग के संबंध में इन नियमों के किन्हीं भी उपबंधों में छूट दे सकती है।

अनुसूची

पद का नाम	पद की संख्या	वर्गीकरण	वेतनमान	क्या चयन पद है अथवा अचयन पद
1	2	3	4	5
निदेशक	1	गैर प्रमुखीय	7500-100-7600 रु. के अतिरिक्त अकादमी के नियमों के अनुसार उड़ान तथा अन्य भत्ते	चयन पद

सीधी भर्ती के लिए आयु सीमा	यथा केन्द्रीय सिविल सेवा (पेंशन) नियम 1972 के नियम 30 के अधीन स्वीकार्य सेवा के जमा वर्षों का लाभ	सीधी भर्ती के लिए अपेक्षित शैक्षिक तथा अन्य अर्हता	यथा सीधी भर्ती हेतु विहित आयु और शैक्षिक अर्हताएं पदोन्नति पाने वाले के मामले में लागू होंगी।	परिवर्तनों की अवधि, यदि कोई हो
----------------------------	---	--	---	--------------------------------

6	7	8	9	10
45 तथा 55 वर्ष के बीच	लागू नहीं	अनिवार्य (1) चालू एयरलाइन्स परिवहन पायलोट लाइसेंस धारक (2) कम से कम 3 वर्ष का विमान संबंधी अनुदेशात्मक अनुभव (3) विश्व की अद्यतन विमान प्रौद्योगिकी की जानकारी (4) प्रशिक्षण संस्थान के संचालन और व्यावसायिक तथा सरकारी एजेंसियों के साथ सम्पर्क स्थापित करने में सक्षम होने के लिए प्रशासनिक और प्रबंधकीय अनुभव वांछनीय किसी मान्यता प्राप्त विश्व-विद्यालय से स्नातक	लागू नहीं	लागू नहीं

भर्ती का तरीका, सीधी भर्ती द्वारा या प्रोन्नति द्वारा या प्रतिनियुक्ति स्थानान्तरण द्वारा तथा विभिन्न तरीकों द्वारा भरी जाने वाली रिक्तियों की प्रतिशतता

प्रोन्नति/प्रतिनियुक्ति/स्थानान्तरण द्वारा भर्ती के मामले में ग्रेड जिनसे प्रोन्नति/प्रतिनियुक्ति स्थानान्तरण किया जाता है।

सीधी भर्ती या प्रोन्नति या प्रतिनियुक्ति पर स्थानान्तरण (प्रस्तावित आबंध सहित)

प्रोन्नति

- (1) मुख्य अनुदेशक के रूप में कम से कम तीन वर्ष का अनुभव तथा अकादमी में उनका कैरियर अच्छा रहा हो।
- (2) कुलम संख्या 8 के अधीन उल्लिखित शैक्षिक तथा अन्य अर्हताएं प्राप्त हो।

प्रतिनियुक्ति पर स्थानान्तरण (अल्पावधि अनुबंध सहित)

- (1) भारतीय वायु सेना के अधिकारी जिनका रैंक एयर कप्तान तथा उससे उच्च हो; अथवा
- (2) केन्द्र सरकार/राज्य सरकार/सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों/अर्ध सरकारी/स्वायत्त या अतिरिक्त संगठनों के अधिकारी
- (क) (1) नियमित आधार पर सक्षम पद; अथवा
- (2) 5900-6700 रुपए के वेतनमान अथवा समतुल्य वेतनमान के पदों पर तीन वर्ष की नियमित सेवा; तथा
- (ख) कालम संख्या 8 के अधीन यथा उल्लिखित शैक्षिक अर्हताएं तथा अनुभव प्राप्त हो।

प्रतिनियुक्ति आधार पर स्थानान्तरण (अल्पावधि अनुबंध सहित) द्वारा नियुक्ति हेतु उच्च आयु सीमा आवेदनों की प्राप्ति की अंतिम तारीख को 55 वर्ष से अधिक नहीं होनी चाहिए।

यदि विभागीय प्रोन्नति समिति विद्यमान है तो उसका गठन किस प्रकार है

जिन परिस्थितियों में संघ लोक सेवा आयोग से भर्ती करने के संबंध में परामर्श लिया जाता है

13

14

समूह 'क' विभागीय प्रोन्नति समिति (प्रोन्नति पर विचार करने हेतु)

आवश्यक नहीं क्योंकि इसका एक स्वायत्त संगठन है

1. सचिव, नागर विमानन (इसका की शासी परिषद के अध्यक्ष) —अध्यक्ष
2. प्रबन्ध निदेशक एयर इंडिया —सदस्य
3. प्रबन्ध निदेशक, इंडियन एयर लाइन्स —सदस्य

[सं० ए वी-28060/004/97-बीई]

सुरेन्द्र कुमार सिंघल, अवर सचिव

MINISTRY OF CIVIL AVIATION

New Delhi, the 20th June, 1997

G.S.R. 288.—In exercise of the powers conferred under Rule 9.1 of the Rules and Regulations of Indira Gandhi Rashtriya Uran Akademi (IGRUA), the Central Government hereby makes the following rules regulating the method of recruitment to the post of Director, IGRUA, an autonomous organisation under the Ministry of Civil Aviation, namely :—

1. Short title and commencement.—(1) These rules may be called Director, Indira Gandhi Rashtriya Uran Akademi Recruitment Rules, 1997.
- (2) They shall come into force on the date of their publication in the Official Gazette.
2. Number of post, classification and scale of pay.—The number of the said post, its classification and the scale of pay attached thereto shall be as specified in columns 2 to 4 of the Schedule annexed to these rules.
3. Method of recruitment, age limit and other qualifications, etc.—The method of recruitment to the said post, age limit, 1613 GI/97—3

qualification and other matters relating thereto shall be as specified in columns 5 to 14 of the said Schedule.

4. Disqualification.—No person,—

- (a) Who has entered into or contracted a marriage with a person having a spouse living; or
- (b) Who, having a spouse living, has entered into or contracted a marriage with any person,

shall be eligible for appointment to the said post :

Provided that the Central Government may, if satisfied that such marriage is permissible under the personal law applicable to such person and the other party to the marriage and that there are other grounds for so doing, exempt any person from the operation of this rule.

5. Power to relaxation.—Where the Central Government is of the opinion that it is necessary or expedient so to do, it may by order, for reasons to be recorded in writing and in consultation with Department of Personnel & Training, relax any of the provisions of these rules with respect to any class or category of persons.

SCHEDULE

Name of Post	No. of Post	Classification	Scale of pay	Whether Selection post or Non-Selection Post
1	2	3	4	5
Director	1	Non-Ministerial	Rs. 7300-100-7600 plus Flying and other Allowances as per Rules of the Akademi	Selection
Age limit for direct recruits	Whether benefit of added years of service admissible under rule 30 of Central Civil Service (Pension) Rules, 1972	Educational and other qualifications required for direct recruits	Whether age and educational qualifications prescribed for direct recruits will apply in case of promotees	Period of Probation if any
6	7	8	9	10
Between 45 and 55 years.	Not applicable.	Essential : (i) Holder of current Airlines Transport Pilot's Licence. (ii) Instructional experience on aircraft for atleast 3 years. (iii) Knowledge of latest aviation technology around the world. (iv) Administrative or managerial experience to be able to run a training institute and liaise with the professional and Government agencies. Desirable : Graduate from a recognised University.	Not applicable.	Not applicable
Method of Recruitment whether by direct recruitment or by promotion or by deputation/transfer and percentage of the vacancies to be filled by various methods		In case of recruitment by Promotion/Deputation/Transfer grades from which Promotion/Deputation/Transfer to be made		
11		12		
Direct recruitment or promotion or transfer on deputation (including short-term contract).		Promotion : (i) Atleast three years experience as Chief Instructor and having good career record in the Akademi. (ii) Possessing educational and other qualifications as under column No. (8) Transfer on Deputation (including Short term contract) : (i) Officers of Indian Air Force holding the rank of Air Commodore and above; or (ii) Officers of the Central Government/State Governments/Public Sector Undertakings/Semi-Governments/Autonomous or Statutory Organisations ; (a) (i) Holding Analogous post on regular basis or (ii) With 3 years regular service in posts in the pay scale of Rs. 5900-6700 or equivalent, and (b) Possessing the educational qualifications and experience as indicated under column No. 8. The upper age limit for appointment by transfer on deputation basis (including short-term contract) should not exceed 55 years on the closing date of receipt of applications.		

If a Departmental Promotion Committee exists what is composition

Circumstances in which Union Public Service Commission is to be consulted in making recruitment

13

14

Group 'A' Departmental Promotion Committee
(for considering promotion)

Not necessary as IGRUA is an autonomous organisation

1. Secretary, Civil Aviation (Chairman of the Governing Council of IGRUA)
—Chairman.
2. Managing Director, Air India—Member
3. Managing Director, Indian Airlines—Member.

[No. AV. 2856/004/97-VE]

S. K. SINGHAL, Under Secy.

जल भूतल परिवहन मंत्रालय

(पोत परिवहन खण्ड)

नई दिल्ली, 19 जून, 1997

सा.का.नि. 289.—वाणिज्य पोत परिवहन नौ-परिवहन की सुरक्षा नियम 1996 का प्रारूप, वाणिज्य पोत परिवहन अधिनियम 1958 (1958 का 44) की धारा 458 के साथ पठित धारा 356 द्वारा यथा अपेक्षित और वाणिज्य पोत परिवहन संकट संदेश और नौपरिवहन संबंधी चेतावनी) नियम 1964 को अधिष्ठात करते हुए भारत सरकार की अधिसूचना सा.का.नि. 202 तारीख 26-4-96 द्वारा भारत के राजपत्र भाग 2, खण्ड 3, उपखण्ड (1) तारीख 11-5-96 में उन सभी व्यक्तियों की जानकारी के लिए प्रकाशित किया गया था जिनके उससे प्रभावित होने की सम्भावना है। उक्त प्रारूप नियमों के संबंध में उस तारीख से जिसको भारत के राजपत्र में प्रकाशित अधिसूचना की प्रतियां जनता को उपलब्ध कराई गई थी, से 45 दिन की अवधि के भीतर आक्षेप या सुझाव आमंत्रित किए गए थे।

उक्त राजपत्र जनता को 11-5-96 को उपलब्ध करा दिया गया था;

कोई आक्षेप या सुझाव प्राप्त नहीं हुए है;

अतः अब केन्द्रीय सरकार वाणिज्य पोत परिवहन अधिनियम 1958 (1958 का 44) की धारा 458 के साथ पठित धारा 356 द्वारा प्रवृत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए निम्नलिखित नियम बनाती है, अर्थात् :—

1 संक्षिप्त नाम प्रारम्भ और लागू होता :—

(1) इन नियमों का संक्षिप्त नाम वाणिज्य पोत परिवहन (नौपरिवहन की सुरक्षा) नियम, 1997 है।

(2) इन नियमों में जैसा अन्यथा उपबंधित है उनके सिवाय नियम राजपत्र में प्रकाशन की तारीख से लागू होंगे।

(3) ये नियम सभी समुद्रगामी भारतीय पोत और भारतीय पोत से भिन्न ऐसे पोत जो भारत के राज्य क्षेत्रीय सागर खण्ड में हो पर लागू होंगे :

1613 GI/97

परन्तु ये नियम निम्नलिखित पर लागू नहीं होंगे :—

- (i) यांत्रिक साधनों द्वारा न चलाए जाने वाले पोत;
- (ii) अधिनियम के भाग के अधीन रजिस्ट्रीकृत चलते पोत;
- (iii) अधिनियम के भाग XV क के अधीन रजिस्ट्रीकृत मत्स्य जलयान;
- (iv) क्रीडा नौकाएं;
- (v) ऐसी पोत जो व्यापार अथवा ऐसी संक्रियाओं में लगी हों जहां विशेष नौपरिवहन और कार्या-पालन संबंधी अपेक्षाओं के लिए तथा पोत परिवहन महानिदेशक द्वारा यथा अनुमोदित सेतु और नौपरिवहन संबंधी उपकरणों की व्यवस्था की गई हो।

2. परिभाषाएं :—

इन नियमों में जब तक संदर्भ से अन्यथा अपेक्षित न हो;

(क) “अधिनियम” से वाणिज्य पोत परिवहन अधिनियम 1958 (1958 का 44) अभिप्रेत है;

(ख) “अनुमोदित” से पोत परिवहन महानिदेशक द्वारा अनुमोदित अभिप्रेत है;

(ग) “स्वचालित रडार आलेखन सहाध्य” (ए आर पी ए) से वह रडार अभिप्रेत है जिसमें लक्ष्यों की प्राप्ति तथा आलेखन के लिए और सुसंगत अन्तर्राष्ट्रीय समुद्री संगठन मानकों का अनुपालन करने के लिए स्वचालित साधनों की व्यवस्था हो।

(घ) “सेतु” से अभिप्रेत उत क्षेत्र से है जिसमें नौपरिवहन और पोत का नियंत्रण किया जाता है और इसमें हाउस चार्ट कक्ष तथा सुसंगत अन्तर्राष्ट्रीय समुद्री संगठन मानकों के अनुपालन करने से संबंधित सेतु खण्ड भी सम्मिलित है।

(ङ) “टक्कर विनियमों” से अभिप्रेत है वाणिज्य पोत परिवहन (समुद्र में टक्करों का निवारण) विनियम 1975;

(च) पोत के संबंध में "निमित्त" से अभिप्रेत है निर्माण की वह अवस्था जहां :—

- (i) कील लगा दिया गया है; अथवा
- (ii) किसी विशिष्ट पोत के संबंध में पहचाने जाने योग्य सन्निर्माण आरम्भ हो गया है; या
- (iii) उस पोत का समुच्चय आरम्भ कर दिया गया है जिसमें कम से कम 50 टन अथवा सभी संरचनात्मक सामग्री के अनुमानित परिमाण का 1% या भी कम हो, समाविष्ट हो।

(छ) "प्रतिश्वानि गम्भीरता मापी युक्ति" से अभिप्रेत है जल की गहराई मापने में और सुसंगत अन्तर्राष्ट्रीय संगठन मानकों की प्राप्ताओं का अनुपालन करने के लिए प्रयुक्त उपकरण।

(ज) "आपाती स्टीयरिंग स्थिति" से अभिप्रेत है, पोत पर वह स्थिति जहां में नौपरिवहन और स्टीयरिंग गियर उपकरण के बीच स्टीयरिंग गियर के प्रचालन के लिए प्रयुक्त प्रेषण प्रणाली के खराब हो जाने की स्थिति में जलयान को स्टीयर किया जा सकता है।

(झ) "धूर्णक्ष स्थायीदिकसूचक" से अभिप्रेत है विज्ञा बताने वाले वह उपकरण जिसमें धूर्णक्ष स्थायी के सिद्धान्त का उपयोग किया जाता है और सुसंगत अन्तर्राष्ट्रीय समुद्री संगठन मानकों की अपेक्षाओं का अनुपालन किया जाता है।

(ञ) "अन्तर्राष्ट्रीय समुद्री संगठन मानकों" से अभिप्रेत है अन्तर्राष्ट्रीय समुद्री संगठन की सभी द्वारा अनुमोदित और प्रकाशित तथा समय-समय पर यथा संशोधित सिफारिश, मार्ग निर्देश अथवा मानक।

(ट) "अन्तर्राष्ट्रीय संकेत कोड" से अभिप्रेत है सुरक्षा, आपाती और संकेत संदेशों के प्रेषण के लिए प्रयुक्त और अन्तर्राष्ट्रीय समुद्री संगठन द्वारा अनुमोदित संकेत कोड।

(ठ) "चुम्बकीय दिकसूचक" से अभिप्रेत है वह उपकरण जो सुसंगत अन्तर्राष्ट्रीय समुद्री संगठन मानकों की अपेक्षाएं पूरी करता हो।

(ड) "वाणिज्य पोत खोज और बचाव नियम पुस्तक" से अभिप्रेत है समुद्र में पोतों की खोज और बचाव संक्रियाओं के लिए मार्गदर्शन हेतु अन्तर्राष्ट्रीय समुद्री संगठन द्वारा प्रकाशित नियम पुस्तक।

(ड) "मीन" से अभिप्रेत है 1.853.144 मीटर के एक नौ समुद्री मील।

(ण) "तापिकों के लिए सूचनाओं" से अभिप्रेत है भारत सरकार के नुदय जल सर्वेक्षक द्वारा प्रकाशित सूचनाएं। इसमें नौसेना क्षेत्र संबंधी चेतावनियां और वायिक सूचनाएं भी सम्मिलित है।

(त) "रेडार संस्थापन" से अभिप्रेत है ऐसा संस्थान जो टाकरो में उनके बचाव तथा नौपरिवहन और सुसंगत अन्तर्राष्ट्रीय समुद्री संगठन मानकों का अनुपालन करने के लिए प्रयुक्त किया जाता है।

(थ) "रेडियो दिना खोज साधिव" से अभिप्रेत है आने वाले किसी रेडियो संकेत की दिशा की खोज करने और सुसंगत अन्तर्राष्ट्रीय समुद्र संगठन मानकों की अपेक्षाओं का अनुपालन करने वाले उपकरण।

(द) "रेडियो विनियम" से अभिप्रेत है अन्तर्राष्ट्रीय दूरसंचार सम्मेलन 1982 से सम्बद्ध रेडियो विनियम।

(ध) "धुमाव सूचक की दर" से अभिप्रेत है वह उपकरण जो उस दर को दर्शाता है जिस पर पोत घूमता है और जो सुसंगत अन्तर्राष्ट्रीय समुद्री संगठन मानकों की अपेक्षाओं को पूरी करता है।

(न) "मार्ग-निर्धारण प्रणाली" से अभिप्रेत है एक अथवा एक से अधिक मार्ग या मार्ग-निर्धारण उपायों की प्रणाली जिसका उद्देश्य टक्करों और उनके भयंस्त हो जाने के जोखिम को कम करना। इसमें यातायात पृथक्करण स्कीम, द्विमार्गीपथ, सिफारिश किए गए पथ, बचाए जाने वाले क्षेत्र तटवर्ती यातायात क्षेत्र, चक्करदार मार्ग, ऐहतियाती क्षेत्र और अन्तर्राष्ट्रीय समुद्री संगठन द्वारा स्थापित गहरे जलमार्ग सम्मिलित है।

(प) "अनुसूची" से अभिप्रेत है इन नियमों की अनुसूची।

(फ) "गति और दूरी सूचक" से अभिप्रेत है वह उपकरण जो जलयान की गति और समुद्र में पोत द्वारा तय की गई दूरी को बताता और सुसंगत अन्तर्राष्ट्रीय समुद्री संगठन के मानकों की अपेक्षाओं को पूरा करता है।

भाग 1

नौपरिवहन और सुरक्षासंबंधी संसूचना

3 संसूचना :—

(1) सभी नौपरिवहन और सुरक्षा संबंधी संसूचना निम्नलिखित में से किसी एक अथवा एक से अधिक विधियों का उपयोग करके किये जाएंगे।

(क) जब रेडियो टेलीग्राफी अथवा अंकीय चयनात्मक आवाहक सुविधा सहित अथवा रहित रेडियो टेलीफोनों अथवा संकीर्ण बैंड प्रत्यक्ष सुदृग प्रणाली का उपयोग किया जा रहा हो तो रेडियो विनियमों में विनिर्दिष्ट प्रक्रिया अथवा जब उपग्रह आधारित प्रणाली का उपयोग किया जा रहा हो तो अन्तर्राष्ट्रीय समुद्री संगठन द्वारा विनिर्दिष्ट प्रक्रिया।

(ख) जब भाषा संबंधी कठिनाई अनुभव की जा रही हो तो अन्तर्राष्ट्रीय संकेत कोड में विहित कोड।

(ग) जब अंग्रेजी भाषा में टेलीफोन द्वारा संसूचित किया जा रहा हो तो मानक समुद्री नौपरिवहन शब्दावली।

(2) नौपरिवहन और सुरक्षा संबंधी सूचना के प्रयोजनार्थ वाणिज्य पोत परिवहन (रेडियो) नियम, 1983 की अपेक्षाओं के अतिरिक्त 150 टन सकल टनभार वाले और इससे अधिक टनभार वाले प्रत्येक पोत में निम्नलिखित होना चाहिए:—

(क) अन्तर्राष्ट्रीय कोड पताकाओं का एक सेट,

(ख) अन्तर्राष्ट्रीय कोड संकेत,

(ग) मानक समुद्री नौपरिवहन शब्दावली से संबंधित अन्तर्राष्ट्रीय समुद्री संगठन के प्रकाशन।

(घ) सुसंगत अन्तर्राष्ट्रीय समुद्री संगठन आने की अपेक्षाओं को पूरा करने वाला संकेतन लैम्प।

(ङ) टक्कर विनियमों के उपाखण्ड में विनिर्दिष्ट संकेत संकेतों को सूचित करने के साधन।

(3) जब भी किसी सूचना में कोई तारीख व समय उपदर्शित किया जाना हो, वह सर्वव्यापी भूमित्वित समय (यू.टी.सी०) में उपदर्शित किया जाएगा।

4. संकेत संदेश :—

(1) जब भी किसी जहाज का मास्टर इस निष्कर्ष पर पहुंच जाए कि उसका जहाज ऐसे सन्निकट संकेत में है, जिसके कारण जहाज या किसी व्यक्ति के जीवन की हानि हो सकती है तो वह अपनी संचार प्रणाली की पहुंच के भीतर सभी पोतों और तटीय केन्द्रों को सरल भाषा में (अधिमानीत: अंग्रेजी में) संकेत संदेश भेजेगा।

(2) ऐसे संदेश से पूर्व “संकेत” उपदर्शित करने वाला समुचित संकेत जोड़ कर संदेश भेजा जाएगा और रेडियो विनियमों में विहित प्रक्रियाओं के उपयोग से उसे प्रेषित किया जाएगा।

(3) ऐसे संदेश भेजते समय इसमें कम से कम निम्नलिखित सूचनाएं अवश्य सम्मिलित की जाएगी:—

(क) तारीख एवं समय जब संकेत दिया गया।

(ख) पोत की अवस्थिति ;

(ग) संकेत उत्पन्न करने वाली परिस्थितियाँ, और

(घ) यदि पोत का त्याग करना है तो बचाव नौकाओं की प्राप्यता तथा मौसम की विद्यमान दशाएं।

(4) प्रत्येक पोत का मास्टर जो पोत का त्याग करने का आदेश देता है, वाणिज्यिक पोत परिवहन (रेडियो) नियम 1983 के अन्तर्गत उपबंधित स्वचालित की गई युक्ति तथा वाणिज्यिक पोत परिवहन (प्राण रक्षक साधन) नियम, 1991 की अपेक्षाओं के अनुसार आपातकालीन स्थिति उपदर्शित करने वाले रेडियो ब्रीक को सक्रिय करने का भी आदेश देगा।

5. अत्यावश्यकता संदेश :—

(1) जब भी किसी पोत के मास्टर के पास यह विश्वास करने के लिए कारण है कि उसका पोत या पोत

पर के किसी व्यक्ति का जीवन संकेत में है और तट केन्द्रों तथा अन्य पोतों को सतर्क करने की आवश्यकता है, परन्तु संकेत इतना अधिक नहीं है कि जहाज का त्याग या किसी प्रकार की तत्काल आवश्यकता अपेक्षित होती। वह एक “अत्यावश्यकता संदेश” भेजेगा। इस प्रकार का संकेत, जहां भी व्यवहार्य हो, किसी विशिष्ट तट रेडियो केन्द्र या किसी ज्ञात निकटवर्ती पोत को प्रेषित किया जाएगा। इस प्रकार के संकेत का तब भी प्रयोग किया जा सकता है, जब किसी पोत का मास्टर यह चेतावनी देता है कि परिस्थितियाँ ऐसी हैं कि उसके लिए यह आवश्यक हो गया है कि वह कुछ समय पश्चात् संकेत संदेश भेजे। तथापि, ऐसे मामलों में, संकेत किसी विशिष्ट केन्द्र को संबोधित करने की आवश्यकता नहीं है, परन्तु परिस्थितियों को स्पष्ट रूप से उपदर्शित किया जाना चाहिए।

(2) इस प्रकार के संदेश से पूर्व “अत्यावश्यकता” उपदर्शित करने वाला समुचित कोड जोड़ा जाना चाहिए और रेडियो विनियमों में विहित प्रक्रिया का प्रयोग करते हुए, उनका प्रसारण किया जाना चाहिए।

(3) इस प्रकार के संदेश भेजते समय, उनमें कम से कम निम्नलिखित सूचना अवश्य सम्मिलित होनी चाहिए :—

(1) समय, तारीख तथा पोत की अवस्थिति ;

(2) पोत का जल-मार्ग, गति एवं मूल गंतव्य स्थान ;

(3) यथाव्यवहार्य व्यौरों सहित पोत पर उत्पन्न समस्या की प्रकृति।

(4) क्या किसी प्रकार की सहायता की आवश्यकता पड़ सकती है और यदि हां, तो इस प्रकार की सहायता की प्रकृति ;

(5) क्या पोत की किसी निकटवर्ती पतन की ओर मोड़ दिया गया है और यदि हां, तो बन्दरगाह का नाम और बन्दरगाह पर पहुंचने की संभावित तारीख तथा समय, और

(6) इस प्रकार की प्रतिकूल स्थिति को नियंत्रित करने के लिए किए गए प्रयास तथा ऐसे प्रयासों के परिणामों का व्यौरा ;

(4) उपनियम (1) के अनुपालन में संदेश भेजने के पश्चात् यदि व्यवहार्य हो, तो पोत का मास्टर प्रत्येक घंटे के पश्चात् पुनः संदेश भेजेगा परन्तु किसी भी दशा में यह अन्तराल तीन घंटे से अधिक नहीं होगा। इस प्रकार के संदेशों में कम से कम निम्नलिखित सूचना होगी :—

(1) समय, तारीख तथा जहाज की स्थिति ;

(2) जहाज का जलमार्ग तथा गति ;

(3) जहाज पर स्थिति में परिवर्तन, यदि कोई हो ;

(5) यदि किसी पोत का मास्टर जिसने उप-नियम

(1) के अनुपालन में कोई संदेश भेज दिया है इस निष्कर्ष पर पहुंचता है कि पोत या पोत कि किसी भी व्यक्ति के जीवन को अब कोई खतरा नहीं है अथवा एहतियाती कार्रवाई करने की आवश्यकता नहीं है अथवा यदि पोत पत्तन पर पहुंच गया है, तो वह तट रेडियो केन्द्र तथा उस क्षेत्र में स्थित पोतों को तुरन्त उस "अत्यावश्यकता" संदेश को निरस्त करने का संदेश भेजेगा।

6. सुरक्षा संबंधी संदेश :—

(1) जब किसी पोत के मास्टर को नीचे दी गई परिस्थितियों का सामना करना पड़ जाए :—

- (1) बर्फ;
- (2) त्यक्त पोत;
- (3) तूफान या उष्णकटिबन्धीय परिक्रामी तूफान या मध्याक्षांश दाब,
- (4) 68 कि. मी./प्रति घंटा या अधिक की गति से चलने वाली हवाओं के साथ उपशीतक वायु तापमान जिसके कारण जहाज के ढांचे पर बर्फ जमा हो जाए।
- (5) 95 कि. मी./प्रति घंटा या अधिक की गति से चलने वाली हवाएं जिनके संबंध में तूफान की कोई चेतावनी प्राप्त नहीं हुई, या
- (6) नौपरिवहन को पहुंचने वाला कोई अन्य प्रत्यक्ष खतरा तो वह उसके पास उपलब्ध सभी संभव साधनों से निकटवर्ती पोतों तथा निकटतम तट रेडियो केन्द्र को जिससे वह सम्प्रेषण स्थापित कर सकता है "सुरक्षा" संदेश इस अनुरोध के साथ भेजेगा कि उसे समुचित प्राधिकारी को पुनः प्रसारित कर दिया जाए।

(2) ऐसे संदेश से पहले "सुरक्षा" उपवांशित करने वाला समुचित कोड जोड़ कर उसे अंग्रेजी में सरल भाषा में या अन्तर्राष्ट्रीय संकेत कोड के माध्यम से अथवा रेडियो विनियमों में विहित प्रक्रियाओं का प्रयोग करते हुए मौसम विज्ञान संबंधी मौसम कोड द्वारा प्रसारित किया जाना चाहिए।

(3) जब इस प्रकार के संदेश भेजे जाएं तो उनमें कम-से-कम निम्नलिखित सूचना सम्मिलित की जाएगी—

(क) बर्फ त्यक्त पोत या नौपरिवहन को किसी अन्य प्रत्यक्ष खतरे के मामले में :—

- (1) देखी गई बर्फ त्यक्त पोत या खतरे का प्रकार
- (2) खतरे की अद्यतन स्थिति
- (3) अद्यतन देखे गए खतरे का समय तथा तारीख, और

(4) बहाव की गति व दिशा, यदि कोई हो,

(ख) उष्ण कटिबन्धीय परिक्रामी तूफान या मध्य-क्षांश दाब के मामले में :—

- (1) एक विवरण जिसमें यह बताया गया हो कि पोत तूफान या दाब से जूझ चुका है अथवा पोत के निकटवर्ती क्षेत्र में तूफान या दाब उत्पन्न हो रहा है अथवा तूफान या दाब मौजूद है—
- (2) देखे जाने के समय पोत की अवस्थिति, समय तथा तारीख,
- (3) हैक्टोपास्कल (एच पी ए) में संशोधित किया गया वायुदाबमापीय दाब।
- (4) पिछले 3 घंटों के दौरान वायुदाब प्रवृत्ति।
- (5) हवा की सही दिशा तथा वेग।
- (6) समुद्र की स्थिति (अत्यल्प तरंगित शान्त प्रक्षुब्ध या खुला सागर)।
- (7) महा तरंग की ऊंचाई (हल्की मध्यम ऊंची) जहां से वे लहरें आ रही हैं, उनकी सही दिशा, अवधि एवं लम्बाई (छोटी औसत, लम्बी)।
- (8) पोत का वास्तविक जल मार्ग तथा गति
- (9) पिछले 3 घंटों के दौरान वर्षा का स्वरूप तथा सघनता (हल्की एक-एक कर होने वाली अनवरत) और दृश्यता (अच्छी, मध्यम, खराब)।
- (10) आकाश में छाए हुए बादलों का स्वरूप तथा विस्तार (नीलाआकाश अंशतः मेघाच्छादित पूर्णतः बादलों से घिरा हुआ) और

(11) हवा तथा समुद्र का तापमान।

(ग) 95 कि. मी. प्रति घंटा या अधिक गति से चलने वाली हवाओं के मामले में, जिसके लिए तूफान संबंधी कोई चेतावनी प्राप्त नहीं हुई है। संदेश में इस उप-नियम के खण्ड (ख) में दी गई के समरूप सूचना होगी।

(घ) 68 कि. मी. प्रति घंटा या अधिक की गति से चलने वाली हवाओं के साथ उपशीतक वायु मापमान जिसके कारण पोत के ढांचे पर बर्फ जमा हो जाए :—

- (i) देखे जाने के समय पोत की अवस्थिति, तारीख तथा समय
- (ii) हवा तथा समुद्र का तापमान, और
- (iii) हवा का वेग तथा दिशा।

(4) जब भी किसी पोत का मास्टर उप नियम (3) के यथास्थिति खण्ड (ख) या खण्ड (ग) का अनुपालन करते हुए सुरक्षा संबंधी संदेश भेजता है तो वह और प्रेषण करके उस संदेश को यदि संभव हो तो प्रत्येक घंटे बाद प्रसारित करेगा। जब तक कि उसका पोत तूफान या बाढ़ से प्रभावित रहे वह किसी भी स्थिति में इस प्रकार के प्रेषण की रिपोर्ट करने में तीन घंटे से अधिक की समयावधि का अन्तराल नहीं रखेगा।

(5) किसी भी पोत के मास्टर को इस नियम के अनुसार प्रसारित संदेश प्राप्त होने पर अत्यधिक सावधानी से आगे बढ़ना चाहिए तथा जब भी आवश्यक हो जल मार्ग या पोत की गति में परिवर्तन कर देना चाहिए, जिससे कि रिपोर्ट किए गए संकट से बचा कर नौपरिवहन किया जा सके। बर्फ जमने की सूचना दी जाए तो कप्तान हल्की गति से आगे बढ़ेगा तथा बर्फ की मौजूदगी का पता लगाने के लिए सभी संभव साधनों का उपयोग करेगा और सावधानीपूर्वक नौपरिवहन करेगा।

7. "संकट" या "अत्यावश्यकता" संदेश प्राप्त होने पर की जाने वाली कार्रवाई:

(1) नियम 4 या 5 के अनुसार प्रसारित संदेश प्राप्त होने पर पोत का मास्टर, स्वयं के जहाज की स्थिति, जल-मार्ग, गति तथा गंतव्य स्थान पर का व्यौरा देने हुए संदेश प्राप्त होने की तुरन्त पुष्टि करेगा।

(2) जहां संदेश देने वाले पोत द्वारा सहायता की संभाव्य अपेक्षा का संकेत दिया गया हो, संदेश प्राप्तकर्ता पोत के मास्टर द्वारा अधिनियम की धारा 355 अथवा 355-क के उपबन्धों के अधीन इस बात का संकेत दिया जायेगा कि क्या वह ऐसी सहायता प्रदान करने की स्थिति में है और उसके पास इस प्रयोजन के लिये क्या सुविधायें उपलब्ध हैं।

(3) उप नियम (1) और (2) में विहित किये गये अनुसार सूचना संसूचित करने के पश्चात् संदेश प्राप्तकर्ता पोत का मास्टर इस बात का प्रबन्ध करेगा कि पारस्परिक सहमति से तय किये गये समय अन्तरालों पर संदेश प्राप्त किये जायें।

(4) जहां "अत्यावश्यकता" संदेश अथवा अत्यावश्यकता संदेश के उपरान्त उमे अद्यतन बनाने के लिये प्राप्त किसी संदेश के पश्चात्, प्राप्तकर्ता पोत के मास्टर द्वारा और कोई संदेश प्राप्त नहीं किया जाता और उसके पास यह विश्वास करने का कारण हो कि संदेश देने वाले पोत में स्थिति बिगड़ गई है तो वह सबसे नजदीकी बचाव समन्वयन केन्द्र अथवा समुद्र तट रेडियो स्टेशन को सभी उपलब्ध सूचनायें देते हुए उपयुक्त संदेश भेजेगा और ऐसे केन्द्र एवं रेडियो स्टेशन द्वारा दी गई सलाह से मार्गदर्शित होगा।

8. प्रत्येक पोत द्वारा, अधिनियम की धारा 214 के अन्तर्गत सरकारी लाग धुक में की जाने वाली प्रविष्टियों के अलावा निम्नलिखित प्रविष्टियां भी की जायेंगी :—

(क) पोत द्वारा भेजे गये प्रत्येक सुरक्षा, अत्यावश्यक अथवा संकट संदेश एवं परिस्थितियां जिनके कारण उक्त संदेश भेजने पड़े;

(ख) पोत द्वारा प्राप्त की प्रत्येक अत्यावश्यकता अथवा संकट संदेश एवं उस पर की गई कार्रवाई;

(ग) नियम 11 के उप-नियम (3) के उपबन्ध के अधीन सूचित की गई प्रत्येक घटना।

9. खोज एवं बचाव कार्य:—

अधिनियम की धारा 355 के अनुपालन में संकट में पड़े किसी जनयान अथवा वायुयान की सहायता के लिये जब खोज एवं बचाव कार्य दिया जाना अपेक्षित हो तो प्रत्येक पोत द्वारा, वाणिज्यिक पोत खोज एवं बचाव नियम पुस्तक के उपबन्धों एवं संबंधित बचाव समन्वयन केन्द्र द्वारा दिये गये अनुदेशों के अनुसार कार्य किया जायेगा।

10. वाणिज्यिक पोत रिपोर्टिंग प्रणाली:—

(1) बंगाल की खाड़ी, अरबसागर और हिन्द महासागर में 300 दक्षिण के उत्तर में के सभी भारतीय पोतों द्वारा, नाविकों को दिये गये वार्षिक नोटिस में वर्णित के अनुसार दिन में एक बार अपनी स्थिति के बारे में भारतीय पोत स्थिति एवं सूचना रिपोर्टिंग तंत्र (इंडियन शिप पोजीशन एण्ड इन्फार्मेशन रिपोर्टिंग सिस्टम) इन्सपायरर्स को सूचना दी जायेगी।

(2) इस नियम के उपनियम (1) में विनिर्दिष्ट क्षेत्र में बाहर, एक पत्तन से दूसरे पत्तन के लिये समुद्री यात्रा पर जाने वाले प्रत्येक भारतीय पोत द्वारा अपनी स्थिति के बारे में दिन में एक बार, अन्तर्राष्ट्रीय समुद्री खोज एवं बचाव अभिसमय (कन्वेंशन) 1969 के उपबन्धों के अन्तर्गत आने वाले क्षेत्रों के लिये स्थापित पोत रिपोर्टिंग तंत्र (शिप रिपोर्टिंग प्रणाली) को सूचना दी जायेगी। ऐसी क्षेत्रों में में जहां ऐसा कोई तंत्र उपलब्ध नहीं है, प्रत्येक भारतीय पोत द्वारा यथासंभव अपनी स्थिति के बारे में सूचना इन्सपायरर्स अथवा स्वामियों को दी जायेगी।

(3) प्रत्येक पोत, समुद्र में कोई हानिकारक पदार्थ या समुद्र में प्रदूषण निवारण पर अन्तर्राष्ट्रीय अभिसमय 1973 अथवा इसके 1978 के प्रोटोकाल के उल्लंघन में किसी पोत को हानिकारक पदार्थ छोड़ने हुए देखने पर इसकी रिपोर्ट करेगा। ऐसी रिपोर्ट इन्सपायरर्स में विनिर्दिष्ट रूपविधाम में दी जायेगी एवं इसका संप्रेषण निकटतम समुद्रतट रेडियो स्टेशन अथवा बचाव समन्वयन केन्द्र को किया जायेगा।

11. पथ-निर्धारण प्रणाली:—

(1) प्रत्येक पोत द्वारा जहाँ कहीं भी पथ निर्धारण प्रणाली स्थापित हो उसका अनुसरण किया जायेगा।

(2) यदि पोत का मास्टर अपने नियंत्रण के बाहर की, परिस्थितियों के कारण पूरी तरह से पथ निर्धारण प्रणाली द्वारा निर्देशित रूप में, पोत चलाने में असमर्थ हो तो स्थिति को उपदर्शित करने के लिये, "सुरक्षा" संदेश देने के साथ-साथ उस क्षेत्र में नौपरिवहन करने वाले सभी पोतों की सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिये प्रत्येक पूर्वावधानी बरती जायेगी। ऐसी प्रत्येक घटना को सरकारी लाग वुक में दर्ज किया जायेगा एवं इसकी सूचना यथा शीघ्र प्रधान अधिकारी को दी जायेगी।

(3) समुचित प्राधिकारी अथवा पतन राज्य द्वारा रिपोर्ट की गई पथ निर्धारण प्रणाली के प्रत्येक अतिक्रमण की आह्वे इसकी रिपोर्ट मास्टर द्वारा की गई हो अथवा नहीं, प्रधान अधिकारी द्वारा जांच-पड़ताल, यदि कोई हो तो को भी ध्यान में रखेगा। ऐसी प्रत्येक जांच-पड़ताल की रिपोर्ट महानिदेशक को प्रस्तुत की जायेगी।

भाग—2

प्रहरी संगठन

12. साधारण :—

जब तक अन्तस्था विनिर्दिष्ट न किया गया हो यह भाग अधिनियम के भाग 5 के अन्तर्गत रजिस्ट्रीकृत सभी समुद्र-गामी पोतों को लागू होगा।

13. पुल डिजाइन :—

(1) प्रत्येक पोत में एक सेतु व्यवस्था की जाएगी।

(2) पोत को पहली बार भारतीय रजिस्ट्री के अन्तर्गत रजिस्ट्रीकृत करते समय सेतु के अभिव्यास का निरीक्षण और अनुमोदन किया जायेगा। इन नियमों के प्रवृत्त होने के समय यदि कोई पोत पहले से ही भारतीय पोत के रूप से रजिस्ट्रीकृत हो तो उसका निरीक्षण किया जायेगा और यथासंभव इन नियमों का अनुपालन सुनिश्चित किया जायेगा। ऐसे पोत में संरचनात्मक परिवर्तन करने के लिए तभी कहा जायेगा जब इससे नौपरिवहन सुरक्षा पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ने की संभावना हो।

14. पोतों पर कार्मिकों की तैनाती :—

(1) प्रत्येक पोत में, अधिनियम की धारा 76 के अधीन यथा अवैधित प्रमाणपत्रित अधिकारी होंगे।

(2) प्रत्येक पोत को प्रथम अनुसूची में विहित प्रकाश में एक कार्मिक तैनाती प्रमाणपत्र जारी किया जायेगा। ऐसा प्रत्येक प्रमाण-पत्र अधिकतम 5 वर्ष की अवधि के लिए वैध रहेगा।

15. नौपरिवहन पहरा :—

(1) समुद्र में सदैव सुरक्षित नौपरिवहन के लिए पहरा रखा जायेगा।

(2) पहरा की संरचना ऐसी होगी जिससे यह सुनिश्चित हो सके कि प्रहरी कार्मिक सभी संभव आपात स्थितियों से निपट सकेंगे। किसी भी स्थिति में सदैव सेतु पर एक कर्णधार और एक प्रहरी अधिकारी मौजूद रहेगा। पहरा देने समय, नौपरिवहन प्रहरी अधिकारी सुसंगत आई. एम.ओ. मानक में यथा विनिर्दिष्ट नौपरिवहन पहरा में पालन किए जाने वाले मूल सिद्धान्त का पालन करेंगे।

16. इंजन कक्ष पहरा :—

(1) समुद्र में सदैव इंजीनियरी संबंधी सुरक्षा पहरा रखा जायेगा।

(2) पहरा की संरचना ऐसी होगी जिससे यह सुनिश्चित हो सके कि प्रहरी कार्मिक सभी संभव आपात स्थितियों से निपट सकते हैं। प्रहरी इंजीनियर सुसंगत 'आई.एम.ओ.' मानक में यथा विनिर्दिष्ट इंजीनियरी पहरा में पालन किये जाने वाले मूल सिद्धान्त का पालन करेंगे।

17. युक्ति चालन क्षमता :—

प्रत्येक पोत को उसकी युक्ति पालन चालन क्षमता के संबंध में सूचना प्रदान की जायेगी। विशेषतया निम्न-लिखित सूचना पुल पर स्पष्ट रूप से दर्शित की जायेगी :—

(क) इंजनों का प्रकार और नियंत्रण का तरीका (अर्थात् सेतु नियंत्रण तार इत्यादि)।

(ख) एक सारणी जिसमें पाली में इसकी गति एवं नौदक के प्रति मिनट परिक्रमण के बीच का संबंध दर्शाया गया हो।

(ग) इंजनों का प्रति मिनट परिक्रमण जिस पर मंद आधी एवं पूर्ण परम्परागत इंजन गतियों पर आगे एवं पीछे इसे निर्धारित किया गया हो।

(घ) व्यौरों सहित वर्तन चक्र दर्शाने वाला एक रेखाचित्र।

(ङ) पूर्ण रूप से मंदा द्वारा एवं स्थिरिक भार में होने की स्थिति में रुकने की अनुमानित दूरी तथा पूर्ण एवं आधी गति पर इसमें लिया गया समय।

(च) सहाय्य रोकने संबंधी परीक्षणों का व्यौरा।

(छ) रडार ओवर को दो मीटरों की सहाय्यता में हाई ओवर के एक तरफ और केवल एम मीटर से हाई ओवर के दूसरी तरफ रखने में लगने वाला समय।

18 नाविक प्रकाशन :—

(1) प्रत्येक पोत में, आशयित समुद्री यात्रा के लिए, तटीय नौपरिवहन के लिये उपलब्ध अधिकतम मापमान चार्ट सहित पर्याप्त एवं अद्यतन चार्ट नौ-यात्रा संबंधी दिशा निर्देश बत्तियों की सूची, नाविकों को सूचनाएं, ज्वारभाटा सारणियां एवं अन्य नाविक प्रकाशन होंगे।

(2) आशयित उन समुद्री यात्राओं की सीमा को जिनके लिये नाविक प्रकाशन पर्याप्त है, सुरक्षा उपकरण के लिये अभिलेख में उपदर्शित किया जायेगा।

(3) यदि किसी संकट या ऐसे ही अन्य कारणों से किसी जहाज की आशयित समुद्री यात्रा की सीमाओं को बदलना अपेक्षित हो तो मास्टर ऐसा कर सकता है परन्तु ऐसा करने से पोत की सुरक्षा को कोई खतरा नहीं होना चाहिए।

(4) यदि किसी पत्तन पर अद्यतन नाविक प्रकाशन उपलब्ध नहीं है तो प्रधान अधिकारी जलयान को अगले पत्तन को जहां ऐसे प्रकाशन उपलब्ध हैं जाने की अनुमति केवल तभी देगा जब ऐसा करना सुरक्षित हो।

19 सेतु प्रक्रिया :—

(1) प्रत्येक पोत का मास्टर सुरक्षित पहरा रखने के लिए स्थायी आदेश तैयार करेगा। ऐसे स्थायी आदेशों में निम्नलिखित सम्मिलित होंगे :—

(क) मुख्य इंजन की उपलब्धता के संबंध में अनुदेश।

(ख) सुरक्षित पहरा रखने के संबंध में पालन की जाने वाली प्रक्रिया;

(ग) पहरे की संरचना और वे परिस्थितियां जिनमें परिवर्तन किया जा सकता है -

(घ) पत्तन नयन जल-क्षेत्र, प्रतिबंधित जल-क्षेत्र, या अधिक यातायात वाले और अल्प दृश्यता वाले क्षेत्रों में नौपरिवहन के समय पालन की जाने वाली प्रक्रिया—

(ङ) अल्प दृश्यता या मौसम खराब होने पर पालन की जाने वाली प्रक्रिया; और

(च) संदेह होने पर किसी भी समय मास्टर को बुलाने के लिये अनुदेश।

(2) प्रत्येक पोत का मास्टर यह सुनिश्चित करेगा कि आशयित यात्रा के लिये यात्रा-योजना तैयार की जाये, उसकी संवीक्षा की जाए और जलयान की यात्रा के दौरान प्रहरी अधिकारी को वह सदैव उपलब्ध हो। ऐसी योजना को यात्रा के दौरान मानीटर किया जाएगा और जहां आवश्यक हो, अद्यतन बनाया जायेगा। यह यात्रा योजना चार्ट पर या ऐसी ही किसी अन्य दस्तावेज में निम्न-लिखित के संबंध में सीमित नहीं होगी :—

(क) सूर्योदय और सूर्यास्त का समय;

(ख) यदि समुद्र तटीय जल क्षेत्र में हो, तो पूर्ण ज्वार या न्यून ज्वार का अनुमानित समय।

(ग) विभिन्न जलमार्गों पर यात्रा की अनुमानित दूरी और यदि मार्ग परिवर्तन की योजना बतायी गई है तो उन स्थानों पर पहुंचने का अनुमानित समय;

(घ) जोखिम और छिछने जल वाले स्थान जिनके संबंध में विशेष ध्यान दिए जाने की आवश्यकता है;

(ङ) उन क्षेत्रों का विवरण जहां पोत को नौ-परिवहन स्वयं करना चाहता है;

(च) वे निविष्ट मार्ग जिनका प्रयोग अल्प दृश्यता में किया जाएगा और रडार तथा अन्य नौपरिवहन सहायकों का प्रयोग;

(छ) यदि कोई नौपरिवहन उपकरण अपनी सामान्य क्षमता से कम स्तर पर कार्य कर रहा है तो उसका विवरण।

(ज) अधिक यातायात वाले क्षेत्र और ऐसे क्षेत्र जहां से बड़ी संख्या में उत्सव जलयानों या चलत जलयानों के गुजरने की संभावना हो सकती है और प्रबल धाराओं वाले क्षेत्र;

(झ) पहरे के लिए अतिरिक्त सहायता मांगने की प्रक्रिया।

(3) नौपरिवहन उपकरणों के प्रयोग से संबंधित नियम पुस्तकें और अन्य सूचना प्रहरी अधिकारियों के उपयोग के लिए सेतु पर उपलब्ध होगी।

(4) (क) अपने कर्तव्यों का पालन में प्रहरी अधिकारी, पोत के सुरक्षित नौपरिवहन के लिए हर समय जिम्मेदार होगा।

(ख) जहां आवश्यक हो, प्रहरी अधिकारी अन्य अधिकारी को अपने नौपरिवहन संबंधी कर्तव्यों में सहायता करने के लिए कहेगा। प्रहरी अधिकारी किसी भी समय मास्टर को बुलाने के लिए स्वतंत्र होगा।

(ग) यदि अन्य अधिकारी या मास्टर को सेतु पर बुलाया जाता है तो प्रहरी अधिकारी सुरक्षित नौपरिवहन के लिए तब तक जिम्मेदार बना रहेगा जब तक कि मास्टर या ऐसा अन्य अधिकारी उसे विनिर्दिष्ट रूप से यह सूचित नहीं करता है कि उसने प्रहरी की जिम्मेदारी संभाल ली है।

5(क) प्रत्येक प्रहरी अधिकारी टक्कर विनियमों का सख्ती से पालन करेगा।

(ख) यदि किसी एक पोत द्वारा उन नियमों का पालन न किए जाने के कारण, टक्कर होने की स्थिति पैदा हो जाती है, चाहे परिणामस्वरूप टक्कर हो या नहीं, ऐसी घटनाओं का ब्यौरा और दोनों पोतों की पहचान के बारे में प्रधान अधिकारी को रिपोर्ट की जाएगी जो ऐसी प्रत्येक रिपोर्ट की जांच करेगा और अपने निष्कर्ष महा-निदेशक को भेजेगा।

(6) प्रत्येक प्रहरी अधिकारी, अच्छी तरह पहरा देगा जिसमें निम्नलिखित सम्मिलित है :—

(क) आंख, कान खूबे रखकर सतर्कता से पहरा देना जिससे वर्तमान स्थिति पर पूरी तरह पकड़ सुनिश्चित की जा सके जिसमें हर समय पोतों की उपस्थिति, आस-पास के सीमा चिन्ह, और पोतों की स्थिति भी है ;

(ख) समीप आ रहे जलयानों का संचलन और कपास पर दिक्कतों की सूक्ष्मता से प्रेषण ;

(ग) पोत और तट बतियों की पहचान करना ;

(घ) यह सुनिश्चित करने की आवश्यकता कि आटों पायलट से या उसके बिना सही मार्ग पर चल रहे और हाथ में चलाने के समय हिल संबंधी आदेशों का सही-सही निष्पादन किया जा रहा है ;

(ङ) रडार और प्रतिध्वनि गंभीरता मापी प्रदर्शन का प्रेक्षण ; और

(च) मौसम, दृश्यता और समुद्र की स्थिति में परिवर्तन का प्रेक्षण।

(7) प्रहरियों की बदलना—

(क) भारमोचन प्रहरी अधिकारी यह सुनिश्चित करेगा कि उसके प्रहरी सदस्य अपने कर्तव्यों का निष्पादन करने में पूर्णतया सक्षम हो और विशेष रूप से उनकी आंखें रात में निगरानी करने की अभ्यस्त हों। वह तब तक प्रहरी का कार्य नहीं करेगा जब तक उसकी दृष्टि की दशाओं के लिए पूर्णतया अभ्यस्त नहीं हो जाती और वह निम्नलिखित के संबंध में स्वयं को संतुष्ट नहीं कर लेता :—

(i) जलयान-परिवहन से संबंधित स्थायी आदेश और अन्य विशेष अनुदेश ;

(ii) जलयान की स्थिति, जल-मार्ग, गति और ढुबान ;

(iii) वर्तमान और पूर्वानुमानित ज्वार धाराएं, मौसम दृश्यता और इन कारकों का जलमार्ग और नदि पर प्रभाव ;

(4) नौपरिवहन स्थिति में निम्नलिखित सम्मिलित है :—

(1) समस्त नौपरिवहन और सुरक्षा उपकरणों की प्रचालन स्थिति ;

(2) घूर्णाक्ष और चुम्बकीय कंपास की त्रुटियां ;

(3) आस-पास के क्षेत्रों में जलयानों का परिवहन ;

(4) स्थितियां और खतरे जिनमें पहरे के दौरान सामना हो सकता है ;

(5) नौदल की निकासी पर हिल, ट्रिम, जल के घनत्व और स्क्वेट के संभावित प्रभाव।

(ख) यदि प्रहरी अधिकारी के भारमुक्त होने के समय, किसी खतरे से बचने के लिए कोई व्यक्ति चालन या अन्य कार्रवाई की जा रही हो तो ऐसी कार्रवाई के पूरे होने तक प्रहरी को भार मुक्त नहीं किया जायगा।

(ग) प्रहरी अधिकारी भार मोचन अधिकारी को पहरे संबंधी कार्य नहीं सौंपेगा यदि उसके पास यह विश्वास करने का कारण हो कि भार मोचन अधिकारी में ऐसी कोई अक्षमता है जिससे वह अपने कर्तव्यों को प्रभावी रूप से नहीं कर पायेगा। ऐसे प्रत्येक मामले में पहरे संबंधी कार्य सौंपने से पहले मास्टर को सूचित किया जायेगा।

8. प्रहरी अधिकारी यह सुनिश्चित करने के लिये नियमित जांच करेगा कि :—

(क) नाविक या स्वचालित पायलट जहाज को सही मार्ग से ले जा रहा है ;

(ख) मानक कम्पास त्रुटि की जांच पहरे के दौरान कम से कम एक बार और जब संभव हो जलमार्ग में किए जाने वाले किसी बड़े परिवर्तन के पश्चात् की जानी है ;

(ग) मानक और घूर्णाक्ष कम्पासों का बार-बार मिलान किया जाता है और गजर देने वाली घड़ियों का आपस में समय मिलाया जाता है ;

(घ) स्वचालित पायलट प्रभावी रूप से पोत को चला रहा है ; और

(ङ) नौपरिवहन और सिगनाल बतियों और नौपरिवहन संबंधी अन्य उपकरण उचित रूप से कार्य कर रहे हैं ;

(9) समुद्रतटीय जल क्षेत्र में नौपरिवहन :—प्रहरी अधिकारी सभी सुसंगत नौपरिवहन संबंधी चिह्नों को सुनिश्चित पहचान करेगा। पोत की स्थिति को निश्चित अंतरालों पर निर्धारित किया जायेगा, जिनकी आपूर्ति समीपस्थ खतरे, स्थिति स्थिरीकरण प्रणाली, पोत की गति और प्राप्त अनुभव जैसे कारकों के आधार पर मास्टर के विवेकानुसार निर्धारित की जायेगी। योजनाबद्ध तरीके से लंगर डालने या पत्तन प्रवेश करने जैसे मामलों में स्थिति की निरंतर योजना बनाई जायेगी। जब भी परिस्थितियाँ अनुमात वे और विशेष रूप से जब संदेह हो, वैकल्पिक स्थिति स्थिरीकरण प्रणाली का प्रयोग करके स्थिति की जांच की जायेगी।

(10) सीमित दृश्यता:—जब सीमित दृश्यता की स्थिति उत्पन्न होती है या उत्पन्न होने का संदेह होता है तो प्रहरी अधिकारी, इंजन, सतर्कता प्रणाली, रेडार और पतवार का उचित उपयोग करने हुए टक्कर विनियमों का पालन करेगा।

(11) पत्तन नयन जल क्षेत्र :—पायलट की उपस्थिति से ही मास्टर या प्रहरी अधिकारी, सुरक्षित नौपरिवहन के प्रति अपने कर्तव्यों और बाध्यताओं से मुक्त नहीं हो जाएंगे। मास्टर और प्रहरी अधिकारी, आश्रयित मार्ग जिसमें पत्तन में लाने और घाट पर लगाने की प्रक्रिया भी है, के लिये पायलट की नौपरिवहन योजना से सुपरिचित होगा। वे पायलट, से पूरा-परा सहयोग करेंगे और जलयान की स्थिति और संचयन पर पूरा नियंत्रण बनाये रखेंगे। जलमार्ग में परिवर्तन और/या पहिये और/या इंजन विन्यास में परिवर्तन प्रहरी अधिकारी के माध्यम से प्रेषित किया जायेगा। यदि मास्टर या अधिकारी को पायलट की कार्यवाहियों या आशय पर कोई संदेह हो तो वह पायलट से इसका समाधान मांगेगा और यदि फिर भी अंका हो तो जहाँ कहीं आवश्यक हो सुधारात्मक कारवाई करेगा।

20. नौपरिवहन अभिलेख

प्रत्येक पोत का मास्टर नौपरिवहन मार्ग का वक्ष अभिलेख प्रस्तुत करने के लिये कम से कम निम्नलिखित अभिलेख रखेगा :—

- (1) कालमापी त्रुटि
- (2) मौसम रिपोर्ट
- (3) चुंबकीय दिक्चूचक विचलन
- (4) नाइट आर्डर
- (5) नाविक प्रकाशन में संशोधन
- (6) नौचालन उत्स्कर का रख-रखाव और उसका ठप्प हो जाना
- (क) दैनिक नौपरिवहन लॉग (मेटुनलॉग)

21. स्वचालित पायलट

(1) स्वचालित पायलट जहाँ कहीं भी फिट किए गए हों, सुसंगत आई. एम. ओ. मानक की अपेक्षाओं का पालन करेंगे।

(2) ऐसा प्रत्येक जलयान जिसमें स्वचालित पायलट लगा है, का नाउटर स्वचालित पायलट का लम्बे समय तक उपयोग करने रहने के पश्चात् और किसी भी स्थिति में जलयान में हस्तचालित स्टीयरिंग का प्रयोग करके जलयान के संचालन के दो घंटे पहले हस्तचालित स्टीयरिंग की जांच करवाएगा।

(3) जब अन्य पोत एक दूसरे के सामने हों तो स्वचालित पायलट की सहायता से जलमार्गों में परिवर्तन में बचा जाएगा। टक्कर विनियमों के अनुपालन में जलमार्गों में परिवर्तन केवल हस्तचालित स्टीयरिंग द्वारा किया जाएगा।

(4) अति यातायात सघनता क्षेत्रों में या सीमित दृश्यता की स्थितियों में यह सभी अन्य संकटपूर्ण परिवहन स्थितियों में, यदि स्वचालित पायलट उपयोग में हों तो यह अपेक्षित है कि तात्कालिक रूप से पोत के स्टीयरिंग का हस्तचालित नियंत्रण स्थापित किया जाए, यदि किसी मामले में ऐसी स्थिति उत्पन्न होती है तो अर्हता प्राप्त नाविक हर समय हस्तचालित स्टीयरिंग नियंत्रण करने के लिए उपलब्ध रहेंगे।

22. स्टीयरिंग गियर का प्रचालन

उन क्षेत्रों में जिनमें नौपरिवहन में विशेष सावधानी की आवश्यकता होती है और जब भी पोत का पत्तन नयन क्षेत्र या सीमित जल क्षेत्र में या अति यातायात सघनता के क्षेत्रों में या पथ निर्धारण प्रणाली में प्रयोग किया जा रहा है और जब ऐसे यूनिट समकालिक प्रचालन में समर्थ हो तो एक से अधिक स्टीयरिंग गियर पावर यूनिट प्रचालन में होंगे।

23. स्टीयरिंग गियर परीक्षण और अभ्यास

(1) प्रस्थान करने के पूर्व 12 घंटे के अन्दर पोत के स्टीयरिंग गियर की जांच की जाएगी और परीक्षण किया जाएगा। परीक्षण प्रक्रिया जहाँ लागू हों, निम्नलिखित के प्रचालन सम्मिलित होंगे :—

- (क) मुख्य स्टीयरिंग गियर;
- (ख) सहायक स्टीयरिंग गियर;
- (ग) प्रणालियों में स्टीयरिंग गियर;
- (घ) नौचालन सेतु से और साथ ही स्टीयरिंग गियर के नियंत्रण के सन्निकट की दूरस्थ स्टीयरिंग अवस्थिति में स्टीयरिंग क्षमता—
- (ङ) आपात-स्थिति में विद्युत आपूर्ति, जहाँ उपलब्ध हो;
- (च) रेडार की वास्तविक स्थिति बताने वाले रेडार एंगल सूचक;

- (छ) सेतु और दूरस्थ स्टीयरिंग अवस्थिति के सध्य संचार ;
- (ज) स्टीयरिंग गियर की विद्युत यूनिट फेल हो जाने पर बजने वाले अलार्म; और
- (झ) स्वचालित पुथवकरण व्यवस्थाएं तथा अन्य स्वचालित उपस्कर ।
- (2) (क) एक ब्लाक आकृति सहित साधारण प्रचालन अनुदेश, जिनमें दूरस्थ स्टीयरिंग गियर नियंत्रण प्रणालियों के लिए बदलता प्रक्रियाओं को दिखाया गया हो, तथा नौपरिवहन सेतु पर तथा स्टीयरिंग गियर कमांडमेंट में स्टीयरिंग गियर विद्युत यूनिटों को स्थायी रूप से दिखाया जाना चाहिए ।
- (ख) स्टीयरिंग गियर के प्रचालन और रखरखाव से संबंधित पोतों के सभी अधिकारी, पोत पर फिट होने वाली स्टीयरिंग प्रणालियों के प्रचालन की तथा एक प्रणाली को दूसरी प्रणाली में बदलने की प्रक्रियाओं से सुपरिचित होंगे ।
- (3) इस नियम के उप-नियम (1) और (2) में विहित नेमी जांचों और परीक्षणों के अतिरिक्त, आपातकालीन स्टीयरिंग प्रक्रियाओं के अभ्यास करने के लिए कम से कम तीन माह में एक बार आपातकालीन स्टीयरिंग ड्रिल कराई जाएगी ।
- (4) इन ड्रिलों में स्टीयरिंग गियर कमांडमेंट के भीतर से सीधा नियंत्रण नौपरिवहन सेतु से संसूचना प्रक्रिया तथा जहां लागू हो वहां वैकल्पिक विद्युत आपूर्तियों का प्रचालन सम्मिलित है ।
- (5) 24 घंटा में कम से कम बार-बार नियमित यात्रा पर जाने वाले प्रत्येक पोत में प्रति सप्ताह कम से कम एक बार इस नियम के उप-नियम (1) और (2) में विनिर्दिष्ट विस्तृत परीक्षण होने चाहिए । किसी भी स्थिति में प्रचालन संबंधी परीक्षण प्रस्थापन से पहले किए जाने चाहिए ।
- (6) इन नियम के उप-नियम (1) और (2) में विहित जांच और परीक्षण की तारीख और उप-नियम (4) के अंतर्गत की जाने वाली आपातकालीन स्टीयरिंग ड्रिलों की तारीख और ब्यौरे सरकारी लागू-बुक में अभिलिखित की जाएगी ।

भाग III

नौपरिवहन उपस्कर — साधारण अपेक्षाएं

24 प्रारंभिक संस्थापन —

- (1) इन नियमों द्वारा अपेक्षित किसी इलेक्ट्रानिक नौपरिवहन उपस्कर को संस्थापित करते समय प्रत्येक पोत :—
- (क) इन नियमों में विनिर्दिष्ट अपेक्षाओं के अतिरिक्त सुसंगत आई एम ओ मानक में विनिर्दिष्ट इलेक्ट्रानिक

नौपरिवहन उपस्कर की साधारण अपेक्षाओं का अनुपालन करने हुए वह उपकरण संस्थापित करेगा ।

- (ख) केवल ऐसा उपस्कर संस्थापित करेगा जिसका टाईप अनुमोदित हो परन्तु यह तब जबकि किसी अन्य प्रशासन जो कि समुद्र में जीवन सुरक्षा हेतु अन्तर्राष्ट्रीय अभिसमय 1974 का पक्षकार हो, द्वारा अनुमोदित किसी उपकरण को ऐसे उपकरण के ब्यौरे और ऐसे प्रशासन द्वारा अनुमोदित प्रमाणपत्र महानिदेशक को प्रस्तुत किए जाने पर टाईप अनुमोदन किया गया हो ।

- (ग) इन नियमों में विनिर्दिष्ट उपस्कर के प्रचालन के लिए और किसी भी बैटरी की जांच करने व उसे चार्ज करने के प्रयोजनार्थ विद्युत प्रदाय का उपयुक्त एवं दक्ष स्त्रोत उपलब्ध कराना । विद्युत ऊर्जा का स्रोत पोत की समुद्री यात्रा के दौरान हर समय उपलब्ध होगा और पोत के पत्तन पर खड़े रहने के दौरान हर उचित समय पर उपलब्ध होगा । विद्युत ऊर्जा का प्रदाय नीचे दी गई सीमा से अधिक नहीं होगा :—

- (i) प्रभावर्ती धारा (ए०सी०) — प्रदाय वोल्टता फेरफार — 10%
- (ii) द्रिष्ट धारा (डी०सी०) — प्रदाय 110 से 220 वोल्ट — 10% से 20% $2432 \pm 30\%$ से — 10%

(घ) प्रत्येक उपस्कर के लिए, निम्नलिखित बातों को पूरा करने वाले प्रचालन और नौपरिवहन नियम पुस्तक रखना :

- (i) ऐसे उपस्करों के मामले में जिनका डिजाइन ऐसा हो कि उसके घटक स्तर के दोष का पता लगाना हो और उसकी सरम्मत पोत पर ही कर पाना संभव हो, तो नियम पुस्तक में पूरे परिपथ (सर्किट) आरेख, घटक अभिव्यास और घटक अवयवों की सूची होनी चाहिए ।

- (ii) ऐसे उपस्कर के मामले में, जिसमें ऐसे जटिल (माड्यूल) हो जिनके घटकों में दोष का पता लगाना और मरम्मत करना व्यवहार्य (संभव) न हो, नियम पुस्तक में इस बात की पर्याप्त जानकारी दी जानी चाहिए कि दोष-युक्त जटिल माड्यूल की पहचान कैसे की जाए, दोष का पता कैसे लगाया जाए और कैसे बदला जाए । अन्य माड्यूलों और ऐसे जटिल घटकों के संबंध में भी माड्यूलों का होना न हो, उपर्युक्त (1) की अपेक्षाएं पूरी की जानी चाहिए ।

(ङ) दूसरी अनुसूची में विनिर्दिष्ट औजार, मयंक यंत्र और अतिरिक्त पुर्जें रखना।

(च) इन नियमों में विनिर्दिष्ट सभी नौपरिवहन उपस्करों को पर्याप्त सुरक्षित पहुंच में रखना ताकि यथावत उनका अनुरक्षण व समायोजन किया जा सके। ऐसा पहुंच मार्ग रडार और दिशा निर्धारक एंटेना के अनुरक्षण व समायोजन के लिए भी बनाया जाना चाहिए।

(2) यदि पोत ने अपना रजिस्ट्रीकरण बदलवा लिया हो और पहली बार भारतीय रजिस्ट्री प्राप्त की हो तो ऐसे पोतों में प्रयुक्त नौपरिवहन उपस्करों के संबंध में यह समझा जाएगा कि ये इन नियमों के अनुरूप हैं, परन्तु वह तब जबकि—

(क) यह उपस्कर उस प्रमाणन द्वारा स्वीकार किया गया है, जिसके अधीन पोत पहले रजिस्ट्रीकृत था, और

(ख) यह उपस्कर सुसंगत आई० एम० ओ० मानक के अनुरूप ही।

25. नौपरिवहन उपस्कर का स्थान निर्धारण करना :-

(1) ऐसी कोई भी यूनिट जिसे खुला संस्थापित करते या ऐसी किसी स्थिति में जिससे सामान्यतः नमी या जल का प्रवेश हो जाता हो, संस्थापित किए जाने के लिए अनुमोदित न किया गया हो, खुला संस्थापित नहीं की जाएगी।

(2) कोई भी नौपरिवहन या संचार उपस्कर संस्थापित करते समय पोत के चुम्बकीय दिक्सूचकों की यथार्थता की सुरक्षा की जाएगी।

(3) ऐसे उपस्कर पर या अनुमोदन प्रमाण-पत्र में वह सुरक्षित दूरी स्पष्ट रूप से निर्दिष्ट की जानी चाहिए जो किसी अनुमोदित उपस्कर और मानक एवं चुम्बकीय दिक्सूचक के बीच होनी चाहिए ताकि दिक्सूचक की यथार्थता प्रभावित न हो सके। ऐसे उपस्कर की संस्थापना के समय सुरक्षित दूरी कठोरता से बनाए रखी जाएगी।

परन्तु यह कि जब ऐसी सुरक्षित दूरी बनाए रखना व्यवहार्य न हो तो महानिदेशक उतनी कम दूरी की अनुमति दे सकते हैं जितनी से दिक्सूचक पर पड़ने वाला प्रभाव स्थायी हो और उसे दिक्सूचक के समायोजन से सही किया जा सके।

(4) उपस्कर के लिए विनिर्दिष्ट सुरक्षित दूरी में ऐसे उपस्कर के साथ संस्थापन के लिए जोड़ी जाने वाली संरचनाओं को हिसाब में नहीं लिया गया है। यदि ऐसी संरचनाएं आवश्यक हों तो सुरक्षित दूरी अवधारित करके उपस्कर को संस्थापना उतनी दूरी पर की जाएगी।

(5) उपस्कर के लिए अतिरिक्त पुर्जों के भण्डारण के लिए भी उस उपस्कर के लिए विनिर्दिष्ट सुरक्षा दूरी अपेक्षाओं का अनुपालन किया जाना चाहिए जिसके लिए अतिरिक्त पुर्जों का भण्डारण किया जाता है।

(6) (क) यदि ऐसे किसी उपस्कर से होने वाले रेडियो व्यतिकरण से रेडियो संचारण के प्रभावित होने की संभावना हो तो ऐसे उपस्कर को रेडियो संचारण प्रणाली से बिल्कुल अलग रखा जाना चाहिए।

(ख) नौपरिवहन संस्थापन से होने वाले विद्युत व्यतिकरण या मशीनी शोर से अन्य किसी उपस्कर का दक्ष चालन प्रभावित नहीं होना चाहिए।

(ग) नौपरिवहन संस्थापन से होने वाला शोर इंडिक के सदस्यों को भले हो व ड्यूटी पर लाया नहीं, विधुब्ध न करें।

(घ) नौपरिवहन उपस्कर ऐसे स्थान पर नहीं रखा जाना चाहिए जहां पर वह अत्यधिक गर्मी और/या धुएं से काम बंद हो जाए या उसके रख रखाव (अनुरक्षण) में अनावश्यक कठिनाई हो।

(ङ) एंटेना वाले नौवहन उपस्कर यावत्साध्य इस प्रकार लगाए जाने चाहिए कि संस्थापन के कार्य निष्पादन और विश्वसनीयता पर कंपनी का प्रतिकूल प्रभाव न पड़े।

(च) हर उपस्कर इस तरह डिजाइन किया जाना चाहिए कि उसमें ऐसे सुरक्षा उपायों की व्यवस्था हो जो विलगकारी स्विचों द्वारा स्विचों या इसी तरह की अन्य युक्तियों के माध्यम से उच्च वोल्टता का अभिगम रोक सकें या यह सुनिश्चित कर सकें कि पहुंच केवल स्पेनर या पेचकस जैसे औजारों के माध्यम से ही संभव है।

(छ) यदि कामिकों को आर एफ या एक्स विकिरण से खतरे की संभावना हो तो उपस्कर पर चेतावनी नोटिस लगाए जाने चाहिए जिन पर सुरक्षित दूरी दर्शाई गई हो। इसी तरह की चेतावनी ऐसे उपस्कर की पुस्तक में दर्शित होनी चाहिए।

(ज) उपस्कर का स्थान और चुम्बकीय दिक्सूचक तथा अन्य उपस्करों से उसकी दूरी दिखाने वाली अनुमोदित सुरक्षित दूरी योजन पोत पर रहनी चाहिए।

26. नौपरिवहन उपस्कर का अनुरक्षण :-

(1) नौपरिवहन उपस्कर का दक्ष काम चलाऊ अवस्था में रखने के लिए इन नियमों में विहित प्रत्येक उचित उपाय किए जाने चाहिए। किसी उपस्कर की खराबी के कारण पोत की यात्रा के लिए अयोग्य नहीं ठहराया जाना चाहिए और न ही उसे पत्तन पर रोके रखने का कारण बनाया जाना चाहिए, यदि :

(i) विनियम में विनिर्दिष्ट के समरूप एक अतिरिक्त संस्थापन लगा हुआ हो और वह अच्छी काम चलाऊ हालत में हो, या

(ii) उस पत्तन पर कोई समुचित मरम्मत एंजीनीयर हो; या

(iii) उस पत्तन पर अतिरिक्त पुर्जे सुगमता से उपलब्ध न हों।

(2) यदि नौपरिवहन उपस्कर ठीक से कार्य न कर रहे हो तो :—

(i) अन्तर्राष्ट्रीय यात्रा कर रहे पोत को अगले ऐसे पत्तन तक यात्रा करने की अनुमति दी जा सकती है जहां वैसी मरम्मत सुविधा या अतिरिक्त पुर्जें उपलब्ध हो सकने हों।

(ii) भारत की तटीय यात्रा कर रहे पोत को ऐसे उपस्कर के बिना एक मास तक यात्रा की अनुमति दी जा सकती है। प्रमुख अधिकारी, परिस्थितियों पर विचार करके उस अवधि को अधिकतम तीन मास तक बढ़ा सकता है।

(3) समुद्री यात्रा शुरू करने से पूर्व रडार संस्थापन के कार्य की जांच की जाएगी और यह जांच जहाज की यात्रा के दौरान हर पहर (चार घंटे की अवधि) में कम से कम एक बार अवश्य की जानी चाहिए।

(4) 1600 टन या अधिक भार वाले प्रत्येक ऐसे विदेशगामी पोत, में, जिसमें रडार संस्थापन लगा हुआ हो, कम से कम एक ऐसा अधिकारी या कर्मी दल का सदस्य अवश्य होना चाहिए जो रडार अनुरक्षण के लिए पर्याप्त रूप से अर्हता प्राप्त हो परन्तु यह कि,

(क) यदि किसी ऐसे समय, जब पोत समुद्री यात्रा पर जा रहा हो, ऐसे अधिकारी या कर्मी दल के सदस्य को बीमारी अक्षमता या अन्य अप्रत्याशित परिस्थितियों के कारण साथ न ले जाया गया हो तो, इस नियम के उपबंध एक सप्ताह की अवधि या अगले पत्तन तक जो यात्रा की अवधि के लिए इनमें से जो भी बाद में हो, लागू नहीं होंगे। समुद्री यात्रा के दौरान ऐसी एक अवधि के तुरंत बाद दोबारा ऐसा अवधि नहीं होनी चाहिए।

(ख) ऐसे प्रत्येक अवसर पर मास्टर या स्वामी प्रमुख अधिकारी को यह सूचना देना कि वह इस प्रयोजन के लिए उपयुक्त रूप से अर्हता प्राप्त व्यक्ति को साथ ले जाने में असमर्थ है और इस बात की प्रविष्टि सरकारी लाग बुक में करेगा।

(5) जब तक ऐसा जहाज समुद्री यात्रा कर रहा हो, जिसमें रडार संस्थापित किया जाना अपेक्षित हो और उसमें रडार का पहरा दिया जा रहा हो, तो रडार संस्थापन मास्टर की या प्रमाणित प्रहरी अधिकारी के निर्णयाधीन होना चाहिए।

(6) इन नियमों के प्रयोजनों के लिए, कोई अधिकारी या कर्मी दल का सदस्य रडार अनुरक्षण के लिए अर्हता प्राप्त माना जाएगा यदि उसके पास निम्नलिखित हो :—

(क) रडार अनुरक्षण प्रमाण पत्र

(ख) महानिदेशक द्वारा खण्ड (क) में उल्लिखित प्रमाण पत्रों के समतुल्य मान्यताप्राप्त प्रमाण पत्र

(ग) रडार विनिर्माता के पाठ्यक्रम की समाप्ति पर प्रदत्त विनिर्दिष्ट प्रकार के रडार संस्थापन का रखरखाव करने के लिए दिया गया प्रवीणता प्रमाण पत्र।

भाग—IV

नौपरिवहन उपस्कर यान संबंधी अपेक्षाएं

27. 150 टन और इससे अधिक सकल भार वाले पोत :—

(1) यह नियम 150 टन और इससे अधिक सकल भार वाले पोतों पर लागू होता है।

(2) ऐसे प्रत्येक पोत में ऐसे निम्नलिखित उपस्कर होंगे :—

(क) पोत की केन्द्र रेखा पर और कम्पास बक्स पर लगाया गया मानक चुंबकीय दिक्सूचक।

(ख) पोत की केन्द्र रेखा पर लगा और कम्पास बक्स पर फिट किया गया स्टीयरिंग चुंबकीय दिक्सूचक अथवा ऐसी व्यवस्था जिससे (क) के अधीन अपेक्षित मानक दिक्सूचक द्वारा उपलब्ध कराई गई हैडिंग सूचना उपलब्ध कराई जाती है और जो मुख्य स्टीयरिंग स्थिति पर नाविक द्वारा आसानी से पढ़ी जा सकती है।

(ग) जहां मानक और स्टीयरिंग दिक्सूचक लगा होता है वहां मानक दिक्सूचक स्थिति और सामान्य नौपरिवहन नियंत्रण स्थिति के बीच पर्याप्त संचार माध्यम लगे हों।

(घ) 360 क्षितिज चाप पर जावत साध्य रूप से दिक्स्थिति का पता लगाने के साधन परंतु भारतीय नट व्यापार में लगे 300 टन से कम सकल भार वाले पोतों को उपयुक्त अपेक्षा से उस स्थिति में छूट दी जा सकती है जहां ऐसा समझा जाता है कि पूर्णतया पालन अव्यवहार्य होगा।

(3) उपनियम 2 में निर्दिष्ट प्रत्येक चुंबकीय दिक्सूचक उचित रूप से व्यवस्थित किया जाएगा और इसकी सारणी अर्वाणिष्ट विचलन बक्रपुल पर हर वक्त उपलब्ध रहेगा।

(4) उक्त सारणी अथवा अर्वाणिष्ट विचलन की यथार्थता की जांच प्रत्येक वर्ष में कम से कम एक बार अवश्य की जाएगी अथवा यह जांच नियम 20 की अपेक्षाओं के अनुसार रखे गए दिक्सूचक विचलनों अभिलेख

से की जाएगी जहां किसी पोत में ऐसे सारभूत सार-चनात्मक परिवर्तन अथवा फेरबदल किए गए हों जिससे उक्त सारणी अथवा वक्र प्रभावित हो सकता है अथवा जहां अत्यधिक अवशिष्ट विचलन देखने में आये हों वहां चुम्बकीय दिक्सूचक को पुनः व्यवस्थिति किया जाएगा और नयी सारणी अथवा अवशिष्ट विचलन का नया वक्र उपलब्ध कराया जाएगा।

(5) प्रत्येक ऐसे पोत में मानक दिक्सूचक से अन्त-नियमों अतिरिक्त चुम्बकीय दिक्सूचक भी लगा हो परंतु यदि पोत में स्टीयरिंग दिक्सूचक और घूर्णाक्ष दिक्सूचक लगा हो तो इस अपेक्षा का अनुपालन आवश्यक नहीं है।

(6) पोत के हैडिंग के संबंध में सूचना, आपाती, स्टीयरिंग स्थिति, जहां उपलब्ध हो, पर उपर्युक्त साधनों द्वारा उपलब्ध कराई जाएगी।

(7) प्रत्येक पोत में एक परावर्ती कोण मापी (सेक्सेंट) और एक सूक्ष्म समय मापी (क्रोमोमीटर) लगा होगा।

(8) प्रत्येक ऐसे पोत में भारतीय मौसम विभाग के समुचित अधिकारी द्वारा आकांक्षित निम्न वायुदाबमापी अथवा पादक वायुदाबमापी लगा होगा।

28. 150 सकल भार से कम टनभार वाले पोत :—

(1) यह नियम 150 टन सकल भार से कम टन भार वाले जहाजों पर लागू होगा;

(2) ऐसा प्रत्येक पोत, यावत्साध्य नियम 27 के उपबंधों का पालन करेगा। प्रत्येक ऐसे पोत में, हर हालत में :

(क) दिक्स्थिति का पता लगाने;

(ख) जल की गहराई मापने के लिए

(ग) तय की गई दूरी को मापने के लिए

स्टीयरिंग दिक्सूचक और अन्य दक्ष साधन लगाए जाएंगे।

29. 500 टन सकल भार तथा उससे अधिक टन भार वाले पोत :—

(1) यह नियम 500 टन सकल भार वाले तथा उससे अधिक टन भार वाले पोतों पर लागू होगा।

(2) प्रत्येक ऐसा पोत नियम 27 के उपबंधों का पालन करेगा और साथ ही उसमें निम्नलिखित होंगे।

(क) मुख्य स्टीयरिंग स्थिति में ताबिक द्वारा आसानी से पढ़े जा सकने वाला घूर्णाक्ष दिक्सूचक या घूर्णाक्ष रिपीटर।

(ख) रडार दिशा संकेत आरेख बनाने की सुविधा सहित रडार संस्थापन जो कि यथासंभव परावर्ती आरेखित के रूप में भी प्रभावी हो;

(ग) गति और दूरी उपदर्शित करने वाली युक्ति

(घ) मुख्य कोण और प्रत्येक नोदक की परिक्रमण दर को दर्शाने वाले सूचक और इनके साथ, यदि चर अन्तराल नोदक अथवा पार्श्व प्रणोद/नोदक लगा हुआ हो, तो ऐसे प्रत्येक नोदक का प्रचलनात्मक स्वरूप ये सभी सूचक यन्त्राकार स्थिति में सुपाठ्य होने चाहिए और

(ङ) प्रतिध्वनि गंभीरता मापी युक्ति।

30. 1600 टन सकल भार और उससे अधिक टन भार वाले जहाज

(1) यह नियम अन्तर्राष्ट्रीय समुद्री यात्रा अथवा 500 भील दूरी से अधिक समुद्री यात्रा तय करने वाले 1600 सकल टन भार और उससे अधिक टन भार वाले जहाजों पर लागू होगा।

(2) प्रत्येक जहाज नियम 29 के उपबंधों का अनुपालन करेगा और इसके अलावा उसमें निम्नलिखित उपकरण होंगे।

(क) दिक्स्थिति का पाला लगाने के लिए यावत्साध्य 360 अंतिज चाप पर घूर्णाक्ष रिपीटर अथवा रिपीटर उपयुक्त रूप से लगाए जाएंगे।

(ख) रेडियो दिशा-निर्धारण उपकरण।

31. 10,000 टन सकल भार तथा उससे अधिक टन भार वाले पोत

(1) यह नियम 10,000 टन सकल भार तथा उससे अधिक टन भार वाले पोतों पर लागू होगा।

(2) प्रत्येक पोत में नियम 30 में विनिर्दिष्ट उपकरण लगे होंगे और साथ ही वह इस नियम का भी अनुपालन करेगा।

(3) ऐसे प्रत्येक पोत में निम्नलिखित उपकरण लगे होंगे :—

(क) दो रडार संस्थापन लगे हों, जिसमें से प्रत्येक रडार को स्वतंत्र रूप से चलाया जा सकेगा।

(ख) इस उपनियम के खण्ड (क) में विनिर्दिष्ट रडार संस्थानों में में कम में कम एक रडार 9 जी एच जैड आधुनिकता पर कार्य करने योग्य होना चाहिए ताकि वह अतिजीवित क्राफ्ट रडार ट्रांसपोन्डर बीकन का पता लगा सके।

(ग) स्वचालित रडार आरेख (प्लॉटिंग) सहायक

(घ) जल में गति और दूरी को दर्शाने वाली युक्ति।

(4) 1 सितम्बर, 1984 को या उसके बाद बनाए गए 10,000 या उससे अधिक सकल टन भार वाले

पोतों में, उद्योग-निर्णयित पोत सूचक पर भी लगा होगा।

3.2. पायलट सीढ़ी की व्यवस्था :

(1) प्रत्येक पोत में पायलट सीढ़ी अथवा अन्य सुरक्षित और सुविधाजनक साधन की व्यवस्था की जाएगी जो कि सुसंगत आईएम ओ मानक की अपेक्षाओं का अनुपालन करेगी।

3.3. पायलट सीढ़ी और अन्य साधनों का उपयोग और उनका अनुक्षण :

(1) नियम 3.2 के अधीन पोत पर रखी जाने वाली पायलट सीढ़ी और अन्य साधनों को अच्छी स्थिति में रखा जाएगा जब पोत पत्तन पर आ रहा हो अथवा पत्तन से जा रहा हो तब पायलट और अधिकारियों या अन्य व्यक्तियों के पोत पर चढ़ने (पोत रोहण) और उतरने (पोत अवरोहण) के लिए आरक्षित रखा जाएगा।

(2) पायलट अथवा हार्बर मास्टर (अंदरगाह मास्टर) के जहाज में चढ़ने या उतरने के साथ पायलट सीढ़ी और अन्य साधनों जैसे क्रियात्मक उचालकों (हाइड्रट) का प्रयोग किया जाएगा। इस प्रयोजन के लिए पायलट सीढ़ी के अलावा कोई अन्य सीढ़ी प्रयोग नहीं की जाएगी।

भाग—V

प्रकीर्ण अपेक्षाएं

3.4. टैंकरों के लिए आपाती रज्जुकर्षण व्यवस्था :—

(1) प्रत्येक टैंकर, रासायनिक पदार्थ वाहक और गैस वाहक अथवा 50,000 टन कुल भार या उससे अधिक भार वाले खतरनाक और अतिदुष्करणीय पदार्थ ले जाने वाले जलयान में सुसंगत आई.एम.ओ. मानकों का अनुपालन करते हुए आपाती रज्जुकर्षण व्यवस्था का प्रावधान किया जाएगा।

(2) 1,00,000 टन कुल भार या उससे अधिक टन भार वाले प्रत्येक टैंकर या रासायनिक पदार्थ वाहक और गैस वाहक के स्टर्न में भी इसी प्रकार की रज्जुकर्षण व्यवस्था की जाएगी।

(3) ऐसी प्रत्येक रज्जुकर्षण व्यवस्था सदैव पूर्व सज्जित होगी और इस प्रकार से भाण्डारित की जाएगी कि कम से कम घबरेले का प्रयोग करने के इसका प्रयोग किया जा सके।

3.5. समतुल्यताएं और छूट :—

(1) यदि केन्द्रीय सरकार, किसी मानक चुम्बकीय दिक्सूचक की अपेक्षा को अनुचित या अनावश्यक समझती है तो वह विभिन्न श्रेणियों के पोतों का इस प्रकार की अपेक्षाओं को पूरा करने से तब छूट दे सकती है जब समुद्र-यात्रा की प्रकृति, भूमि से पोत की निकटता या पोत

का प्रकार ऐसा हो जिसमें मानक दिक्सूचक आवश्यक नहीं हो। किन्तु प्रत्येक ऐसे पोत में ग्रेडिंग दिक्सूचक की व्यवस्था की जाएगी।

(2) केन्द्रीय सरकार 500 टन से कम भार वाले किसी पायन को रेडियो डिशे निर्धारक उपस्कर की अपेक्षा में छूट दे सकती है। ऐसी प्रत्येक छूट की संजूरी देने समय यह ध्यान रखा जायेगा कि रेडियो डिशे निर्धारक उपस्कर, नौपरिवहन उपस्कर और पोत, वायुयान और उत्तरजीवी क्राफ्ट के स्थान का पता लगाने में सहायता देने वाले उपस्कर, दोनों ही रूप में आवश्यक है।

(3) इन नियमों में विनिर्दिष्ट और 1 सितम्बर, 1984 को या उसके बाद पोत पर संस्थापित किया जाने वाला कोई भी उपस्कर सुसंगत आई.एम.ओ. मानकों के अनुरूप होगा। एक सितम्बर, 1984 से पहले लगाये गये उपस्करों को, आई.एम.ओ. मानकों के पूर्ण अनुपालन में छूट दी जायेगी बशर्ते कि उपस्कर साधारणतया कार्यकारी मानक की अपेक्षा को पूरा करते हों।

(4) यदि इन नियमों की अपेक्षाओं के अनुप्रयोग से 1 सितम्बर, 1984 से पूर्व सन्निहित, किसी पोत में संरचनात्मक परिवर्तन करना अनिवार्य हो जाता है तो ऐसे पोत को शुष्क गोदी में प्रथम निर्धारित पड़ाव को ध्यान में रखते हुए अपेक्षित उपस्कर लगाने के विधे समये सीमा बढ़ाई जायेगी।

(5) इन नियमों में अन्यथा उल्लिखित के सिवाय केन्द्रीय सरकार ऐसे विशेष पोतों को उस स्थिति में आंशिक या मर्त रूप में छूट दे सकती है जब कोई पोत ऐसी समुद्र-यात्रा कर रहा हो जिसमें पोत से समुद्र तट की अधिकतम दूरी समुद्र-यात्रा की दूरी और उसकी प्रकृति, साधारण नौपरिवहन जोखिम न हो और सुरक्षा को प्रभावित करने वाली अन्य स्थितियां ऐसी हों कि इन नियमों को पूर्णतः लागू करना अनुचित या अनावश्यक हो जाये। ऐसी प्रत्येक छूट अन्य सभी पोतों की सुरक्षा पर पड़ने वाले प्रभाव को ध्यान में रख कर दी जायेगी।

प्रथम अनुसूची

(निर्णय 14 श्रेणियों)

समुद्र से जीवन की सुरक्षा के विधे अन्तर्राष्ट्रीय अभि-
समय, 1974 के उपबन्धों के अधीन जारी सुरक्षा रक्षित
प्रमाण-पत्र

पोत का नाम रजिस्ट्री पत्तन विनिर्दिष्ट पहचान अक्षर एकल
टन भार

- (1)
- (2)
- (3)
- (4)

में, उद्घोहरताक्षरी प्रमाणित करता है कि—

1. उपर्युक्त पोत, आई.एम.ओ. संकल्प क-481 (12) तथा वाणिज्य पोत परिवहन अधिनियम, 1958 (1958 का 44) की धारा 76 में दिये गये सिद्धान्तों और मार्गशी दिष्टियों का ध्यान में रखते हुए सुरक्षा रक्षित ररक्षा जायेगा यदि जब वभी वह समुद्र-यात्रा में जाने पर नीचे दी गई सारणी में दर्शायी गई कार्मिकों की संख्या और अरु में कम कार्मिकों को नहीं लेजाता है।

सारणी

क. गोदी विभाग		ख. इंजन विभाग	
रैंक	ग्रेड	रैंक	ग्रेड
मास्टर		मुख्य इंजीनियर	
मुख्य अधिकारी		दूसरा इंजीनियर	
दूसरा अधिकारी		तीसरा इंजीनियर	
तीसरा अधिकारी		चौथा इंजीनियर	
रेडियो अधिकारी दर्जा		दर्जा पहरा	
प्रहरी अधिकारी			
ग. उत्तरजीविता क्रापट के लिये, प्रमाणपत्र प्राप्त व्यक्ति—			
घ. खतरनाक पोतभार (कारगो) के साथ व्यक्ति:—			
अधिकारी—			
दर्जा—			
2. यह प्रमाणपत्र निम्नलिखित सेवा तक सीमित है:—			

3. यह प्रमाणपत्र, अस्थायी व्यवस्था संबंधी पत्र, जो अधिकारी द्वारा जारी किया जायेगा में विनिर्दिष्ट शर्तों के अधीन— तक विधिमान्य है।

मुम्बई/कलकत्ता/मुद्रास में जारी किया गया।

तारीख प्रधान अधिकारी

समुद्र वाणिज्यिक विभाग

दूसरी अनुसूची

नियम 24(1)(ड) देखें।

शैक्षक, मध्यक यंत्र, अनिवार्य पुर्जे आदि।

1. सभी र्त्तों द्वारा ले जाये जाने वाले औजार और प्रकीर्ण वस्तुएं।

एक मध्यम आकार की अर्धगोलाई वाली रेती।

एक जोड़ा बड़ा विद्युत-ऊष्मारोधी (इन्सुलेटिड) प्लास

एक जोड़ा लंबे अग्रभाग वाला छोटा प्लास

एक जोड़ा पार्श्व कटान वाला (साईडकटिंग) छोटा प्लास

एक 6 मि.मि. ब्लेड वाला विद्युत-ऊष्मारोधी

(इन्सुलेटिड) लंबा पेचकस

एक मध्यम लंबाई वाला 6 मि.मि. ब्लेड वाला चमक रहित पेचकस

एक 3 मि.मि. ब्लेड वाला विद्युत-ऊष्मारोधी

(इन्सुलेटिड) मूण्डी पेचकस

एक 1.5 ब्लेड वाला घड़ी साज (वाचमेकर) पेचकस

एक आस क्षीर्ष वाला छोटा पेचकस

एक आस क्षीर्ष वाला मध्यम आकार का पेचकस

वी.ए. स्पेनर्स का एक सैट (फ्लैट और बक्सा)

(0, 2, 4, 6, और एस.वी.ए. आकार)

घनीय स्पेनर फ्लैट और बाक्स (एम. 2 से एम. 6 तक आकार) का एक सैट

25 नि.मि. पार्श्व स्थान तक समायोजनीय एक स्पेनर ऐलनकुंजिया का एक सैट

1.5 मि. नि. में 6 मि.मि. मीटर

ए.एफ. 1.50 आकार की एक ऐलन कुंजी।

पोत वोल्टता के लिए उपयुक्त पी.सी.बी. के साथ प्रयोग करने के लिए एक्लाइट इयूवी सोल्डरिंग आयरन

एक सोल्डर एक्सटेंडर

एक टार्च या सुवाह्य निरीक्षण लैम्प

25 ग्राम पेट्रोलियम जैली

100 ग्राम रात-क्रोडी-टांका

100 ग्राम विद्युत-ऊष्मारोधी टेप

100 ग्राम स्विच स्नेहक

6 मीटर नम्य विद्युत-ऊष्मारोधी (इन्सुलेटिड) तार (5 एम्पियर)

निम्नलिखित वस्तुओं की मात्रा:—

प्रयोग की जा रही मशीन के लिए समुचित ग्रीस (जहां कहीं उपयुक्त हो)

सिलिकोन चीगिक

स्कैन्डर गियर कायम (जहां कहीं समुचित हो) एम्पियर 5 एम्पियर और 15 एम्पियर के लिए नेत्र टिप्पणी:—

(क) रेडियो सम्थापना विनियमों के अनुरूप ले जाने के लिए अपेक्षित औजारों के सूचीबद्ध औजारों के अनुसार द्वारा ले जाने की आवश्यकता नहीं है।

(ख) उपरकर नियम पुस्तक में दिए गए विवरण के अनुसार आवश्यक होने पर किसी विशेष औजार को भी ले जाया जाएगा।

2. मापक यंत्र :

सभी पोतों पर 20 के ओम वोल्ट की न्यूनतम संवेदन-शीलता वाला 10 एम्पियर्स तक प्रत्यावर्ती धारा और दिष्ट धारा के पठन में सक्षम 1 किलोवाट तक वोल्टता और 1 के ओम से 10 एम ओम तक प्रतिरोधक शक्ति वाला एक उच्च ग्रेड का मल्टीमीटर लगाया जाएगा।

नीचे पाद टिप्पणी में विनिर्दिष्ट क्षेत्र से बाहर प्रचालित पोतों पर मल्टी मीटर या 20 किलो वाट तक ई एच टो वोल्टता के मापने के अन्य साधनों के साथ प्रयोग के लिए एक उपयुक्त 1-ई एच टो मल्टीप्लायर लगाया जाएगा।

नीचे पाद टिप्पणी में विनिर्दिष्ट क्षेत्र से बाहर प्रचालित पोतों पर न्यूनतम 5 मीटर अर्धज की बैड की चौड़ाई वाला दोहरे अनुरेखा या दिवीमा वाला एक दोहन वर्ग लगाया जाएगा।

3. राडार संस्थापना के लिए अतिरिक्त पुर्जें और अतिरिक्त उपस्कर (संस्थापित राडार के लिए जैसा समुचित हो) : इस सूची में वे अतिरिक्त पुर्जें हैं जो व्यापक रूप से इस्तेमाल किए जाते हैं। यह बात ध्यान में रखी जाए कि राडारों में अन्य मदें भी हो सकती हैं जिन्हें सुविधा के लिए ले जाया जा सकता है किन्तु जिनका व्यापक उपयोग न होने के कारण उन्हें सूची में शामिल किया जाना न्यायसंगत नहीं है। ऐसी अतिरिक्त मदों को स्वैच्छिक आधार पर ले जाया जाता है।

उपयोग किये जा रहे प्रत्येक टाइप का एक वाल्व—, प्रत्येक टाइप के 5 से अधिक न हों।

प्रत्येक मशीन के लिए बुशों का एक सेट जो राडार संस्थापन में सम्मिलित है।

प्रत्येक उपयोग किये जा रहे टाइप का एक मैग्नेटान प्रत्येक उपयोग किये जा रहे टाइप का एक क्राईस्टल एक टी, आर सैल (केवल 3 से. मो. राडार के लिए)

फिट किये गए प्रत्येक टाइप का एक ड्राइव बेन्ड प्रत्येक उपयोग किये जा रहे टाइप का एक हैडिंग मार्कर एन्टीना स्विच असेम्बली।

जननित्र बेयरिंग का एक सेट (यदि केवल एक जनरेटर फिट किया गया हो)

प्रत्येक उपयोग किये जा रहे टाइप का टाइम बेस आउट पुट ट्रांजिस्टर्स का एक सेट।

प्रत्येक उपयोग किये जा रहे टाइप का वीडियो आउटपुट ट्रांजिस्टर्स का एक सेट।

सर्विसिंग के प्रयोजनों के लिए एक्सटेंशन लीड और एक्सटेंशन पी.सी.बी. का एक सेट (जहां समुचित हो)

4. घूर्णाक्ष स्थायी दिक्सूचक संस्थापनों के लिए अतिरिक्त पुर्जें और अतिरिक्त उपस्कर (उपयोग किये जा रहे उपस्कर के लिए समुचित)

ऐसे पोतों में जिनमें विनियमों द्वारा घूर्णाक्ष स्थायी दिक्सूचक संस्थापन होना अपेक्षित है, निम्नलिखित मदें ले जायी जाएंगी :

उपयोग किये जा रहे प्रत्येक कारतूस पूज के लिये दो कारतूस उपयोग किये जा रहे प्रत्येक डायल लैंप के लिये दो डायल लैंप उपयोग किये जा रहे प्रत्येक टाइप के लिये एक कांच का दिवंग वृत्त।

उपयोग किये जा रहे प्रत्येक टाइप का एक कांच का पेलोरस स्टैंड कवर।

5. प्रतिध्वनि अभरतामापी संस्थापन के लिये अतिरिक्त पुर्जें और अतिरिक्त उपस्कर— (उपयोग किये जा रहे उपस्कर के लिये समुचित)

ऐसे पोतों में जिनमें विनियमों द्वारा प्रतिध्वनि अभरतामापी संस्थापन होना अपेक्षित है निम्नलिखित मदें ले जायी जाएंगी :—

उपयोग किये जा रहे प्रत्येक कारतूस पूज के लिये दो कारतूस

उपयोग किये जा रहे प्रत्येक संकेतक लैंप के लिये एक लैंप एक स्टाइल्स एक अभिलेखन कागज के दू राोल।

6. दिशा-निर्धारक संस्थापन के लिये अतिरिक्त पुर्जें और अतिरिक्त उपस्कर (उपयोग किये जा रहे उपस्कर के लिये समुचित)

ऐसे पोतों में जिनमें विनियमों द्वारा दिशा निर्धारक संस्थापन होना अपेक्षित है। निम्नलिखित मदें ले जायी जाएंगी।

उपयोग किये जा रहे प्रत्येक कारतूस पूज के लिये दो कारतूस।

उपयोग किये जा रहे प्रत्येक संकेतक लैंप के लिये एक लैंप।

[फा. सं एस आर -11013/1/92-एम.ए.]

एस. के. दग्गन, अवतर सचिव

MINISTRY OF SURFACE TRANSPORT

(Shipping Wing)

New Delhi, the 19th June, 1997

G.S.R. 289.—Whereas a draft the Merchant Shipping, (Safety of Navigation) Rules, 1996 was published, as required by section 356, read with section 458, of the Merchant Shipping Act, 1958 (44 of 1958) and in suppression of Merchant Shipping (Distress Message and Navigational Warnings) Rules, 1964, in the Gazette of India, Part II, Section 3, Sub-section (1) dated 11-5-96 under the notification of the Govt. of India vide GSR 202 dated 26-4-96 for the information of all persons likely to be affected thereby inviting objections or suggestions in respect of said draft rules within a period of forty-five days from the date on which copies of the notification as published in the Gazette of India were made available to the public;

And whereas the said Gazette was made available to the public on 11-5-96;

And whereas no objection or suggestion has been received;

Now, therefore, in exercise of the powers conferred by section 356, read with section 458 of the Merchant Shipping

Act, 1958 (44 of 1958), the Central Government hereby makes the following rules, namely :—

1. Short title, commencement and application,—

(1) These rules, may be called Merchant Shipping (Safety of Navigation) Rules, 1997.

(2) Save as otherwise provided in these rules, these rules shall come into force on the date of their publication in the Official Gazette.

(3) They shall apply to all sea-going Indian ships, and ships other than Indian ships while they are within the territorial waters of India :

Provided that these rules shall not apply to,—

- (i) ships not propelled by mechanical means;
- (ii) sailing vessels registered under Part XV of the Act;
- (iii) fishing vessels registered under Part XVA of the Act; and
- (iv) pleasure yachts.
- (v) ships employed in trades or operations where bridge arrangements and navigational equipments as may be approved by the Director General of Shipping is provided to suit special navigational and operational requirements.

2. Definitions—

In these rules unless the context otherwise requires,—

- (a) "Act" means the Merchant Shipping Act, 1958 (44 of 1958);
- (b) "approved" means approved by the Director General of Shipping;
- (c) "automatic radar plotting aid (ARPA)" means a radar provided with automatic means for acquisition and plotting of targets and complying with the relevant International Maritime Organisation Standards;
- (d) "bridge" means the area from which the navigation and control of the vessel is exercised and includes the wheel house chart room and the bridge wings complying with the requirements of the relevant International Maritime Organisation Standards;
- (e) "collision regulations" means the Merchant Shipping (Prevention of Collision at Sea) Regulations, 1975;
- (f) "constructed" in relation to a ship, means a stage of construction where —
 - (i) the keel is laid; or
 - (ii) construction identifiable with a specific ship begins; or
 - (iii) assembly of that ship commenced comprising of at least 50 tons or 1% of the estimated mass of all structural material whichever is less;
- (g) "echo sounding device" means equipment used for determining depth of water and complying with the requirements of the relevant International Maritime Organisation Standards;
- (h) "emergency steering position" means position on a ship from which vessel can be steered in the event of a breakdown of the transmission system, used for operation of the steering gear, between the navigation bridge and the steering gear compartment;
- (i) "gyro compass" means direction showing equipment using principle of gyroscope and complying with the requirements of the relevant International Maritime Organisation Standards;
- (j) International Maritime Organisation standards means recommendations, guidelines or standards approved and published by the Assembly of the International Maritime Organisation and as amended from time to time.

(k) "international code of signals" means the code of signals approved by the International Maritime Organisation used for communication of safety, emergency and distress messages.

(l) "magnetic compass" means an equipment complying with the requirements of the relevant International Maritime Organisation standards.

(m) "merchant ship search and rescue manual" means the manual published by International Maritime Organisation to provide guidance for the conduct of search and rescue operations at sea;

(n) "mile" means a nautical mile of 1853.144 metres.

(o) "Notices to Mariners" means the notice published by the Chief Hydrographer to the Government of India and includes Navarea warning and annual notices;

(p) "radar installation" means installation used for collision avoidance and navigation and complying with the requirements of the relevant International Maritime Organisation Standards;

(q) "radio direction finding apparatus" means equipment for finding direction of an incoming radio signal and complying with the requirements of the relevant International Maritime Organisation Standards.

(r) "radio regulation" means the radio regulation annexed to the International Telecommunications Convention, 1982 ;

(s) "rate of turn indicator" means equipments showing the rate at which the ship is turning and complying with the requirements of the relevant International Maritime Organisation Standards.

(t) "routeing system" means system of one or more routes or routeing measures aimed at reducing the risk of collisions and groundings and may include traffic separation scheme, 2-way routes, recommended tracks, areas to be avoided, inshore traffic zones, roundabouts, precautionary areas, deep water routes established by the International Maritime Organisation.

(u) "Schedule" means a Schedule to these rules.

(v) "speed and distance indicator" means equipment indicating speed of the vessel and distance steamed by the ship over water and complying with the requirements of the relevant International Maritime Organisation Standards.

PART I

Navigational and Safety Communication

3. Communications.—(1) All navigational and safety communications shall be performed using one or more of the following :

- (a) procedure specified in the Radio regulations when using the radio telegraphy or radio telephony with or without digital selective calling facility or narrow band direct printing or the procedure specified by International Maritime Satellite Organisation when using satellite based systems.
- (b) Codes prescribed in the International Code of signals when language difficulties are experienced.
- (c) Standard marine navigational vocabulary when communicating by telephony in the English language.

(2) Every ship of 150 tons gross tonnage and above shall, in addition, to the requirements of Merchant Shipping (Radio) Rules, 1983 carry for the purposes of navigation and safety communications :

- (a) a set of International Code Flags,
- (b) international code of signals,

(c) IMO publication on the Standard Marine Navigational Vocabulary,

(d) Signalling lamp complying with the requirements of the relevant IMO Standard.

(e) means to transmit distress signals specified in annex IV of Collision Regulations.

(3) Where in any communication a date and time is to be indicated same shall be in universal co-ordinated time (UTC).

4. Distress Message.—(1) Whenever the Master of a ship has reached a conclusion that his ship is in imminent danger which could result in loss of ship or loss of life, he shall send a "distress" message to all ships and coast stations within the range of his communication systems in plain language (preferably in English).

(2) Such message shall be preceded by appropriate code indicating "distress" and shall be transmitted using procedures prescribed in the Radio Regulations.

(3) When sending such messages, at least the following information shall be included :—

(a) Date and time when signal was originated ;

(b) position of the ship ;

(c) circumstances leading to distress ; and

(d) if the ship is to be abandoned, availability of survival crafts and prevailing weather conditions.

(4) Master of every ship who has ordered "abandon ship" shall order, simultaneously, activation of the auto keying device provided under the Merchant Shipping (Radio) Rules, 1983 and the Emergency Position Indicating Radio beacon provided as per requirements of the Merchant Shipping (Life Saving Appliances) Rules, 1991.

5. Urgency messages.—(1) Whenever the Master of a ship has reason to believe that his ship or the life of any person on board is in danger and there is need for alerting coast stations and other ships but the danger is not sufficiently grave to require abandonment of the ship or immediate assistance of any kind, he shall send an "urgency" message. Such signal shall where practicable, be addressed to a specific coast radio station or to another ship known to be in the vicinity. Such signal may also be used when the master of a ship desires to issue warnings that circumstances are such that it may become necessary for him to send out a "distress" message at a later stage. In such cases, however, the signal need not be addressed to a specific station and the circumstances be indicated clearly.

(2) Such messages shall be preceded by the appropriate code indicating "urgency" and shall be transmitted using procedure prescribed in the Radio Regulations.

(3) When sending such messages at least the following information shall be included :

(i) time, date and position of the ship,

(ii) course, speed and original destination of the ship,

(iii) nature of problem on board with as many details as practicable,

(iv) whether any assistance is likely to be required and if so the nature of such assistance.

(v) whether the ship has been diverted towards nearest port and if so the name of port, expected time and date of arrival at the port and

(vi) efforts being made to control the adverse situation and results of such efforts.

(4) After sending a message in compliance with sub-rule (1), the Master shall send further messages every hour, if practicable and in any case at intervals of not more than 3 hours. At least the following information shall be included in such messages :—

(i) time, date and position of the ship,

(ii) course and speed,

(iii) change in situation, if any, on board.

(5) If the Master of the ship who has sent a message in compliance with sub-rule (1) has reached the conclusion that the ship or life of any person on board is no more in danger or the precautionary action ceases to be necessary or if the ship has reached a port, he shall at once send a message to the coast radio station and ships in area cancelling such "urgency" message.

6. Safety messages.—(1) When the Master of a ship meets with—

(i) ice,

(ii) derelict,

(iii) Storm or tropical revolving storm or mid latitude depression,

(iv) subfreezing air temperature associated with winds of 68 kms/hour or more causing ice accretion on structure, or

(v) winds of 93 kms/hour or more for which no storm warning is received,

(vi) any other direct danger to navigation,

he shall send a "safety" message by all possible means at his disposal to ships in the vicinity and to the nearest coast radio station with whom he can communicate, with a request to re-transmit the same to the appropriate authority.

(2) Such message shall be preceded by the appropriate code indicating "safety" and shall be transmitted either in plain language in English or by means of the International code of signals or by using the meteorological weather code using procedures prescribed in the Radio Regulations.

(3) When sending such messages, the following information shall be included, namely :—

(a) in case of ice, derelict, or any other direct danger to navigation—

(i) kind of ice, derelict or danger observed,

(ii) position of danger when last observed,

(iii) time and date when danger was last observed, and

(iv) rate and direction of drift, if any,

(b) in case of tropical revolving storm or mid latitude depression—

(i) a statement that storm or depression has been encountered or is developing or exists in the neighbourhood of the ship,

(ii) time, date and position of the ship when observation was made,

(iii) barometric pressure, corrected in hectopascals (hpa),

(iv) barometric tendency during the past 3 hours,

(v) true wind direction and force,

(vi) state of the sea (smooth, mild, rough, high),

(vii) swell height (slight, mild, heavy), true direction from which it is coming, period and length (short average, long),

(viii) true course and speed of the ship,

(ix) nature and intensity of precipitation during the past 3 hours (slight, intermittent, continuous) and the state of visibility (good, moderate, poor),

(x) nature and extent of cloud cover (blue sky, partially cloudy, overcast), and

(xi) air and sea temperatures,

(c) in case of winds of 95 kms./hour or more for which no storm warning has been received, the message shall contain similar information as given in clause

(b) of this sub-rule, and

(d) in case of sub-freezing air temperature associated with winds of 68 kms./hour or more, causing ice accretion on superstructure—

(i) date, time and position of the ship when the observation was made,

(ii) air and sea temperatures, and

(iii) wind force and direction.

(4) Whenever a Master has sent a safety message in compliance with clause (b) or clause (c) of sub-rule (3) as the case may be, he may make further observations and transmit the same hourly, if practicable. He shall, in any case, report such observations at intervals of not more than 3 hours so long as the ship remains under the influence of the storm or depression.

(5) Master of any ship on receiving a message transmitted in accordance with this rule shall proceed with up-utmost caution and when necessary alter course and or speed so as to navigate clear of the danger reported. When ice is reported, the Master shall proceed at moderate speed and adopt all possible means to detect the present and navigate with caution.

7. Action to be taken on receipt of 'distress' or 'urgency' Communications.—(1) The Master of a ship on receipt of a message transmitted in accordance with rule 4 or 5 shall forthwith acknowledge the same giving his own position, course, speed and destination.

(2) Where the transmitting ship has indicated the likely requirement of assistance, the Master of the receiving ship shall subject to provision of Section 355 or 355-A of the Act shall indicate whether he is in a position to render such assistance and the facilities available with him for that purpose.

(3) After communicating the information as prescribed in sub-rules (1) and (2) the Master of receiving ship shall cause a continuous listening watch to be maintained on frequencies mutually agreed.

(4) Where after receiving the urgency message or any updating message following such urgency message the Master of the receiving ship does not receive any further messages and he has reasons to believe that the circumstances on board the transmitting ship may have deteriorated, he shall transmit a suitable message to the nearest Rescue Coordination Centre or coast radio station giving all information available and shall be guided by advice rendered by such centre or radio station.

8. Every ship in addition to entries required to be made in the official log book by Section 214 of the Act shall also make the following entries :

(a) Every safety, urgency or distress message transmitted by the ship and circumstances warranting same.

(b) Every urgency or distress message received by the ship and action taken thereon.

(c) Every incidence reported under the provision of sub-rule (3) of rule 11.

9. Search and Rescue Operation.—Every ship proceeding to the assistance of a vessel or aircraft in distress, in compliance with Section 355 of the Act, when required to join a search and rescue operation, shall be guided by the provisions of the Merchant Ship Search and Rescue Manual and by the instructions given by the concerned Rescue Coordination Centre.

10. Merchant Ship Reporting System.—(1) All Indian ships in the Bay of Bengal, Arabian Sea and the Indian Ocean North of 30°S shall report their position, once daily, to the Indian ship position and information reporting system (INSPIRES) described in the annual notices to mariners. 1613 GI/97—6

(2) Every Indian ship, when on voyage from one port to another outside the area specified in sub-rule 1 of this rule shall report its position, once daily, to a ship reporting system established for the area under the provisions of International Convention on Maritime Search and Rescue 1969. In areas where no such system is available every Indian ship shall as far as possible report its position to INSPIRES or to its owners.

(3) Every ship shall make a report whenever a harmful substance is observed at sea or any ship is seen to be discharging a harmful substance in contravention of the International Convention of Prevention of Pollution at Sea 1973 or its protocol of 1978. Such report shall use the appropriate reporting format specified in the INSPIRES and shall transmit the same to the nearest coast radio station or rescue co-ordination centre.

11. Routing systems—

(1) Every ship shall follow routing systems wherever established.

(2) Where due to circumstances beyond his control the master of a ship is unable to navigate strictly as directed by a routing, every precaution shall taken to ensure safety of navigation of all ships in the area including transmission of a 'safety' message to indicate the same. Every such incidence shall be recorded in the official log book and reported to the Principal Officer at the earliest opportunity.

(3) Every violation of a routing system reported by the appropriate authority or a port state, whether reported by a master or not, shall be investigated by the Principal Officer. The Principal Officer shall also take into account investigation conducted by any other Administration, if any. Report of every such investigation shall be submitted to the Director General.

PART II

WATCHKEEPING ORGANISATION

12. General.—Unless otherwise specified, this part shall apply to all seagoing ships registered under Part V of the Act.

13. Bridge Design—

(1) Every ship shall be provided with a bridge.

(2) The labour of the Bridge shall be inspected and approved by Nautical Adviser when the ship is first registered under the Indian registry. Any ship already registered as an Indian ship when these rules come into force shall be inspected and compliance shall be ensured as far as possible. Structural alteration to such ships shall be specified only where safety of navigation is likely to be affected adversely.

14. Manning of Ships—

(1) Every ship shall be manned by certificate officers as required under Section 76 of the Act.

(2) Every ship shall be issued with a manning certificate in the form prescribed in First Schedule. Every such certificate shall be valid for a period of not more than five years.

15. Navigational Watchkeeping—

(1) Safe navigational watch shall be maintained at sea at all times.

(2) Composition of watch shall be such as to ensure that personnel on watch can deal with all possible emergencies. In any case an helmsman and a watchkeeping officer shall be available on the bridge at all times. While keeping watch the navigational watchkeeping officer shall follow the basic principles to be observed in keeping navigational watch as specified in the relevant IMO standard.

16. Engine room Watchkeeping—

(1) A safe engineering watch shall be maintained at sea at all times.

- (2) Composition of watch shall be such as to ensure ensure that personnel on watch can deal with all possible emergencies. The watchkeeping shall follow the basic principles to be observed in keeping an engineering watch as specified in the relevant IMO standard.

17. Manoeuvring capability—Every ship shall be provided with information on its manoeuvring capability. In particular, the following information shall be displayed conspicuously on the bridge, namely :—

- (a) type of engines and mode of control (i.e. Bridge control, telegraph etc.);
- (b) a table showing relation between speed through water and revolution per minute of propeller;
- (c) revolution per minute of engines at which conventional engine movements of slow, half and full ahead and astern are fixed;
- (d) a diagram showing turning circle with details;
- (e) estimated stopping distances and time taken for the same at full speed and at half speed when in fully loaded and in ballast condition;
- (f) details of crash stop trials;
- (g) time required to put rudder over from hard over on one side to hard over on the other with two motors and one motor only.

18. Nautical Publications—

- (1) Every ship shall carry adequate and up-to-date charts, sailing directions, list of Lights, notices to mariners, tide tables and all other nautical publications for the intended voyage, including the largest scale charts available for coastal navigation.
- (2) The limits of the intended voyage for which the nautical publication are adequate shall be indicated on the Record of safety equipment.
- (3) Where a ship is required to deviate from the limits of the intended voyage on account of distress or other such causes, the master may do so provided safety of the ship is not thereby endangered.
- (4) Where updated nautical publications are not available at a port, the Principal Officer may permit the vessel to sail to the next port where such publications are available only if it is safe to do so.

19. Bridge procedures—

- (1) Master of every ship shall prepare standing orders for keeping a safe watch, and such standing orders shall include—
 - (a) instruction with respect to availability of main engines;
 - (b) procedure to be followed in keeping a safe watch;
 - (c) composition of a watch and the circumstances in which it may be altered;
 - (d) procedure to be followed while navigating in pilotage waters, restricted waters or in areas of high traffic density and poor visibility;
 - (e) procedure to be followed when encountering poor visibility or deterioration in weather, and
 - (f) instructions to call the master at any time when in doubt.
- (2) Master of every ship shall ensure that a passage plan for intended voyage is prepared, scrutinised and available to the Watch Keeping Officer at all times when the vessel is on its voyage, such plan shall be monitored and updated where necessary during the progress of voyage, and the said passage

plan shall show, but not limited to the following on the chart or on any other similar document :—

- (a) times of sunrises and sunset;
- (b) times of high water and low water estimated, if in coastal waters;
- (c) estimated distances on various courses and estimated times of arrivals at the positions where alteration of course is planned;
- (d) dangers and shoals that need special attention.
- (e) particulars of areas where the master desires to take over the navigation of the ship personally.
- (f) the specified route to follow when in poor visibility and the use of radar and other navigational aids,
- (g) if any navigational equipment is working below its normal performance standard, the details thereof,
- (h) heavy traffic areas and areas where large number of fishing/sailing vessels are likely to be encountered and areas of strong currents,
- (i) process of calling additional assistance for watch keeping.

(3) The manuals and other information relating to the use of navigation equipment shall be available on the bridge for use of the watch keeping officers.

- (4) (a) in the observance of his duties the officer of the watch shall be responsible at all times for safe navigation of the ship,
- (b) Where necessary the officer of the watch shall call another officer to assist him in his navigational duties. The officer of watch shall be at liberty to call the master at any time.
- (c) where another officer or master is called on the bridge, the officer on watch shall continue to be responsible for the safe navigation until master or such other officer informs him specifically that he has assumed responsibility of the watch.

5. (a) every watchkeeping officer shall strictly comply with the collision regulations.

- (b) where due to non-observance of such rules by one of the ships, a close quarter situation develops, whether resulting in a collision or not, details of such events and the identity of both ships shall be reported to the Principal Officer who shall investigate every such report and submit his findings to the Director General.

(6) Every officer on watch shall keep a good lookout which shall include—

- (a) an alert visual and aural lookout to ensure a full grasp of the current situation including the presence of ships, landmarks in the vicinity and position of the ship at any time ;
- (b) close observation of the movements and compass bearing of approaching vessels ;
- (c) identification of ship and shore lights ;
- (d) the need to ensure that the course is steered accurately with or without into pilot and that wheel orders are correctly executed when on manual steering.
- (e) observation of the radar and echo sounder display and
- (f) observation of changes in weather, visibility and the state of sea.

(7) Changing over the Watch—

(a) The relieving Officer of the Watch shall ensure that members of his watch are fully capable of performing their duties and in particular that they are adjusted to night vision. He shall not take over the watch until his vision is fully adjusted to the light conditions and he has personally satisfied himself regarding—

- (i) standing orders and other special instructions relating to the navigation of the vessel;
- (ii) the position, course, speed and draught of the vessel;
- (iii) prevailing and predicted tides, currents, weather, visibility and the effect of these factors upon course and speed;
- (iv) the navigational situation including :—
 - (A) the operational condition of all navigational and safety equipment;
 - (B) errors of gyro and magnetic compasses;
 - (C) the movement of vessels in the vicinity;
 - (D) conditions and hazards likely to be encountered during the watch;
 - (E) the possible effects of heel, trim, water density and squat on underkeel clearance.

(b) When at the time the Officer of the watch is to be relieved, a manoeuvre or other action to avoid any hazard is taking place, the relief of the watch shall be deferred until such action is completed.

(c) The Officer of the watch shall not hand over the watch to the relieving officer if he has any reason to believe that the latter is under any disability which would preclude him from carrying out his duties effectively. In every such case, the Master shall be informed before handing over the watch.

(8) The Officer of the watch shall make regular checks to ensure that—

- (a) the helmsman or the automatic pilot is steering the correct course;
- (b) the standard compass error is checked at least once a watch and, when possible, after any major alteration of course;
- (c) the standard and gyro compasses are compared frequently and repeaters synchronised;
- (d) the automatic pilot is steering effectively; and
- (e) the navigation and signal lights and other navigational equipment are functioning properly.

(9) Navigation in Coastal Waters.—The Officer of the Watch shall identify positively all relevant navigation marks. Position of the ship shall be determined at intervals whose frequency shall, at the discretion of the Master, depend upon factors such as distance from nearest hazard, accuracy of position fixing systems, speed of ship and sea experienced. In cases such as a planned approach to an anchorage, or harbours entrance, position shall be plotted continuously. Whenever circumstances allow and particularly when in doubt positions shall be checked using alternate position fixing system.

(10) Restricted visibility.—When restricted visibility is encountered or suspected, the officer of the watch shall comply with the collision regulation making proper use of engines, lookout, radar and helm.

(11) Pilotage Waters.—The presence of a pilot shall not relieve the Master or the Officer of the watch from their duties and obligations towards safe navigation. The Master and the watch keeping officer shall familiarize themselves with the navigational plan of the pilot for the intended passage including docking and berthing procedure. They shall co-operate closely with the pilot and maintain an

accurate check on the vessel's position and movement. Alterations of course and/or changes in wheel and/or engine orders shall be transmitted through the Officer of the Watch. If the Master or the Officer on which is in any doubt as to the pilot's actions or intentions, he shall seek clarification from the pilot and if still in doubt take corrective action where necessary.

20. Navigational Records.—Master of every ship shall in order to provide an efficient record of the navigation passage maintain at least the following records.

- (i) Chronometer error.
- (ii) Weather reports.
- (iii) Deviation of magnetic compass.
- (iv) Night orders.
- (v) Correction to Nautical Publication.
- (vi) Maintenance and breakdowns of navigational equipment.
- (vii) Daily navigational log (Mates log).

21. Automatic Pilot.—(1) Automatic pilots, where fitted, shall comply with the requirements of the relevant IMO standard.

(2) Master of every vessel fitted with automatic pilot shall cause the manual steering to be tested after prolonged use of automatic pilot and in any case at least two hours before the vessel is expected to manoeuvre on manual steering.

(3) Alteration of courses with the help of an automatic pilot when other ships are in sight of one another shall be avoided. Alteration of courses in compliance with collision regulations shall be effected by manual steering only.

(4) In areas of high traffic density or in conditions of restricted visibility or in all other hazardous navigational situations, if an automatic pilot is in use, it is required to establish manual control of the ship's steering instantaneously, if the occasion arises in any case qualified helmsman shall at all times be available to take over control of manual steering.

22. Operation of steering gear :

In areas where navigation demands special caution and whenever the ship is being manoeuvred in pilotage or restricted waters or in areas of high traffic density or in a routing system, more than one steering gear power unit shall be in operation when such units are capable of simultaneous operation.

23. Steering gear tests and drills :

(1) Within 12 hours before departure, the ship's steering gear shall be checked and tested.

The test procedure shall include, where applicable, the operation of the following :—

- (a) the main steering gear;
- (b) the auxiliary gear;
- (c) the steering gear control in the systems;
- (d) steering capability from the navigation bridge as well as from the remote steering location in the vicinity of the steering gear.
- (e) the emergency power supply where available;
- (f) the rudder angle indicators in relation to the actual position of the rudder;
- (g) communications between the bridge and the remote steering location.
- (h) the steering gear power unit failure alarms; and
- (i) automatic isolating arrangements and other automatic equipment.

(2) (a) Simple operating instructions with a block diagram showing the change over procedures for remote steering gear control systems and steering gear power units shall be permanently displayed on the navigating bridge and in the steering gear compartment.

(b) All ships' officers concerned with the operation or maintenance of steering gear shall be familiar with the operation of the steering systems fitted on the ship and with the procedures for changing over from one system to another.

(3) In addition to the routine checks and tests prescribed in sub-rule (1) and (2) of this rule emergency steering drills shall be conducted at least once every three months in order to practice emergency steering procedures.

(4) These drills shall include direct control from within the steering gear compartment, the communication procedure with the navigating bridge and where applicable the operation of alternative power supplies.

(5) Every ship on regular frequent voyages of less than 24 hours may carry out the drill tests specified in sub-rule (1) and (2) of this rule at least once every week. In any case operational tests shall be carried out before departure.

(6) The date upon which the checks and tests prescribed in sub-rule (1) and (2) of this rule are carried out and the date and details of emergency steering drills carried out under sub-rule (4) shall be recorded in the official log book.

PART III

Navigational equipment-General requirements.

24. Initial installation—(i) Every ship while installing any Electronic navigational equipment required by these rules shall,

(a) install such equipment complying with the general requirements for electronic navigational aids specified in the relevant IMO standard in addition to the requirements specified in these rules,

(b) install only such equipment as has been type approved, provided any equipment approved by any other Administration party to the International Convention for Safety of Life Sea 1974 may also be granted type approval where the details of such equipment and certificates of approval granted by such Administration are submitted to the Director General,

(c) provide a suitable and efficient source of power supply for the operation of the equipment specified in these rules and for the purposes of testing and charging of any batteries. The source of electrical energy shall be available at all times when the ship is at sea and at all reasonable times when the ship is in port. The supply of electrical energy shall not exceed the limits set out below :—

(i) AC-Supply

Voltage variation + 10%
frequency variation + 6%

(ii) DC-Supply

110 to 220V + 10% to - 20%
24/32W + 30% to - 10%.

(d) carry operating and servicing manuals for each equipment complying with the following

(i) in the case of equipments where the design is such that fault diagnosis and repairs on board ship is possible down to component level, the manual should provide full circuit diagrams, component layouts, and component parts list,

(ii) in the case of equipment containing complex modules in which fault diagnosis and repair down to component level is not practicable, the manual should contain sufficient information to enable a defective complex module to be diagnosed, identified and replaced. The requirements of sub-clause (i) should be met in respect of other modules and these discrete components which do not form part of modules.

(e) carry tools measuring instruments and spare parts specified in the Second Schedule.

(f) provide adequate safe access to all navigational equipments specified in these rules so that they can be maintained or adjusted in situ. Such access shall also be provided for maintenance and adjustment of Radar and Direction Finder Antennae.

(2) Where a ship has changed its registration and has acquired Indian registry for the first time, navigation equipment in use on board such ships shall be considered to have complied with these rules provided :

(a) such equipment has been accepted by the administration under which the ship was registered previously and

(b) such equipment complies with the relevant IMO standard.

25. Siting of navigational equipment—(1) No unit which has not been type approved for mounting in an exposed position or in a position which normally permits the entry of moisture or water shall not be installed in exposed position.

(2) The accuracy of ships magnetic compasses shall be safeguarded while installing any navigation or communication equipment.

(3) Safe distances at which an approved equipment be placed from a standard and magnetic compass in order not to affect the accuracy of such compass shall be clearly marked on such equipment or be stated on the certificate of approval. While installing such equipment safe distance shall be strictly maintained : Provided that when it is impracticable to maintain the safe distances, the Director General may allow such reduced distances where the actual effects on the compass is shown to be stable and such that it can be corrected by compass adjustment.

(4) Safe distances specified for the equipment do not take into account the structures required to be added for installation of such equipment. Where such structures are necessary safe distances shall be determined and the equipment installed at such distance.

(5) Storage of spare parts for equipment shall also comply with the safe distance requirement specified for the equipment for which the spares are stored.

(6) (a) Where radio interference from any such equipment is likely to affect the radio communications, such equipment should be widely separated from the radio communication system.

(b) electrical interference or mechanical noise produced by navigational installation shall not affect efficient operation of other equipment.

(c) noise from navigation installation shall not disturb the members of the crew either on or off duty.

(d) navigation equipment shall not be installed in position where excessive heat and/or fumes may cause failure or undue maintenance difficulties.

(e) navigational equipment including antenna where practicable be mounted so as to prevent the performance and reliability of the installation being adversely affected by vibration,

(f) every equipment shall be designed to provide safeguards which either prevent access to high voltages by means of isolating switches, door switches or similar devices or ensure that access is possible only by means of a tool such as key spanner or screw driver.

(g) where RF or X-radiation is likely to present a hazard to personnel, warning notices shall be displayed on the equipment showing safe distances. Similar warning shall be shown in the handbook for such equipment.

(h) approved safe distance plan showing location of equipment and its distance from magnetic compasses and other equipments shall be carried on board.

26. Maintenance of Navigational equipment—(1) Every reasonable step shall be taken to maintain navigational equipment prescribed in these rules in efficient working order. Malfunctioning of an equipment shall not make the ship unseaworthy or a reason for delaying the ship in port where—

(i) an installation similar to that specified in the regulation is provided additionally and is in good working order; or

- (ii) there is no appropriate repair agency in the port ; or
- (iii) spare parts are not readily available in that port.

(2) Where navigational equipment is malfunctioning :

- (i) a ship on International voyage may be permitted to sail to the next port where such repairs or availability of spare parts is feasible,
- (ii) a ship on coasting voyage of India may be permitted to sail without such equipment for a period of one month. The Principal Officer may, on consideration of the circumstances extend this period to a maximum of three months.

(3) The performance of the radar installation shall be checked before the ship proceeds to sea and at least once every watch whilst the ship is at sea.

(4) Every foreign going ship of 1600 tons or over required to be fitted with a radar installation, shall be provided with at least one officer or member of crew adequately qualified to carry out radar maintenance Provided that :

- (a) if on an occasion on which a ship goes to sea, such officer or member of the crew is not carried because of illness incapacity or other unforeseen circumstances, the provisions of this rule shall not apply for a period of one week or the duration of the voyage to the next port of call whichever is later. One such period shall not immediately by following by another period at sea.
- (b) on every such occasion the master or the owner shall notify the Principal Officer of his inability to carry a suitably qualified person for this purpose and make an entry in the official log book to that effect.

(5) While a ship which is required to be fitted with a radar installation is at sea and a radar watch is being kept, the radar installation shall be under the control of Master or a certified Watch Keeping Officer.

(6) For the purposes of these rules, an officer or crew member shall be deemed qualified to carry out radar maintenance if he holds :

- (a) a Radar Maintenance Certificate.
- (b) a certificate recognised by Director General as being equivalent to the certificates mentioned in clause (a) or
- (c) a certificate of proficiency to carry out maintenance on specified types of radar installations granted at the conclusion of a radar manufacturer's course.

PART IV

NAVIGATIONAL EQUIPMENT CARRIAGE REQUIREMENT

27. Ships of 150 tons gross tonnage and above.—(1) This rule applies to ships of 150 tons gross tonnage and above.

(2) Every such ship shall carry :

- (a) a standard magnetic compass fitted on the centre line of the ship and mounted on a binnacle ;
- (b) steering magnetic compass fitted on the centre line of the ship and mounted on a binnacle or an arrangement by which heading information provided by the standard compass required under (a) is made available and is clearly readable by the helmsman at the main steering position.
- (c) where a standard and steering compass is fitted, adequate means of communication between the standard compass position and the normal navigation control position.
- (d) means for taking bearings as nearly as practicable over an arc of the horizon of 360° provided ships of less than 300 tons gross tonnage lying on the

coasting trade of India may be granted relaxation from the above requirement where it is considered that total compliance shall be impracticable.

(3) Every magnetic compass referred to in sub-rule 2 shall be properly adjusted and its table or curve of residual deviation shall be available at all times on the bridge.

(4) Such table or curve of residual deviation shall be checked for accuracy once at least every twelve months or through record of compass deviations maintained as per requirements of rule 20. Where a ship has undergone substantial structural changes or alteration which are likely to affect such table or curves or where large residual deviations are observed, the magnetic compass shall be readjusted and a new table or curve of residual deviation shall be made available.

(5) Every such ship shall also carry a spare magnetic compass inter-changeable with the standard compass; provided where the ship is fitted with a steering magnetic compass and a gyro compass this requirement need not be complied with.

(6) Information with respect to the ship's heading shall be made available by suitable means at the emergency steering position, where provided.

(7) Every ship, shall carry a sextant and a chronometer.

(8) Every such ship shall carry an aneroid barometer or a mercury barometer calibrated by an appropriate officer of the Indian Heterological department.

28. Ships of less than 150 tons gross tonnage.—(1) This rule applies to ships of less than 150 tons gross tonnage.

(2) Every such ship shall comply with the provisions of rule 27 as far as practicable. Every such ship shall, in any case, be provided with a steering compass and efficient means for :

- (a) taking bearings
- (b) measuring depth of water, and
- (c) measuring distance steamed.

29. Ships of 500 gross tonnage and above.—(1) This rule applies to ships of 500 tons gross tonnage and above.

(2) Every such ship shall comply with the provisions of rule 27 and in addition shall carry :

- (a) master gyro compass or a gyro repeater clearly readable by the helmsman at the main steering position ;
- (b) radar installation along with facilities for plotting radar bearings which, as far as possible, shall be as effective as a reflection plotter ;
- (c) device for indicating speed and distance ;
- (d) indicator showing the rudder angle, the rate of revolution of each propeller and in addition, if fitted with variable pitch propeller or lateral thrust propeller, the operational mode of each such propeller. All such indicators shall be readable from the conning position and
- (c) an echo sounding device.

30. Ships of 1600 gross tonnage and above.—(1) This rule applies to ships of more than 1600 tons gross tonnage engaged on International voyages or on voyages which extend more than 500 miles.

(2) Every ship shall comply with the provisions of rule 29 and in addition shall carry,

- (a) a gyro repeater or repeaters suitably placed for taking bearings, as nearly as practicable, over an arc of the horizon of 360°.
- (b) radio direction finding apparatus.

31. Ships of 10,000 tons gross tonnage and above.—(1) This rule applies to vessels of 10,000 tons gross tonnage and upward.

(2) Every ship shall carry the equipment specified in rule 30 and in addition shall comply with this rule.

(3) Every such ship shall carry,

- (a) two radar installations, each capable of being operated independently of the other,
- (b) at least one of the radar installations specified in clause (a) of this sub-rule shall be equipped to operate on 9 Ghz frequency to detect survival craft radar transponder beacons,
- (c) an automatic radar plotting aid,
- (d) a device to indicate speed and distance through the water.

(4) Ships of 1,00,000 tons gross tonnage and upwards constructed on or after 1st September 1984, shall, in addition, be fitted with a rate of turn indicator.

32. Provision of Pilot Ladder.—(1) Every ship shall be provided with a pilot ladder or other safe and convenient means which shall comply with the requirement of the relevant IMO standard.

33. Maintenance and use of a pilot Ladder and other appliances.—(1) The pilot ladder and other appliances required to be carried on board under rule 32 shall be kept in good condition and shall be reserved for the embarkation and disembarkation of pilots and officials or other persons while a ship is arriving or leaving a port.

(2) Pilot ladder and other appliances such as mechanical hoists shall be used whenever a pilot or Harbour Master embarks or disembarks from a ship. No other ladder other than pilot ladder shall be used for such purposes.

PART V

Miscellaneous Requirements

34. Emergency towing arrangements for tankers.—(1) Every tanker, chemical carrier and Gas carrier or vessels carrying hazardous and noxious substances of 50,000 tons deadweight or more shall be provided with an emergency towing arrangements in compliance with the relevant International Maritime Organisation standard.

(2) Every tanker or chemical carrier and gas carrier of more than 1,00,000 tons deadweight or more shall also be provided with such towing arrangements at the stern.

(3) Every such towing arrangements shall at all times be pre-rigged and so stored that it can be brought into use with the least power requirements.

35. Equivalents and Exemptions.—(1) The Central Government may, if it considers unreasonable or unnecessary to require a standard magnetic compass, exempt classes of ships from these requirements if the nature of the voyage, the ship's proximity to land or the type of ships does not warrant a standard compass. In any case, however, every such ship shall be provided with a steering compass.

(2) The Central Government may exempt a ship of less than 500 gross tonnage from the requirements of the radio direction finder equipment. Every such grant of exemption shall take into account that the radio direction finder equipment is necessary both as navigation equipment and as an aid to locating ships, aircrafts and survival craft.

(3) Any of the equipment specified in these rules and installed on board ships on or after 1st September, 1984 shall, conform to the relevant IMO standard. Equipment fitted prior to 1st September 1984, shall be exempted from full compliance with the IMO standard provided the equipments generally meet the requirements of the functional criteria.

(4) If the application of the requirements of these rules necessitates structural alterations to a ship constructed before 1st September 1984, an extension of the time limit for fitting the required equipment shall be granted taking into account the 1st scheduled dry-docking of such a ship.

(5) Except as provided elsewhere in these rules, the Central Government may grant to individual ships exemptions of a

partial or conditional nature when any such ship is engaged on a voyage where a maximum distance from the ship to a shore, the length and nature of the voyage, the absence of general navigation hazards, and other conditions affecting safety are such as to render the full application of these rules unreasonable or unnecessary. Grant of every such exemption shall take into account the effect such exemptions may have upon the safety of all other ships.

The First Schedule

(See rule 14)

Safety Manning Certificate

Issued under the provision of the International convention for the safety of life at Sea, 1974.

Name of Ship	Port of Registry	Distinctive Letters	Gross Tonnage
--------------	------------------	---------------------	---------------

1, the undersigned certify.....
 (1) that the above mentioned ship, having regard to the principles and guidelines as set out in IMO Resolution A 481 (XII) and Section 76 of Merchant Shipping Act, 1958 (44 of 1958), is considered to be safety manned if, whenever she proceeds to sea, it carries not less than the number and grade of personnel shown in the table set out below :

Table

(a) Deck Department	(b) Engine Department
Rank Grade	Rank Grade
Master	Chief Engineer
Chief Officer	Second Engineer
Second Officer	Third Engineer
Third Officer	Fourth Engineer
Radio Officer	Rating Watchkeeping
Ratings	
Watchkeeping Officer	

(c) Certificated persons for survival craft.

(d) Persons with Dangerous Cargo Endorsement :
 Officers.....
 Ratings.....

2. This Certificate is limited to service as follows :

3. This Certificate is valid until
 subject to the conditions specified in any temporary dispensation that may be issued by the authority.
 issued at Bombay/Madras/Calcutta.

Date :

Principal Officer

Mercantile Marine Dept.....

Second Schedule

See Rule-24(1)(c)

Tools, measuring instruments, spare parts, etc.

1. Tools and miscellaneous items to be carried by all ships

- 1 medium size half round file
- 1 pair large insulated pliers
- 1 pair large long nose pliers
- 1 pair miniature long nose pliers
- 1 pair miniature side cutting pliers
- 1 long screwdriver, insulated, with or 6 mm blade
- 1 medium length screwdriver, non-magnetic, with 6 mm blade
- 1 grub screwdriver, insulated with 3 mm blade
- 1 screwdriver, watchmakers with 1.5 mm blade
- 1 screwdriver, small, cross-headed
- 1 screwdriver, medium, cross-headed

- 1 set of BA spanners (flat and box) (size 0, 2, 4, 6 and SBA)
- 1 set of isometric spanners (flat and box) (sizes M2 to M6)
- 1 spanner, adjustable up to 25 mm gap
- 1 set of Allen keys

1.5 mm to 6 mm metric

1 Allen key size .050 in AF

1 light duty soldering iron for use with PCBs, suitable to the ship's voltage.

1 solder extractor

1 torch or portable inspection lamp

25 grams of petroleum jelly

100 grams of resin-cored solder

100 grams of insulating tape

100 grams of switch lubricant

6 metres of flexible insulated wire (5 amp)

A quantity of the following : grease suitable for machine in use (where appropriate) silicone compound

oil for scanner gear box (where appropriate) fuse wire,

5 amp and 15 amp

Notes.—(a) The tools listed need not necessarily duplicate any which are required to be carried to conform to the Radio Installation Regulations.

(b) Any special tools necessary as detailed in the equipment manual should also be carried.

2. Measuring instruments

1 high grade multimeter, with a minimum sensitivity of 20 kohm/volt, capable of reading ac and dc current upto 10 amps, voltages upto 1 KV and resistance from 1 ohm to 10M ohms to be carried on all ships.

IEHT multiplier suitable for use with the multimeter, or other means of measuring EHT voltages upto 20 KV to be carried on ships operating outside the area specified in the footnote below.

1 dual trace or double beam oscilloscope having a bandwidth of at least 5 Mhz to be carried on ships operating outside the area specified in the footnote below.

3. Spare parts and spare equipment for radar installations (as appropriate for the radar installed).

This list contains those spare parts which are in widespread use. It should be noted that radar may contain other items which could, with advantage, be carried out which are not sufficiently widespread in use to justify inclusion in this list. The carriage of such additional items would be on a voluntary basis.

1 valve for each in use, upto 1 maximum of 5 of each type
1 set of brushes for each machine included in the radar installation

1 Magnetron for each type in use

1 Klystron for each type in use

1 TR cell (for 3 cm radars only)

1 drive belt of each type fitted

1 heading marker antenna switch assembly for each type in use.

1 set of generator bearings (if only one generator is fitted)

1 set of time base output transistors for each type in use

1 set of video output transistors for each type in use

1 set of extension leads and extension PCB for servicing purposes (where appropriate)

4. Spare parts and spare equipment for gyro compass installations (as appropriate for the equipment in use)

The following items should be carried on ships required by the regulations to have a gyro compass installation :

2 cartridges for each cartridge fuse in use

2 dial lamps for each dial lamp in use

1 glass, azimuth circle, for each type in use

1 glass, pelorus stand cover, for each type in use

5. Spare parts and spare equipment for echo sounder installations (as appropriate for the equipment in use). The following items should be carried on ships required by the Regulations to have an echo sounder installation :

2 cartridges for each cartridge fuse in use

1 lamp for each indicator lamp in use

1 stylus

2 rolls of recording paper.

6. Spare parts and spare equipment for direction-finder installations (as appropriate for the equipment in use)

The following items should be carried on ships required by the Regulations to have a direction-finder installation :

2 cartridges for each cartridge fuse in use

1 lamp for each indicator lamp in use.

[F. No. SR-11013/1/92-MA]

S. K. DARGAN, Under Secy.

